कर्णोदय

15 वाँ अंक
2017-18

न नम्रतापूर्वक

रा राजभाषा

का कार्यान्वयन का

स समन्वय

क कर्मठ केन्द्र नगर का

र रहे राजभाषा उन्मुखी सर्वदा

ना ना रूकेंगे हमारे प्रयास जब तक

ल लक्ष्य ना होंगे पूरे प्राप्त तब तक

भाकृअनुप
ICAR

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल

राजभाषा विभाग, गृह-मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन करनाल स्थित भारत सरकार के समस्त केन्द्रीय कार्यालयों, संस्थानों, विश्वविद्यालयों, उपक्रमों, निगमों, लिमिटेडो एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि की समिति

रा.डे.अनु.सं
N.D.R.I.

अध्यक्षीय कार्यालय : भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), करनाल
Chairman Office : ICAR-NDRI (Deemed University), Karnal

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम
Canara Bank
A Government of India Undertaking
Together We Can

केनरा
आवास ऋण
और वाहन ऋण
के साथ
मन में उल्लास, केनरा के साथ

कम और आकर्षक ब्याज दर

केनरा बैंक से आवास ऋण पाइए और PMAY* के अंतर्गत रु.2.67 लाख सब्सिडी का लाभ उठाइए।

आवास ऋण चुकौती अवधि 360* महीनों तक
वाहन ऋण चुकौती अवधि 84* महीनों तक

*शर्तें लागू • ब्याज दर एमसीएलआर से सहबद्ध

PMJJBY योजना के अंतर्गत ₹ 330/- प्रति वर्ष तथा PMSBY योजना के तहत ₹ 12/- प्रति वर्ष पर नामांकन करें।
अपना आधार नंबर और मोबाइल नंबर को अपने बैंक खाते में अपडेट करें
अधिक जानकारी के लिये हमारी नज़दीकी शाखा से संपर्क करें या हमारे वेबसाइट www.canarabank.com में देखें
Follow us on : @ canarabanktweet
Subscribe to our YouTube : CanaraBankOfficial
टोल फ्री: 1800 425 0018
जल, वृक्ष की रक्षा, पर्यावरण की सुरक्षा
www.canarabank.com

संरक्षक :

डा. आर.आर.बी.सिंह, अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

एवं निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)

अग्रसैन चौक, करनाल, हरियाणा, पिन–132 001

ईमेल : tolic.karnal.ndri@gmail.com

सलाहकार :

1. श्री सुशांत साहा, संयुक्त निदेशक(प्रशासन) एवं कुलसचिव, भाकृ.अ.प.–रा.डे.अ.सं., करनाल
2. मो.रजी आलम खाँ, सहायक श्रम आयुक्त(केन्द्रीय), करनाल
3. श्री कुणाल कालरा, वित्त एवं लेखाधिकारी, भा.कृ.अ.प.–रा.डे.अ.सं., करनाल(वित्तीय सलाहकार)

मुख्य संपादक :

राकेश कुमार कुशवाहा, सचिव, न0रा0का0स0 करनाल एवं

सहायक निदेशक(राजभाषा), भा.कृ.अ.प.–रा.डे.अ.सं., करनाल

ईमेल : rakeshkumar19782014@gmail.com

संपादक :

कंचन चौधरी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(प्रेस एवं संपादन),

भा.कृ.अ.प.–रा.डे.अ.सं., करनाल

ईमेल : tolic.karnal.ndri@gmail.com

सह–संपादक

- तरूण शर्मा, राजभाषा अधिकारी, केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल
- सोनी कुमार, प्रबंधक (राजभाषा), पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय, करनाल
- संजीव कुमार, राजभाषा अधिकारी, यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल
- अमित कुमार, नामित राजभाषा अधिकारी, भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल

प्रस्तुत अंक पर अपने विचार निम्न संपर्क सूत्र पर अवगत करायें :–

राकेश कुमार कुशवाहा, सचिव, न0रा0का0स0 करनाल एवं सहायक निदेशक (राजभाषा),

भा.कृ.अ.प.–रा.डे.अ.सं., करनाल, हरियाणा, पिन–132001.

दूरभाष : 0184 2259045, फैक्स 0184 2250042, ईमेल : tolic.karnal.ndri@gmail.com,

राजभाषा विभाग की संयुक्त वैबसाइट : http://narakas.rajbhasha.gov.in(Tolic Code 005)

राजभाषा विभाग की संयुक्त वेबसाइट : http://narakas.rajbhasha.gov.in(Tolic Code 005)

इस अंक में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों एवं भावों से नराकास करनाल सचिवालय एवं संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है एवं इसके लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं। प्रकाशित रचना की किसी भी रूप में नकल पूर्णतया प्रतिबंधित है।

प्रकाशक :

एरोन मीडिया, यू.जी.4, सेक्टर 17, सुपर मॉल, करनाल, पिन–132001, मोबाइल : 9896433225

ईमेल : aaronmedia1@gmail.com

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल "कर्णोदय" 2017-18, पंद्रहवाँ अंक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय / अंतर्वस्तु	पृष्ठ संख्या
1	संरक्षक की कलम से	01
2	सन्देश इत्यादि	02–07
3	वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम 2018–19	08
4	नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा गतिविधियों की जानकारी	09
5	राजभाषा ज्ञान प्रश्नावली	14
6	राजभाषाः हिन्दी और अंग्रेजी का द्वंद्व : सोनी कुमार, प्रबन्धक (राजभाषा)	18
7	सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का कार्यान्वयन और हिन्दी व क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका : तरुण शर्मा, राजभाषा अधिकारी	21
8	आज की बैंकिंग सेवाएँ और समाज : संजीव कुमार प्रबन्धक (राजभाषा)	21
9	राजभाषा : दशा और दिशा – डा. चित्रनायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राडेअनुसं	22
10	सकारात्मक दृष्टिकोण : पंकज सिंह, केन्द्रीय विद्यालय, करनाल	23
11	"क्षमा बड़न को चाहिए" : राकेश कुमार कुशवाहा, भाकृअनुप–राडेअनुसं	24–25
12	जिंदगी के खिलाड़ी : सोनी कुमार, प्रबंधक (राजभाषा)	26
13	नराकास, करनाल द्वारा सम्पन्न विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रश्न–पत्र उत्तर सहित	27–35
14	नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री	38–48
15	यादों का कांरवा : प्रिया शर्मा, जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल	50
16.	कविता : डा. मगन सिंह, प्रधान वैज्ञानिक भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	50
17.	अश्रु : संजीव कुमार, प्रबन्धक (राजभाषा) यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे.का. करनाल	55
18.	देवी ।। लघु–कथा।। : कथा सम्राट "मुंशी प्रेमचंद"	55
19.	स्वास्थ्य विशेष एवं मोबाइल प्रौद्योगिकी विशेष (संकलित)	56
20.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल की उल्लेखनीय गतिविधियाँ	57–59
21.	नराकास करनाल द्वारा नगर स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के परीक्षा परिणाम	60–61
22.	न.रा.का.स. करनाल की विभिन्न गतिविधियों की झलक (2017–18)	62–64
23.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के सदस्य कार्यालय, उनके लोगो, कार्यालय प्रधान व ई–मेल	65–68
24.	राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु वार्षिक नराकास पुरस्कार एवं शील्ड (2017–18) से सम्मानित कार्यालय	69
25.	"स्मृति–शेष"	70

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

रा.डे.अनु.सं
N.D.R.I.

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल एवं
निदेशक, भा.कृ.अ.प.-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
अग्रसैन चौक, करनाल, हरियाणा, पिन-132 001
Chairman, Town Official Language Implementation Committee and
Director, ICAR-NDRI (Deemed University)
Karnal, Haryana-132001
ईमेल : dir.ndri@gmail.com, ☎ : 0184-2252800, Fax : 0184-2250042

संरक्षक की कलम से.....

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति और अस्मिता की पहचान उसकी भाषा से होती है। विश्व में वही देश और समाज प्रतिष्ठा पाता है जो अपनी भाषा और अपने संस्कारों का अभिमानी होता है। भारत बहुभाषी राष्ट्र है और यह इसकी कमजोरी नहीं ताकत है। पूर्वजों की पीड़ा, श्रम, संघर्ष और कुर्बानी से हिन्दी और हिन्द की संस्कृति की जड़ें मजबूत हुई हैं। समय की आवश्यकता के अनुरूप हिन्दी को नए दर्शन, नई उमंग, कठिन परिश्रम और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ाना होगा। हिन्दी को रोज़गार से जोड़ना होगा।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के सदस्य कार्यालयों द्वारा **''कर्णोदय''** पत्रिका के माध्यम से उपरोक्त नीति अनुपालन की दिशा में एक सामूहिक प्रयास किया जा रहा है। **''कर्णोदय''** पत्रिका महज एक पत्रिका ही नहीं है, अपितु इसमें विशाल भारत के छोटे से शहर करनाल की पवित्र देवभूमि की आत्मा की महक संजोयी हुई है। नराकास की बैठकों में की जाने वाली समीक्षा इस बात का प्रमाण है कि हम सब मिलकर राजभाषा हिन्दी संबंधी सरकारी नीति के अनुपालन की दिशा में अग्रसर हैं। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मंच से सभी सदस्य कार्यालयों को पास आने का एवं अपने विचारों के संप्रेषण का सुअवसर प्राप्त होता है। नगर स्तर पर समय-समय पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं, जिससे सभी को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्राप्त होता है। यह एक ऐसा मंच है जिसके द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के साथ-साथ हम अपने आंतरिक उद्‌गारों को भी अभिव्यक्त कर सकते हैं।

समिति की चहुँमुखी प्रगति में इस संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के सदस्य सचिव श्री राकेश कुमार कुशवाहा के प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं। निःसंदेह उनके अथक प्रयासों से समिति की गतिविधियों को गति मिली है। इसी क्रम में, मैं संपादक मंडल के सदस्यों एवं इस पत्रिका के लिए अपने लेख भेजने वाले लेखकों को भी बधाई देता हूँ जिनके संयुक्त प्रयासों से ही ''कर्णोदय'' पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया। पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दिए गए उनके सक्रिय सहयोग के फलस्वरूप ही यह पत्रिका आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। विश्वास है कि भविष्य में भी आप सब का सहयोग इसी भांति मिलता रहेगा।

आर.आर.बी. सिंह

संयुक्त निदेशक(प्रशासन) एवं कुलसचिव,
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
अग्रसैन चौक, करनाल, हरियाणा–132 001
Joint Director(Administration) & Registrar,
ICAR-NDRI (Deemed University) Karnal, Haryana-132001
ईमेल: jdadmin@ndri.res.in, ☎ : 0184-2272392

रा.डे.अनु.सं
N.D.R.I.

आमुख

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल, राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार की दिशा में सक्रियता से कार्य कर रही है तथा भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के समग्र समन्वय में समिति के द्वारा "कर्णोदय" पत्रिका के इस अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं अध्यक्ष, न.रा.कास. करनाल एवं संस्थान के निदेशक, संपादक मण्डल एवं रचनाएं प्रस्तुत करने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों, उनके परिवारजनों एवं बच्चों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ।

हिन्दी भाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं के प्रचार एवं प्रसार में मनोरंजन एवं सिनेमा जगत का योगदान अतुलनीय है। दृश्य, श्रव्य, प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया एवं विज्ञापनों में भी हिन्दी भाषा का बढ़ता हुआ प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। आज के उन्नत प्रौद्योगिकी के युग में टेलीग्राम, फेसबुक, ट्विटर, वाट्सएप, ई–मेल, एसएमएस, एमएमएस आदि में हिन्दी के प्रयोग को बहुत उपयोग में लिया जा रहा है। आज हम इंडिक इन्पुट कीबोर्ड, स्पीच–टू–टेक्स्ट, टेक्स्ट–टू–स्पीच आदि तकनीकी टूलों आदि के माध्यम से अपने स्मार्ट फोन पर भी हिन्दी में आसानी से टाइप कर सकते हैं। यदि हम हिन्दी भाषा में काम करना चाहते हैं तो हमें तकनीकी रूप से अब किसी भी समस्या से रू–ब–रू नहीं होना पड़ता। हम ट्रांसलिट्रेशन सॉफ्टवेयर की मदद से अंग्रेजी में टाइप करके हिन्दी में भी उसे रूपांतरित कर सकते हैं।

मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका समिति के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। संस्थान के राजभाषा एकक एवं विशेषकर समिति के सचिव श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक (राजभाषा) के द्वारा किए जा रहे अथक प्रयासों की भी मैं सराहना करता हूँ।

सुशांत साहा
संयुक्त निदेशक(प्रशासन) एवं कुलसचिव

रा.डे.अनु.सं
N.D.R.I.

नियंत्रक
भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
करनाल, हरियाणा-132 001
Comptroller
ICAR-NDRI (Deemed University) Karnal, Haryana-132001

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा अपनी पत्रिका 'कर्णोदय' के 15 वें अंक (2017-18) के प्रकाशन हेतु मैं समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्य कार्यालयों को हृदय से बधाई देना चाहता हूँ।

समिति की चहुँमुखी प्रगति में राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास करनाल- डा. आर.आर.बी. सिंह के बहुमूल्य मार्गदर्शन व समिति के सचिव श्री राकेश कुमार कुशवाहा द्वारा समिति की गतिविधियों को उन्मुखी बनाने के लिए उनके अथक प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं। ''कर्णोदय'' पत्रिका हिन्दी भाषा (राजभाषा) के प्रचार-प्रसार में एक अहम भूमिका निभा रही है।

जहाँ तक राजभाषा हिन्दी के सरकारी कामकाज में प्रयोग की बात है, मेरी यह निजी राय है कि हिन्दी हमारे अपने राष्ट्र की भाषा है। हिन्दीभाषी क्षेत्र का मूलनिवासी होने के नाते मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूँ कि हिन्दी मेरी मातृभाषा है और मुझे हिन्दी बोलने, लिखने आदि हर माध्यम में इसका प्रयोग करने में अत्यंत गर्व का अहसास होता है और मैं इस पत्रिका के माध्यम से करनाल स्थित केन्द्र सरकार के समस्त सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रधानों, अधिकारियों व कर्मचारियों से यह विनम्र आग्रह करना चाहता हूँ कि वे अपने स्तर पर अपने आचार, व्यवहार एवं सरकारी कामकाज में हिन्दी भाषा (राजभाषा) का भरपूर प्रयोग करें। यदि प्रशासनिक स्तर पर शत-प्रतिशत हिन्दी में कार्य करने में असुविधा लगे तो कम से कम शनैः-शनैः इसका प्रयोग करना प्रारंभ करें। क्योंकि मेरा यह मानना है कि जिस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा मजबूत नहीं, वह राष्ट्र भी मजबूत नहीं हो सकता। अतः अब समय आ गया है कि हम इस विषय पर गहराई से चिन्तन करें और हिन्दी को इतना ऊँचा ले जाएं कि हिन्दी के सामने अंग्रेजी बौनी नजर आये और अन्य देशों के लोग भी हिन्दी सीखने को मजबूर हो जाएं।

मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी समिति की गतिविधियाँ सफलता की नित नई गाथा सृजित करेंगी तथा कर्णादय पत्रिका हिन्दी भाषा (राजभाषा) के प्रचार-प्रसार में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाएगी। मै इसके लिए नराकास करनाल को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

डी.डी.वर्मा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (न.रा.का.स) करनाल
सत्यमेव जयते
समन्वय कार्यालय :
भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल
Co-ordination Office :
ICAR-NDRI (Deemed University), Karnal
Town Official Language Implementation Committee (T.O.L.I.C), Karnal

न.रा.का.स., करनाल

न	नम्रतापूर्वक	क	कर्मठ केन्द्र नगर का
रा	राजभाषा	र	रहे राजभाषा उन्मुखी सर्वदा
का	कार्यान्वयन	ना	ना थमेंगे हमारे अथक प्रयास
स	समन्वय	ल	लक्ष्य न होंगे जब तक पूरे प्राप्त

''नराकास करनाल के बढ़ते कदम,
प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग के संग''

निदेशक (राजभाषा)
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार
कृषि भवन, डा. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली–110 001.

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा **"कर्णोदय"** पत्रिका के वर्ष 2017–18 के अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल के सदस्य कार्यालयों द्वारा समिति के मार्गदर्शन में एवं राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिए आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यकलापों, आलेख, रचनाओं आदि को प्रकाशित किया जाएगा। इस तरह से सभी सदस्य कार्यालय दूसरे कार्यालय की राजभाषा गतिविधियों से परिचित होंगे और उन्हें अपने कार्यालय में राजभाषा के क्षेत्र में नए प्रयोग करने का अवसर भी प्राप्त होगा।

राजभाषा हिन्दी न केवल भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है बल्कि विश्व में बोली जाने वाली अग्रणी भाषाओं में से एक है। इस प्रकार के प्रकाशनों से राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट साहित्य तथा विविध प्रकार की जानकारी को पाठकों तक पहुँचाना आसान हो जाता है।

मैं "कर्णोदय" पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ इसकी सफलता की भी आशा करती हूँ।

सीमा चोपड़ा

उप निदेशक (कार्यान्वयन),
उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–1,
ए–149, सरोजिनी नगर, नई–दिल्ली, ईमेल : ddriodel-dol@nic.in

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा अपनी पत्रिका 'कर्णोदय' के 15 वें अंक (2017–18) का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों एवं निगमों, बैंकों में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यों के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल निःसन्देह ही बधाई की पात्र है। यह एक ऐसा मंच है जिसके द्वारा राजभाषा नीति के क्रियान्वयन के साथ–साथ हम अपने आंतरिक उद्‌गारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं। राजभाषा विभाग की संयुक्त वेबसाइट पर समिति के द्वारा अपनी गतिविधियों को समय पर अद्यतन किया जा रहा है तथा समिति की अधिकांश गतिविधियाँ अन्य नराकासों के लिए अनुकरणीय है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि नराकास करनाल द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार व प्रोत्साहन की दिशा में किए जा रहे प्रयास भविष्य में भी इसी प्रकार जारी रहेंगे।

समिति की चहुँमुखी प्रगति में संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास करनाल, डा. आर.आर.बी. सिंह, संयुक्त निदेशक (प्रशासन) एवं कुलसचिव श्री सुशांत साहा एवं समिति के सदस्य सचिव श्री राकेश कुमार कुशवाहा के प्रयास सराहनीय हैं। समिति के सराहनीय कार्यों के लिए गृह मंत्रालय द्वारा भी इसे समय–समय पर पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया है। भविष्य में समिति प्रगति की अनंत सीमाओं को छुएगी तथा **"कर्णोदय"** पत्रिका इस महत्वपूर्ण अभियान में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाएगी। मैं इसके लिए नराकास करनाल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

प्रमोद कुमार शर्मा

रा.डे.अनु.सं
N.D.R.I.

सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल एवं
सहायक निदेशक(राजभाषा)
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
करनाल, हरियाणा–132 001
Secretary, Town Official Language Implementation Committee, Karnal &
Assistant Director (Official Language)
ICAR-NDRI (Deemed University) Karnal, Haryana-132001

ईमेल: tolic.karnal.ndri@gmail.com, ☎ : 0184-2259045, Fax : 0184-2250042, Mob. 8708673785

मुख्य संपादक की कलम से ...

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका "कर्णोदय" के माध्यम से आपके सम्मुख अपनी बात रखने का सुअवसर प्राप्त होता है। इसी क्रम में आपको समिति की वर्ष 2017–18 के पन्द्रहवें अंक को आपके हाथों में सौंपते हुए अपार हर्ष हो रहा है।

यह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान के लिए गर्व का विषय है कि करनाल नगर में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, उपक्रमों, संस्थानों, निगमों, लिमिटेड आदि सदस्य कार्यालयों को नराकास करनाल समिति के एकीकृत मंच के अधीन समन्वित करने का दायित्व इस संस्थान को प्रदान किया गया है और समिति के समस्त प्रशासनिक प्रधान अपने–अपने कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिए सार्थक प्रयास कर रहे हैं। इस अंक में नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों का ब्योरा, सदस्य कार्यालयों के अन्तर्गत आयोजित की जाने वाली विभिन्न राजभाषा गतिविधियों का ब्योरा एवं समिति द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों को भी शामिल किया गया है। मैं नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों, राजभाषा अधिकारियों, राजभाषा समन्वयकों, हिन्दी अनुवादकों, हिन्दी लिपिकों, कर्मचारियों, लेखकों–लेखिकाओं तथा विद्यार्थियों को हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने अपने आलेखों, रचनाओं, बधाई–सन्देशों एवं विज्ञापनों से इस अंक को सफल बनाने में अपना–अपना बहुमूल्य सहयोग हमें प्रदान किया है तथा समिति के रचनात्मक कार्यों की अवसर विशेष पर मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

राजभाषा विभाग, गृह–मंत्रालय, भारत सरकार के सक्षम प्राधिकारियों, डा.आर.आर.बी.सिंह, निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास, करनाल, इस संस्थान के श्री सुशांत साहा, संयुक्त निदेशक(प्रशासन) व कुलसचिव, समिति के पूर्व समन्वयक श्री केपीएस गौतम, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी तथा नराकास करनाल के सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों व पदाधिकारियों को हम इस अवसर पर विशेष रूप से बधाई देना चाहते हैं कि उनके मार्गदर्शन में समिति ने कई महत्वपूर्ण एवं अनुकरणीय कार्य करने का प्रयास किया है। इनमें सदस्य कार्यालयों के डाटाबेस का अद्यतनीकरण, कागजविहीन पत्राचार, समय–समय पर विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं, कार्यशालाओं व संगोष्ठियों का आयोजन, उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों का राजभाषा शील्ड व ट्राफी से सम्मान, उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालय प्रधानों, राजभाषा अधिकारियों व कर्मचारियों का प्रशस्ति–पत्र से सम्मान, समिति के वित्तीय अभिलेखों की समय पर लेखा परीक्षा एवं समिति की पत्रिका के समय पर प्रकाशन आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। समित कार्यालय द्वारा आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं के दौरान प्रतिभागियों द्वारा लिखी गई उल्लेखनीय रचनाओं, प्रविष्टियों आदि को भी इस पुस्तक में शामिल करने का हमने प्रयास किया है। इन रचनाओं को शामिल करने का हमारा मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को हिन्दी में लेखन के लिए प्रोत्साहित करना भी है।

राडेअनुसं(एनडीआरआई), करनाल के निदेशक व समिति के अध्यक्ष महोदय के मार्गदर्शन एवं सलाहकार व संपादक मण्डल के सतत् सहयोग के बिना इस अंक को समय पर प्रकाशित कर पाना संभव नहीं था। इस पत्रिका को समय पर प्रस्तुत करने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देने वाले समिति के पदाधिकारियों, राजभाषा अधिकारियों व राडेअनुसं(एनडीआरआई) करनाल के अधिकारियों को मैं हृदय से धन्यवाद भी देता हूँ। आशा है कि पूर्व की भांति इस अंक को भी सुधि पाठकगण रूचिकर और उपयोगी पायेंगे। इस प्रतिष्ठित पत्रिका के प्रबुद्ध पाठकों से हमारा पुनः विनम्र निवेदन है कि वे इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों के बारे में अपनी प्रतिक्रियाएं अवश्य भेजें। उनकी प्रतिक्रिया इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने में अपनी अहम् भूमिका अदा करती आ रही है एवं इस अंक पर प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

जय–हिन्द।

राकेश कुमार

निदेशक, एमएसएमई–विकास संस्थान, करनाल

सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि राजभाषा की प्रगति हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी कर्णोदय पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है । करनाल नगर में राजभाषा हिंदी के प्रति सौहार्दपूर्ण वातावरण है और समिति की बैठकों में अधोहस्ताक्षरी स्वयं भाग लेते हैं, और मैंने यह भी पाया है कि श्री के.पी.एस.गौतम, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के संयोजन में श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक एवं सचिव न.रा.का.स. अपनी टीम के साथ प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं ।

हमारे संस्थान में अधिकतर कार्य हिंदी में ही किए जाते हैं और भारत सरकार के राजभाषा विभाग के लक्ष्यों की अनुपालना करने के पूरे प्रयास किए जाते हैं। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें, हिंदी दिवस / पखवाड़ा / हिंदी कार्यशालाएं समय समय पर आयोजित की जाती हैं। संस्थान के कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु दो प्रोत्साहन योजनाएं हर वर्ष चलाई जाती हैं और पुरस्कार दिए जाते हैं।

कर्णोदय पत्रिका के प्रकाशन हेतु पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाएं। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका पूरे भारत में अपनी सफलता का परचम लहराएगी ।

मेजर सिंह

सन्देश

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा समिति की वार्षिक गृह पत्रिका "कर्णोदय" के पन्द्रहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

नराकास करनाल द्वारा राजभाषा के प्रचार–प्रसार में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को प्रकट करने के लिए एक मंच प्रदान करने की दृष्टि से, यह प्रशंसनीय कार्य कहा जा सकता है और इस नेक कार्य के लिए राजभाषा विभाग भी बधाई का पात्र है।

हमें मिलकर राजभाषा को और अधिक ऊँचाइ पर ले जाना हैं। यह तभी सम्भव है जब हमारी सोच सकारात्मक हो और एक विश्वास भी हो कि हाँ, हम ऐसा कर सकते है और सफल हो सकते हैं। मुझे इमर्सन का कथन याद आता है, "वे जीत जाते हैं, जिन्हें यह विश्वास होता है कि वे जीत सकते हैं।" कर्णोदय पत्रिका के सफल एवं उद्देश्य–पूर्ण प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

जोगेन्द्र कुमार
वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक
भारतीय जीवन बीमा निगम
मण्डल कार्यालय, करनाल

सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि गृह–मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा " कर्णोदय पत्रिका " के 15वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े समस्त लोगों को बधाई देना चाहता हूँ ।

गत अंक में नराकास करनाल की गतिविधियों की सम्पूर्ण जानकारी, हिन्दी लेखन में विराम चिह्नों का प्रयोग लेख विशेष उल्लेखनीय रहें।

मुझे आशा है कि पत्रिका हमारे करनाल, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों के साथ आम लोगों में भी राजभाषा के प्रति जागरुकता एवं प्रचार–प्रसार करने में सफल होगी ।

"कर्णोदय पत्रिका" निरंतर पल्लवित–पुष्पित होती रहे और अपने उद्देश्यों में सफल हो, ऐसी शुभकामनाओं के साथ ।

उमेश कुमार शर्मा
उप महाप्रबंधक
केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India
अच्छे लोग अच्छा बैंक Good people to bank with
भारतीय बैंकिंग कोड एवं मानक बोर्ड के सदस्य Member of Banking Codes & Standards Board of India

क्षेत्र प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, मॉडल टाऊन करनाल

ईमेल: rh.karnal@unionbankofindia.com, ☎ : 0184-2268640

सन्देश

(नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल, के सदस्य कार्यालयों के लिए)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल की गृह पत्रिका कर्णोदय के माध्यम से एक बार पुनः आपके समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिला है जिससे मेरा चित्त बहुत हर्षित है इसके लिए पत्रिका के संपादक एवं संरक्षक महोदय का तहेदिल से धन्यवाद करना चाहता हूँ।

मित्रों, जैसा कि आप जानते हैं कि समस्त संसार निर्मल और निरोगी काया की कामना करता है जिसके लिए मनुष्य विभिन्न प्रकार के उपाय भी करता है। कहा भी गया है कि " हैल्थ इज वैल्थ " अर्थात स्वास्थ्य ही वास्तविक धन है। परंतु आज के वातावरण में हम अपने स्वास्थ्य को हानि पहुंचा रहे हैं। शरीर को हानि पहुंचाने में चिंता का बहुत योगदान रहता है, फिर भी हम इसे अपने ऊपर लादे रहते हैं। कभी भी इसे कम करने का प्रयास नहीं करते। इसलिए हमें चिंता करने की बजाय खुद पर भरोसा रखते हुए मनोबल को निरंतर मजबूत करते रहना चाहिए। इस विषय में मुझे एक लघु कथा याद आ रही है कि, " एक बार एक संत भक्तों के बीच प्रवचन कर रहे थे। इसी दौरान उन्होंने पानी से भरा एक गिलास उठाया। सभी भक्तों ने समझा कि गिलास के आधा भरा या खाली होने के बारे में प्रश्न पूछा जाएगा। किन्तु संत ने बिल्कुल नई बात पुछी। उन्होनें पूछा कि इस पानी से भरे गिलास का वजन कितना है? सभी ने 300 या 400 ग्राम का अंदाजा लगाया। इस पर संत ने कहा कि इस गिलास का वजन नाममात्र का है लेकिन इसे कितनी देर तक हाथ में उठाए रखा जा सकता है? यदि मैं इस गिलास को एक मिनट तक उठा कर रखूँ तो क्या होगा ? शायद कुछ भी नहीं। अगर मैं इस गिलास को एक घंटे तक उठा कर रखूँ तो मेरे हाथ में दर्द होने लगेगा और संभवतः अकड़ भी जाए। और यदि मैं इस गिलास को एक दिन तक उठा के रखूँगा तो यकीनन बेहद दर्दनांक हालत हो जाएगी। इससे हो सकता है कि मैं अपने हाथ को हिलाने में ही असमर्थ हो जाऊँ। इस प्रकार उक्त तीनों ही परिस्थितियों में इस पानी का वजन ना कम होगा और न ही अधिक? इस पर भक्तों ने संत से पूछा कि हे महात्मा ! आप इस बात के माध्यम से हमें क्या समझाना चाह रहें हैं, कृपया अवगत कराएं। संत ने कहा, " यह पानी का गिलास चिंता का स्वरूप है। चिंता द्वारा यही आघात हमारी कमल रूपी काया पर किया जाता है। यदि हम चिंता को अपने मन में एक मिनट तक रखेंगें तो कुछ नहीं होगा। एक घंटे के लिए रखेंगें तो दर्द एवं परेशानी बढ़ेगी। लेकिन यदि हम इसे पूरा दिन रखेगें तो ये चिंता हमारा जीना दूभर कर देगी और हमें कुछ भी सोचने या समझने में असमर्थ बना देगी।" अतः आज के सामाजिक परिवेश में जहां माहौल तनाव से परिपूर्ण है वहाँ हमें अपने चिंता रूपी गिलास को एक मिनट के बाद अवश्य नीचे रखने की कोशिश करनी चाहिए। हमें भविष्य की चिंता छोड़कर वर्तमान में जीना सीखना चाहिए। यदि हम हमेशा भविष्य की चिंता करते रहेंगे, तो इससे हमारा वर्तमान में जीना भी निरर्थक हो जाएगा और हाँ दुख एवं सुख तो निरंतर ढलती फिरती छाया है। इन्हीं शब्दों के साथ आप सभी का एक बार पुनः आभार।

नवनीत कुमार

सन्देश

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय
Ministry of Labour & Employment
भारत सरकार (Government & Employment
सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के समन्वय में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा प्रकाशित की जा रही समिति की वार्षिक गृह पत्रिका "कर्णोदय" के वर्ष 2017–18 के पन्द्रहवें अंक के प्रकाशन के लिए हमारे कार्यालय की ओर से शुभकामनायें।

इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं प्रविष्टियाँ प्रस्तुत करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी बधाई। हमें आशा है कि पत्रिका राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन को नई दिशा प्रदान करेगी।

मो०रजी आलम खाँ,
सहायक श्रम आयुक्त(केन्द्रीय)
32, बैंक कॉलोनी, करनाल, हरियाणा

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का वर्ष 2018-19 का वार्षिक कार्यक्रम (नराकास करनाल के ''क' क्षेत्र में स्थित सदस्य कार्यालयों के लिए लागू मदें)

क्र.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का हिंदी में उत्तर दिया जाना	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
2.	हिंदी में कार्यालय टिप्पणियां लिखना	75 प्रतिशत	50 प्रतिशत	30 प्रतिशत
3.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन	70 प्रतिशत	60 प्रतिशत	30 प्रतिशत
4.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80 प्रतिशत	70 प्रतिशत	40 प्रतिशत
5.	हिंदी में डिक्टेशन, कीबोर्ड पर सीधे टंकण(स्वयं व सहायक द्वारा)	65 प्रतिशत	55 प्रतिशत	30 प्रतिशत
6.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण एवं आशुलिपि)	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
7.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
8.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों आदि की खरीद पर व्यय	50 प्रतिशत	50 प्रतिशत	50 प्रतिशत
9	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषिक खरीद	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
10	वेबसाइट (द्विभाषी)	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
11	नागरिक चार्टर तथा जन-सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
12	मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण (न्यूनतम)	25 प्रतिशत	25 प्रतिशत	25 प्रतिशत
13	राजभाषा संबंधी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें	वर्ष में 2 बैठकें, प्रति छमाही एक बैठक		
14	राजभाषा संबंधी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें	वर्ष में 4 बैठकें, प्रति तिमाही एक बैठक		
15	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100 प्रतिशत		

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का वार्षिक कार्यक्रम वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर लॉग इन करके डाउनलोड किया जा सकता है।

नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा गतिविधियों की जानकारी

1. भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

संस्थान में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान के कार्यालय आदेश सं. अनुदेश/राजभाषा एकक/2017 दि. 20.5.2017 के तहत संस्थान के 37 प्रभागों/अनुभागों को अपना शत–प्रतिशत प्रशासनिक कार्य हिन्दी में करने के लिए विनिर्दिष्ट किया गया है। संस्थान के कार्यालय आदेश सं. अनुदेश/राजभाषा एकक/2017 दि. 20.5.2017 के तहत संस्थान के सभी प्रभागों/अनुभागों के अध्यक्षों/प्रभारी अधिकारियों को धारा 3(3) के अन्तर्गत आने वाले समस्त 14 प्रकार के दस्तावेज द्विभाषी जारी करने के आदेश जारी किये गए हैं। संस्थान के कार्यालय आदेश सं. अनुदेश/राजभाषा एकक/2017 दि. 18.5.2017 के तहत संस्थान के सभी प्रभागों/अनुभागों में घोषित जाँच बिन्दुओं पर राजभाषा नियमों की अनुपालना सुनिश्चित करने के आदेश पारित किए गए हैं। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दि. 6.6.2017, 8.9.2017, 13.12.2017 एवं 19.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक एवं एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। बैठकों में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। कार्यालय में सितंबर–अक्तूबर, 2017 माह में हिन्दी पखवाड़ा/हिन्दी चेतना मास का आयोजन करके 139 विजेताओं को प्रमाण पत्रों से पुरस्कृत किया गया।

2. भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल

संस्थान में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दि. 22.6.2017, 1.9.2017, 21.12.2017 एवं 27.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। कार्यालय में सितंबर–2017 माह में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

3. भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशु आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें 2.5.2017, 29.7.2017, 19.1.2018 एवं 26.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। सितंबर–2017 माह में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

4. भाकृअनुप–भारतीय गेहूं एवं जौं अनुसंधान संस्थान, करनाल

संस्थान में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दि. 24.5.2017, 18.8..2017, 29.12.2017 एवं 23.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। सितंबर–2017 माह में हिन्दी पखवाड़ा एवं राजभाषा उत्सव का आयोजन किया गया।

5. भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 20.4.2017, 23.8.2017, 15.12.2017 एवं 5.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। सितंबर–2017 माह में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

6. भाकृअनुप–गन्ना प्रजनन संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

संस्थान में राजभाषा नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दि. 28.7.2017, 2.12.2017 एवं 22.1.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन करने का प्रयास किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। सितंबर–2017 माह में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

7. सीपीडब्ल्यूडी(सिविल), केन्द्रीय मंडल, एनडीआरआई कैंपस, करनाल

संस्थान में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है।

8. सीपीडब्ल्यूडी(विद्युत), केन्द्रीय विद्युत डिविजन, करनाल

संस्थान में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है।

9. प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय, आयकर भवन, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 20.6.2017, 13.9.2017, 29.12.2017 एवं 19.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। सितंबर–2017 माह में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

10. अधीक्षक(प्रथम), केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है।

11. अधीक्षक(द्वितीय), केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है।

12. कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय प्रधान की अध्यक्षता में दिनांक 30.08.2017, 10.10.2017, 01.12.2017 एवं 14.03.2018 को तिमाही हिन्दी बैठकें सम्पन्न हुई। बैठक में निर्णित मुद्दों पर शीघ्र कार्रवाई का निर्णय लिया गया। सितंबर–2017 माह में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

13. प्रधान डाकघर, करनाल मण्डल, जीपीओ– करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 26.5.2017, 28.7.2017, 30.11.2017 एवं 29.1.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। सितंबर–2017 माह में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

14. सरकारी चिकित्सा सामग्री भंडार, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

15. राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

16. रक्षा पेंशन संवितरण अधिकारी कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

17. उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी कार्यालय, गृह मंत्रालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

18. स्टेशन अधीक्षक कार्यालय, करनाल रेलवे स्टेशन, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

19. सहायक मंडल अभियंता कार्यालय, उत्तर रेलवे, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

20. भारत सरकार मुद्रणालय, नीलोखेड़ी, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 22.6.2017, 26.9.2017, 14.12.2017 एवं 13.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है।

21. सहायक श्रम आयुक्त(केन्द्रीय) कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है।

22. राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

23. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

24. सैनिक स्कूल कुंजपुरा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

25. केन्द्रीय विद्यालय, कैथल रोड, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

26. जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल

शाला कार्यालय में राजभाषा नियमों का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठक दि.15.4.2017, 31.8.2017, 28.11.2017 एवं 8.2.2018 को संपन्न हुई हैं। प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। राजभाषा हिन्दी से सम्बन्धित हिन्दी कार्यशालाओं का दि. 16.04.17, 14.09.17, 08.12.17 एवं 09.03.18 को आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़ा–2017 के दौरान 6 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

27. कृभको लिमिटेड, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

28. भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें समय पर आयोजित की गईं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। सितंबर–2017 माह में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

29. केन्द्रीय भण्डार गृह(1), केन्द्रीय भण्डारण निगम, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

30. राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड, सेक्टर–3, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

31. एम.एस.एम.ई. विकास संस्थान, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 2022.6.2017, 14.9.2017, 4.1.2018 एवं 23.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

32. भारत संचार निगम लिमिटेड, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

33. दूरदर्शन अनुरक्षण केन्द्र, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

34. पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस कं0लिमि0, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

35. भारतीय जीवन बीमा निगम हाउसिंग फाइनेंस लिमि. करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है।

36. भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 7.6.2017, 7.9.2017, 21.12.2017 एवं 6.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

37. ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, क्लस्टर कार्यालय, करनाल

क्लस्टर कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 16.10.2017, 29.12.2017 एवं 23.4.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

38. दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कं.लिमि, मंडलीय कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

39. ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमि., मंडलीय कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

40. नेशनल इंश्योरेंस कं.लि., मंडलीय कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

41. यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमि0, मंडल कार्यालय करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 7.7.2017, 9.10.2017, 5.1.2018 एवं 6.4.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है।

42. यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कं.लि., वाहन डीलर कार्या, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

43. कॉर्पोरेशन बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

44. इण्डियन ओवरसीज बैंक, मुख्य शाखा करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

45. केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

अँचल कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 15.5.2017, 2.8.2017, 6.10.2017 एवं 3.1.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है। हिन्दी माह –2017 का आयोजन किया गया।

46. पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय, करनाल

मंडल कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 29.6.2017, 29.9.2017, 27.12.2017 एवं 28.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है।

47. स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर(अब एसबीआई), करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

48. भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

49. यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दि.19.5.2017, 2.9.2017, 12.12.2017 व 8.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है।

50. बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 23.6.2017, 25.6.2017, 27.12.2017 एवं 22.3.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है।

51. बैंक ऑफ इण्डिया, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

52. इण्डियन बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

53. इलाहाबाद बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

54. आन्ध्रा बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

55. भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

56. विजया बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

57. यूको बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

58. पंजाब एवं सिंध बैंक, आँचलिक कार्यालय, करनाल

आँचलिक कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही हिन्दी बैठकें दिनाँक 29.6.2017, 3.10.2017, 28.12.2017 एवं 26.2.2018 को संपन्न हुई हैं। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी बैठक का आयोजन किया जा रहा है तथा बैठक में निर्णित सभी बिन्दुओं पर समय पर कार्रवाई की जाती है। सभी निर्णित बिन्दुओं पर कार्रवाई की जा चुकी है तथा कोई भी बिन्दु कार्रवाई हेतु शेष नहीं है।

59. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

60. बैंक ऑफ महाराष्ट्र, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

61. सिंडिकेट बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

62. भारतीय स्टेट बैंक, एनडीआरआई शाखा, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

63. इफको, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

64. नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

65. राष्ट्रीय सूचना–विज्ञान केन्द्र, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

66. नेहरू युवा केन्द्र संगठन, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का नियमानुसार अनुपालन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2017 का आयोजन किया गया।

आइए जानें विराम चिह्नों का प्रयोग

क्रम सं.	विराम चिह्न	हिंदी नाम	अंग्रेजी नाम	प्रयोग
1.	।	पूर्ण विराम	Full Stop(.)	वाक्य के समाप्त होने की सूचना के अंत में, जैसे 'मोहन आता है'।
2.	(जैसे राम,)	अल्पविराम	Comma	1. वाक्य, वाक्यांश में तीन या अधिक शब्दों को पृथक करने में, 'जैसे : अजमेर, जयपुर, दौसा आदि।' 2. समान पदबंधों, उपवाक्यों को पृथक करने हेतु, जैसे– क. इलाहाबाद में संगम, हनुमान मंदिर एवं आनन्द भवन रमणीय हैं। ख. वह आता है, काम करता है और लौट जाता है। 3. सकारात्मक और नकारात्मक वाक्यों में हाँ या नहीं के बाद, जैसे–हाँ मैं आ रहा हूं। नहीं, मैं आने में असमर्थ हूँ। 4. संबोधन में शब्द के उच्चारण के बाद क्षण भर रूकने में, जैसे – नमस्कार, आप यहां पधारे, उसके लिए, धन्यवाद।
3.	?	प्रश्न चिह्न	Question Mark	प्रश्न पूछने वाले वाक्यों के अंत में प्रयोग होता है। जैसे आप कैसे हो ?
4.	!	विस्मयसूचक चिह्न	Exclamation Sign	विस्मय, हर्ष, विषाद, घृणा, आश्चर्य आदि को प्रकट करने में, जैसे–हाय! बेचारा सताया गया!
5.	:	उपविराम या अपूर्ण विराम	Colon	1. आगे आने वाली सूची आदि के पूर्व में, जैसे सीमा के तीन पुत्र हैं : राम, मोहन एवं सोमू। 2. संख्याओं के अनुपात दर्शाने में, जैसे 1:2 आदि। 3. नाटक / एकांकी में पात्रों द्वारा कथन कहने में, जैसे– पुत्र : पिताजी, मैं कायर नहीं हूँ। 4. स्थान / समय आदि की सूचना हेतु, जैसे– स्थान : मनोरंजन कक्ष, समय : सांयकाल 3 बजे, प्रातः 08:00 बजे
6.	;	अर्धविराम	Semi Colon	1. छोटे–छोटे दो या अधिक वाक्यों की श्रृंखला में जो परस्पर आश्रित हों, जैसे – विद्या विनय से आती है; विनय से पात्रता। 2. अंकों के विवरण देने में– जैसे भारत–210; जापान–205
7.	' (जैसे सन' 47 तक)	ऊर्ध्व अल्पविराम	Apostrophe	ऊर्ध्व अल्पविराम का प्रयोग अंग्रेजी के अपॉस्ट्रॉफी के लिए किया जाता है। हिंदी में यह ''अंक लोप'' के चिह्न मात्र का सूचक है। जैसे– सन् 1947 से 1950 तक को सन् '47 से सन् '50 तक लिखेंगे।

राजभाषा ज्ञान प्रश्नावली

प्रश्न / उत्तर

1 भारत संघ की राजभाषा क्या है ?

उत्तर देव नागरी में लिखी जाने वाली वाली हिंदी भाषा।

2 राजभाषा हिंदी किस लिपि में लिखी जाती है ?

उत्तर देवनागरी लिपि में।

3 भारतीय संसद में संविधान का भाग सत्रह कब पारित हुआ ?

उत्तर 14/09/1949 को।

4 राजभाषा अधिनियम 1963 कब पारित हुआ ?

उत्तर 10 मई 1963 को।

5 राजभाषा अधिनियम 1963 कब संशोधित किया गया ?

उत्तर 1967 में।

6 राजभाषा नियमों में वर्गीकृत 3 क्षेत्र क्या हैं ?

उत्तर क,ख व ग क्षेत्र।

7 भारतीय हिंदी दिवस कब मनाते हैं ?

उत्तर प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को।

8 अंडमान व निकोबार द्वीप समूह किस क्षेत्र में स्थित है ?

उत्तर "क" क्षेत्र में।

9 " ख " क्षेत्र में कितने प्रदेश व केन्द्र शासित प्रदेश हैं ?

उत्तर कुल 06, तीन प्रदेश गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब एवं तीन केन्द्रशासित प्रदेश चंडीगढ, दमन व दीव, दादर व नागर हवेली।

10 "ग" क्षेत्र में कितने प्रदेश व केन्द्र शासित प्रदेश हैं ?

उत्तर जम्मू–कश्मीर, असम, अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैण्ड, सिक्किम, गोवा, पश्चिम बंगाल, ओडीशा, केरल, तमिलनाडु, आंध–प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक,केन्द्र शासित प्रदेश 02 : लक्षद्वीप व पुदुचेरी।

11 नागालैण्ड व अरूणाचल प्रदेश की राजभाषा क्या है ?

उत्तर अंग्रेजी।

12 संसदीय राजभाषा समिति का प्रथम गठन कब हुआ ?

उत्तर जनवरी, 1976

13 संसदीय राजभाषा समिति में कितने सदस्य होते हैं ?

उत्तर 30, लोकसभा से 20 राज्यसभा से 10 ।

14 संसदीय राजभाषा समिति में वर्तमान में कितनी उप–समितियां हैं ?

उत्तर 03 उप–समितियां हैं।

15 राजभाषा कार्यान्वयन समिति का मुख्य कर्त्तव्य क्या है ?

उत्तर किसी कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा एवं कार्यान्वयन हेतु कार्रवाई / कार्यवाही।

16 T.O.L.I.C की बैठकों की अवधि क्या होती है ?

उत्तर 6 माह में एक बार

17 वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम कौन तैयार करता है ?

उत्तर गृह–मंत्रालय का राजभाषा विभाग।

18 गैर हिंदी भाषी निवासियों को दिए गए आश्वासनों को विधिक रूप देने के लिए कौन–सा नियम पारित किया गया ?

उत्तर राजभाषा अधिनियम 1963 (यथासंशोधित 1967)

19 राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) कब से लागू की गई है ?

उत्तर 26 जनवरी 1965 से ।

20 राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 किससे संबंधित है ?

उत्तर संसदीय राजभाषा समिति के गठन से।

21 संविधान की धारा / अनुच्छेद 343–351 किस भाग में है ?

उत्तर भाग सत्रह में

22 राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 7 क्या है ?

उत्तर उच्च न्यायालयों के निर्णयों में हिंदी या अंग्रेजी भाषा के प्रयोग का विकल्प ।

23 राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 6 क्या है ?

उत्तर राज्यों के उच्च न्यायालयों के मामलों में राज्यपाल की अनुमति से अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषा का प्रयोग।

24 क्या राजभाषा नियम 1976 का विस्तार संपूर्ण भारत पर है ?

उत्तर इनका विस्तार तमिलनाडु राज्य को छोड़ कर पूरे भारत पर है।

25 राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 6 व 7 किस राज्य पर लागू नहीं हैं ?

उत्तर जम्मू और कश्मीर पर।

26 **राजभाषा संकल्प 1968 किन सदनों में परित हुआ ?**

उत्तर लोकसभा और राज्यसभा में।

27 **साइन बोर्ड में तीन भाषाओं को लिखने का क्रम क्या है ?**

उत्तर सबसे पहले क्षेत्रीय भाषा, उसके बाद हिंदी एवं अंत में अंग्रेजी भाषा।

28 **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रख्यात भारत की प्रमुख भाषाएं कौन–कौन सी हैं ?**

उत्तर 1. हिंदी , 2. संस्कृत, 3. उर्दू

29 **धारा 3 (3) के अंतर्गत द्विभाषी जारी किए जाने वाले दस्तावेज कौन–कौन से हैं?**

उत्तर 1. संकल्प, 2. साधारण आदेश, 3. नियम, 4. अधिसूचनाएं, 5. प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन 6. प्रेस विज्ञप्ति, 7. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष प्रस्तुत प्रतिवेदन, 8. राजकीय दस्तावेज, 9. संविदाएं, 10. करार, 11. लाइसेंस, 12. अनुज्ञापत्र, 13. टेण्डर के लिए नोटिस, 14. निविदा प्रारूप।

30 **भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद के अंतर्गत भाग पांच में राजभाषा नीति संबंधी प्रावधान है ?**

उत्तर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 120 में।

31 **भारतीय संविधान के किन–किन अनुच्छेदों में आठवीं अनुसूची के प्रावधान का उल्लेख है ?**

उत्तर धारा 344(1) व 351 में।

32 **राजभाषा अधिनियम कब व क्यों पारित किया गया ?**

उत्तर 1963 में, वर्ष 1965 के बाद भी सरकारी कामकाज में हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग जारी रखने के बाबत।

33 **भारतीय संविधान के भाग 17 में कितने अनुच्छेद हैं ?**

उत्तर 09 अनुच्छेद है–343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351

34 **भारतीय संविधान की धारा 344 के तहत राजभाषा आयोग कब बना ?**

उत्तर वर्ष 1955 में , बी.जी.खैर आयोग।

35 **राजभाषा आयोग की सिफारिश पर बनी संसदीय समिति के प्रथम अध्यक्ष कौन थे ?**

उत्तर जी.वी. पंत।

36 **संविधान के अनुसार सांविधिक नियमों, विनियमों व आदेशों का अनुवाद करने के लिए कौन सा मंत्रालय प्राधिकृत है ?**

उत्तर कानून मंत्रालय।

37 **वर्ष 1965 तक भारतीय संघ की मुख्य भाषा एवं सह राजभाषाएं कौन सी थीं ?**

उत्तर मुख्य भाषा– अंग्रेजी, सह राजभाषा–हिंदी।

38 **हिंदी कार्यशालाओं में प्रतिभागिता हेतु पात्रता क्या है ?**

उत्तर हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त सभी अधिकारी व वर्ग 'ग' के अधिकारी / कर्मचारी।

39 **'क' 'ख' व 'ग' क्षेत्रों में राज्यों आदि के वर्गीकरण का प्राधिकार क्या है ?**

उत्तर "राजभाषा नियम, 1976।

40 **जम्मू और कश्मीर एवं तमिलनाडु के मामलों में राजभाषा नियमों / विनियमों संबंधी अपवाद क्या है ?**

उत्तर 1. जम्मू और कश्मीर पर राजभाषा अधिनियम की धारा 6 व 7 लागू नहीं हैं।

2. राजभाषा नियम 1976 तमिलनाडू पर लागू नहीं है।

41 **भारतीय संविधान का अनुच्छेद 343 (1) क्या है ?**

उत्तर यह कहता है कि देवनागरी में लिखी हिंदी भारतीय संघ की राजभाषा होगी और अंकों का प्रारूप अंतराष्ट्रीय मानक अर्थात 0,1, 2, 3, 4.........9 होगा।

42 **अनुच्छेद 120 और राजभाषा अधिनियम 3(1)(ख) क्या है ?**

उत्तर संसद में कार्य अंग्रेजी या हिंदी में किया जा सकता है। राज्य सभा के अध्यक्ष या लोकसभा अध्यक्ष किसी संसद सदस्य को उनकी मातृभाषा में बोलने की अनुमति भी दे सकते हैं।

43 **राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 क्या है ?**

उत्तर सरकारी कामकाज के उददेश्य से हिंदी के साथ–साथ अंग्रेजी भी प्रयोग में लाई जा सकती है।

44 **किस उददेश्य के लिए हिंदी, किस उददेश्य के लिए अंग्रेजी या दोनों का प्रयोग किया जाना है, कौन निर्धारित करेगा?**

उत्तर यह राजभाषा अधिनियम 1963 राजभाषा नियम 1976 एवं गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा समय–समय पर निर्धारित किया जाता है।

45 **राजभाषा नियम 10 (2) व 10 (4) में क्या अंतर है ?**

उत्तर नियम 10 (2) –किसी केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत स्टाफ ने हिंदी का ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो यह समझा जाएगा कि उस कार्यालय के सभी कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है।

नियम 10 (4)–केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कर्मचारियों ने हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उन्हें भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचित किया जाएगा।

46 **धारा 3 (3) के संशोधन की प्रक्रिया क्या है ?**

उत्तर प्रस्ताव को पहले लोकसभा, फिर राज्यसभा और उसके बाद सभी राज्यों की विधानसभा से पारित कराना होगा।

47 विश्व के एकमात्र साहित्यकार जिनकी रचनाएँ दो देशों के राष्ट्रगान हैं ?

उत्तर गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर (**भारत**–जन गण मन अधिनायक, **बांग्लादेश**–आमार सोनार बांग्ला)

48 गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर को नोबेल पुरस्कार कब मिला व किस रचना हेतु ?

उत्तर 1913 में, गीतांजलि रचना हेतु।

49 रविन्द्रनाथ टैगोर की प्रसिद्ध कहानियां कौन–कौन सी हैं?

उत्तर काबुलीवाला, मास्टर साहब, पोस्टमास्टर ।

50 संविधान के किस अनुच्छेद के तहत राजभाषा हिंदी का प्रचार व प्रसार केन्द्रीय सरकार का कर्तव्य है ?

उत्तर संविधान का अनुच्छेद 351

51 वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम का सूत्रपात कैसे हुआ ?

उत्तर राजभाषा संकल्प 1968 के तहत ।

52 यदि कोई कार्यालय भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचित है तो क्या तात्पर्य है ?

उत्तर उस कार्यालय के 80 प्रतिशत कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है।

53 क्या हिंदी पत्राचार की गणना में हिंदी में प्रेषित ई–मेल को जोड़ा जाना चाहिए ?

उत्तर जी हाँ।

54 अनुच्छेद 351 में राजभाषा हिंदी के लिए क्या उपबंध हैं ?

उत्तर हिंदी का विकास इस प्रकार किया जाए कि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

55 वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा मान्य शब्दावली तैयार करने का मुख्य लक्षण क्या है ?

उत्तर स्पष्टता, यथार्थता व सरलता ।

56 धारा 3 (3) के अंतर्गत "सामान्य आदेश" क्या हैं ?

उत्तर 1. स्थायी प्रकार के सभी आदेश, निर्णय, अनुदेश, परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के हों।

2. ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस, परिपत्र, आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह / समूहों के लिए हों।

57 धारा 3 (3) के अनुसार संसद में सांविधानिक नियमों, आदेशों आदि का हिंदी रूपांतर कौन तैयार करता है ?

उत्तर विधि मंत्रालय का विधायी विभाग (राजभाषा खंड)

58 किसी प्रदेश की राजभाषा यदि हिंदी को बनाना हो तो प्रक्रिया बताएं ?

उत्तर उस राज्य की विधानसभा को इस विषयक प्रस्ताव पारित करना होगा।

59 अंग्रेजी में लिखित किन्तु हिंदी में हस्ताक्षरित पत्र की गणना अंग्रेजी पत्र में की जाएगी या हिंदी पत्र में ?

उत्तर पत्र तैयार करने वाले कार्यालय में इसकी गणना अंग्रेजी पत्र में एवं पत्र प्राप्त करने वाले कार्यालय में इसकी गणना हिंदी पत्र में की जाएगी एवं उसका जबाव केवल हिंदी में देना होगा।

60 राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष कौन होता है ?

उत्तर कार्यालय का वरिष्ठतम अधिकारी ।

61 विश्व हिंदी दिवस कब मनाया जाता है ?

उत्तर प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को, प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10.1. 2006 को मनाने के स्मरण में ।

62 आठवीं अनुसूची में भारतीय भाषाओं को सम्मिलित करने का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर देश की शैक्षणिक व सांस्कृतिक उन्नति के लिए इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाय किया जाना मुख्य उद्देश्य है।

63 हिंदी की फाईल एक कंम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर में खोलने पर कभी–कभी एक भी शब्द नहीं दिखता, या चौकोर आकृति दिखती है, क्यों ?

उत्तर उस फाईल का नए कम्प्यूटर में फोन्ट नहीं होता, यूनिकोड से अब यह समस्या सुलझ गयी है।

64 गोवा की राजभाषा क्या है ?

उत्तर कोंकणी।

65 संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों का निर्वाचन कैसे होता है ?

उत्तर लोकसभा व राज्यसभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा।

66 संसदीय राजभाषा समिति का गठन कब व कैसे हुआ ?

उत्तर राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के तहत 1976 में हुआ।

67 भाषा के संबंध में भारतेन्दु हरिशचन्द्र की प्रसिद्ध उक्ति लिखें ?

उत्तर "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल "

68 देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली किन्हीं चार भाषाओं के नाम लिखिए ?

उत्तर 1. हिंदी, 2. संस्कृत, 3. नेपाली एवं 4. मराठी

69 भारत का पहला हिंदी समाचार–पत्र कौन सा है ?

उत्तर उदंत मार्तण्ड (1826)

70 साहित्य के प्रमुख तत्व क्या हैं ?

उत्तर भाव, कल्पना, बुद्धि और शैली।

71 राजभाषा अधिनियम 1963 कैसे बना ?

उत्तर खेर आयोग(1955) और पंत समिति (1957) की रिपोर्ट के आधार पर ।

72 राजभाषा विभाग की स्थापना 1975 में की गई ? हाँ या नहीं ?

उत्तर जी हाँ।

73 राजभाषा अधिनियम में कितनी धारायें व उप धाराएं हैं ?

उत्तर 9 धाराएं व 11 उप धाराएं

74 राजभाषा नियम 1976 कैसे बना ?

उत्तर राजभाषा अधिनियम 1963 (यथासंशोधित 1967) की धारा 8(2) के तहत।

75 कबीर, जायसी, प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा कौन हैं?

उत्तर हिंदी के प्रमुख रहस्यवादी कवि हैं।

76 पंजाबी भाषा की लिपि क्या होती है ?

उत्तर गुरूमुखी तथा शाहमुखी।

77 बोली तथा भाषा में अंतर क्या है ?

उत्तर बोली भाषा की प्रारंभिक अवस्था है एवं भाषा विकसित अवस्था।

78 भाषा और लिपि में क्या समानताएं एवं अंतर है ?

उत्तर समानता– दोनों मनुष्यों के विचार–संप्रेषण के माध्यम हैं।

अंतर– भाषा विचार, संप्रेषण का मौखिक रूप है जिसमें ध्वनियां श्रव्य रूप में व्यक्त होती है जबकि लिपि लिखित रूप है उसमें दृश्य रूप है।

79 देश की राजभाषा क्या है ?

उत्तर संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का स्वरूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा।

80 विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किसके द्वारा किया जाता है ?

उत्तर विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन विदेश मंत्रालय द्वारा किया जाता है।

81 राज्यों की राजभाषा बनाने का कार्य किसका है ?

उत्तर भारत के संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 345, 346 और अनुच्छेद 347 में राज्य की राजभाषाओं के संबंध में उल्लेख किया गया है। संघ सरकार का इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं है।

82 उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि के संबंध में प्रयोग की जाने वाली भाषा क्या है ?

उत्तर भारत के संविधान भाग 17 अनुच्छेद 348 और 349 में उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि के संबंध में प्रयोग की जाने वाली भाषा के बारे में जानकारी दी गई है।

83 राजभाषा हिन्दी को लागू करवाने की जिम्मेदारी किसकी है ?

उत्तर संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार इसे केन्द्र सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों के संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में लागू किए जाने का कार्य राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के द्वारा देखा जाता है, जिसे लागू करवाने की जिम्मेदारी इन मंत्रालयों/विभागों/संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख की है।

84 लिपि देवनागरी और हिन्दी का अभिप्राय क्या है ?

उत्तर संघ सरकार की राजभाषा हिन्दी और लिपि (लिखने) के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाएगा तथा अंकों का रूप अन्तर्राष्ट्रीय रूप अर्थात 1,2,3,4,5,6,7,8,9 और 10 होगा ।

85 हर वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस क्यों मनाया जाता है ?

उत्तर हर वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस इसलिए मनाया जाता है क्योंकि 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। अतः केन्द्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों में हिन्दी के कार्यान्वयन एवं प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

वाराणसी राजभाषा सम्मेलन में नराकास करनाल के पदाधिकारी भी शामिल हुए

राजभाषाः हिन्दी और अंग्रेजी का द्वंद्व

सोनी कुमार, प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब एण्ड सिंध बैंक,
आँचलिक कार्यालय, करनाल

भाषा मानव जीवन की लगभग सभी क्रियाओं और व्यवहार का मूलाधार है। यही वह माध्यम है जिसके द्वारा एक मनुष्य दूसरे के प्रति अपने उद्‌गार व्यक्त कर सकता है और दूसरे के उद्‌गारों को समझ सकता है। परंतु एक स्पष्ट संवाद मानव की अपनी मूल भाषा में ही संभव है। आप चाहें तो इस सम्बन्ध में एक व्यवहारिक प्रयोग स्वयं पर करके देख सकते हैं। अभिप्राय यह है कि यदि आप किसी व्यक्ति से उसकी अपनी मूल भाषा में बात न करके किसी दूसरी भाषा जो उसके लिए सुबोध न हो, में बात करेंगे तो वह अपनी बात को पूरी तरह आप तक नहीं पहुँचा सकेगा या असहज महसूस करेगा और आप उसकी भावनाओं को पूरी तरह समझ भी नहीं पाएँगे। दूसरी तरफ यदि आप किसी से उसकी मातृभाषा में बात करते हैं तो वह दिल खोलकर आपसे अपने मन की बात बता पाएगा, क्यों कि अपनी मूल भाषा में अपने विचार प्रकट करना हर व्यक्ति के लिए सरल होता है।

ऊपर इस पूरे संदर्भ में हमने जो भाषा की बात की है। इसे पढ़कर शायद आप मेरा उद्‌देश्य समझ चुके होंगे। हाँ, आप सही सोच रहे हैं– यह हमारे देश में राजभाषा की कुछ ऐसी ही स्थिति की ओर संकेत करता है। आप सभी को सुविदित है कि हमारी राजभाषा हिन्दी है। जिसे 14 सितम्बर, 1949 को देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। राजभाषा अर्थात् राजकार्यों की भाषा। इसके लिए राजभाषा अधिनियम, 1963 एवं राजभाषा नियम, 1976 के अंतर्गत प्रशासनिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रावधान भी किए गए। परंतु वास्तविक स्थिति अभी पूर्ण रूप से हिन्दीमय नहीं है। हालांकि संवैधानिक रूप से राजभाषा का दर्जा हिन्दी को प्राप्त है परंतु इसके बावजूद देश के अनेक हिस्सों के अनेक कार्यों में अभी भी अंग्रेजी अपना पाँव जमाए हुए है। जिसे उखाड़ फेंकने के लिए हिन्दी और हिन्दी–प्रेमी तभी से प्रयासरत रहे हैं जब से हिन्दी को राजभाषा का सम्मान मिला है। दरअसल हिन्दी के राष्ट्रीय या यूँ कहें समग्र विकास के लिए हम भारतीयों के मानसिक रूप से हिन्दी के प्रति पूर्ण लगाव व जुड़ाव की आवश्यकता है।

हिन्दी और अंग्रेजी के द्वंद्व का कारणः

हिन्दी हमारी अपनी भाषा है। आजादी के लिए भारतवासियों ने जो लंबा संघर्ष किया उस दौरान सभी भारतवासी हिन्दी के कारण ही एकजुट हो पाए। तत्कालीन कवियों ने इसके लिए अमूल्य योगदान दिया। इससे पूर्व गौरों के आगमन से लेकर जब तक वे भारत में रहे, उन्होंने अपनी भाषा को व्यवहार व कार्य–व्यापार की भाषा बनाया। उन्होंने लगभग 200 वर्षों तक भारत पर शासन किया। इस दौरान उन्होंने भारत में अपने शासन को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से यहाँ की शिक्षा–प्रणाली में भी अपनी अंग्रेजी भाषा की नींव डाली। परिणाम आपके सामने हैं। वहीं से हिन्दी और अंग्रेजी के इस द्वंद्व की शुरुआत होती है। एक तरफ 'माँ' भारती को आजादी दिलाने वालों की भाषा हिन्दी और दूसरी ओर भारत पर शासन करते हुए अत्याचार करने वालों की भाषा थी। जहाँ गौरों के शासनकाल में राजकार्य अंग्रेजी में चला, वहीं आजादी के बाद की व्यवस्था में राजकार्य के लिए हिन्दी भाषा को अपनाया (राजभाषा अधिनियम, 1963 के अनुसार) गया। वास्तव में इसी अधिनियम की धारा 3 के अनुसार हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किए जाने के भी प्रावधान हैं। आइए! देखें ये प्रावधान क्या हैं:–

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित 1967) की धारा 3 :–

3. संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा का रहना––

(1) संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि की समाप्ति हो जाने पर भी, हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा, नियत दिन से ही,

(क) संघ के उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए जिनके लिए वह उस दिन से ठीक पहले प्रयोग में लाई जाती थी ; तथा

(ख) संसद में कार्य के संव्यवहार के लिए प्रयोग में लाई जाती रह सकेगी :

परंतु संघ और किसी ऐसे राज्य के बीच, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग में लाई जाएगी:

परन्तु यह और कि जहां किसी ऐसे राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है और किसी अन्य राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, बीच पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाया जाता है, वहां हिन्दी में ऐसे पत्रादि के साथ–साथ उसका अनुवाद अंग्रेजी भाषा में भेजा जाएगा :

परन्तु यह और भी कि इस उपधारा की किसी भी बात का यह अर्थ नहीं लगाया जाएगा कि वह किसी ऐसे राज्य को, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संघ के साथ या किसी ऐसे राज्य के साथ, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है, या किसी अन्य राज्य के साथ, उसकी सहमति से, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाने से निवारित करती है, और ऐसे किसी मामले में उस राज्य के साथ पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बाध्यकर न होगा।

(2) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी या अंग्रेजी भाषा––

(i) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और दूसरे मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के बीच;

(ii) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण में किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के बीच;

(iii) केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के और किसी अन्य ऐसे निगम या कम्पनी या कार्यालय के बीच;

प्रयोग में लाई जाती है वहां उस तारीख तक, जब तक पूर्वोक्त संबंधित मंत्रालय, विभाग, कार्यालय या विभाग या कम्पनी का कर्मचारीवृंद हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता, ऐसे पत्रादि का अनुवाद, यथास्थिति अंग्रेजी भाषा या हिन्दी में भी दिया जाएगा।

(3) उपधारा (1)में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही–

(i) संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्ति के लिए, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किए जाते हैं ;

(ii) संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज–पत्रों के लिए ;

(iii) केन्द्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा–प्रारूपों के लिए, प्रयोग में लाई जाएगी।

(4) उपधारा (1)या उपधारा (2) या उपधारा (3) के उपबन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना यह है कि केन्द्रीय सरकार धारा 8 के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा उस भाषा या उन भाषाओं का उपबन्ध कर सकेगी जिसे या जिन्हें संघ के राजकीय प्रयोजन के लिए, जिसके अन्तर्गत किसी मंत्रालय, विभाग, अनुभाग या कार्यालय का कार्यकरण है, प्रयोग में लाया जाना है और ऐसे नियम बनाने में राजकीय कार्य के शीघ्रता और दक्षता के साथ निपटारे का तथा जन साधारण के हितों का सम्यक ध्यान रखा जाएगा और इस प्रकार बनाए गए नियम विशिष्टतया यह सुनिश्चित करेंगे कि जो व्यक्ति संघ के कार्यकलाप के सम्बन्ध में सेवा कर रहे हैं और जो या तो हिन्दी में या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण हैं वे प्रभावी रूप से अपना काम कर सकें और यह भी कि केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं है उनका कोई अहित नहीं होता है।

(5) उपधारा (1)के खंड (क) के उपबन्ध और उपधारा (2), उपधारा (3) और उपधारा (4). के उपबन्ध तब तक प्रवृत्त बने रहेंगे जब तक उनमें वर्णित प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए ऐसे सभी राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा, जिन्होंने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संकल्प पारित नहीं कर दिए जाते और जब तक पूर्वोक्त संकल्पों पर विचार कर लेने के पश्चात् ऐसी समाप्ति के लिए संसद के हर एक सदन द्वारा संकल्प पारित नहीं कर दिया जाता।

इन्हीं प्रावधानों के अंतर्गत प्रशासकीय कार्यों/प्रयोजनों में हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा के प्रयोग के विकल्प के कारण ही हिन्दी और अंग्रेजी के बीच यह संघर्ष शुरु हुआ और आज भी जारी है, अन्यथा अंग्रेजी कब की अपने घर पश्चिम की ओर रुख कर गई होती। खैर, इंतजार बाकी है, जब भारत के प्रशासनिक कार्यों/प्रयोजनों में पूर्णतः हिन्दी प्रयुक्त होगी और अंग्रेजी स्वयं के प्रति भारतीय उदासीनता के चलते घर को लौटती नजर आए।

हिन्दी को इस द्वंद्व में कैसे जिताएं

गौरों को भारत से वापस गए आज 70 वर्ष हो चुके हैं। परंतु आज भी उनकी गहरी भाषिक छाप मेरे ज्यादातर भारतवासियों की जुबान पर अभी भी मौजूद है। मेरे प्यारे भारतवासी ! दुराचार करने वाले उन गौरों की भाषा को बोलते हुए कितना गर्व महसूस करते हैं। आज के अधिकांश अभिभावक भी अपने बच्चों को 'माँ' बोलना नहीं सिखाते। वे उन्हें सिखाते हैं– 'मम्मी' या 'मोम' और 'पिता जी' की बजाय 'डैड' या 'डैडी'। आज अंग्रेजी प्राथमिक विद्यालयों में भी अपने पाँव पसार चुकी है। बच्चें 'अ' से 'अनार' की बजाय 'ए' फॉर 'एप्पल' सीख रहे हैं। जबकि हमारी भाषिक आवश्यकता इसके बिल्कुल विपरीत है। आज का युवा जो लहराती इंग्लिश में बात करने में अपनी शान समझता है। दरअसल, वह इसी की देन है कि अंग्रेजी में बात करना उनकी शान से जुड़ गया है। यहाँ युवाओं के सम्बोधन में एक सवाल– क्या बोल–चाल, कार्य–व्यवहार या कार्यालयी काम–काज हिन्दी भाषा में करने पर वो सुकून नहीं मिलता जो अंग्रेजी में करने से मिलता है। जो भी भारतीय युवा इसे पढ़े, इस बात पर तनिक विचार करें। यकीनन आपका मन खुद–ब–खुद जवाब देगा और हिन्दी को सलाम करेगा। यदि हम अंग्रेजी के प्रयोग को वास्तव में कम करना चाहते हैं और अपनी हिन्दी को उसका वर्चस्व दिलाना चाहते हैं तो प्राथमिक स्तर से ही पूर्णतया हिन्दी माध्यम या हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही माध्यम में शिक्षा को अपनाने/अनिवार्य किए जाने की आवश्यकता है। एक और बात जो हम सभी हिन्दी–प्रेमियों और राष्ट्र का विकास चाहने वाले हर बुद्धिजीवी को समझनी होगी कि हमारे देश का सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक विकास देश के युवा कंधों पर ही निर्भर करता है। इसी तरह भाषिक विकास के लिए भी इन युवाओं की ही आवश्यकता है। यदि हम इन युवाओं का पूर्ण झुकाव हिन्दी के प्रति कर पाने में सफल हो जाते हैं तो हिन्दी को राष्ट्रव्यापी या देश को हिन्दीमय करने का हमारा उद्देश्य स्वतः सिद्ध हो जाएगा। हिन्दी को राष्ट्रव्यापी बनाने का अभिप्राय यह नहीं है कि आप अपनी अंतर्राष्ट्रीय आवश्यकता को अनदेखा करें। यदि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी की आवश्यकता है तो उसे अवश्य सीखें लेकिन अपनी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी को प्राथमिक सम्मान जरूर दें अर्थात् हिन्दी में भी अपनी अच्छी पकड़ जरूर बनाएँ क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रभाषा ही किसी राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है। ऐसा भी संभव है कि

जिस अंतर्राष्ट्रीय स्तर की आवश्यकता को देखते हुए आप अंग्रेजी को सीख रहें है उसी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी कारणवश अपनी भाषा का अच्छा ज्ञान न होने के कारण आपको अपनी नजरें झुकानी पड़ें। दोनों की महत्ता को समझने का प्रयास करें तथा इस पर एक बार सूक्ष्म नहीं तो थोड़ा भी विचार करेंगे तो आपके मन में उठेंगे, वे आपको अंदर से विचलित कर देंगे और यदि फिर आप धैर्यपूर्वक सोचेंगे तो इन सवालों के जवाब आपको स्वयं ही मिल जाएंगे। जिस दिन आपने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही भाषाओं के अंतर और महत्व को समझ लिया तो मेरा लिखने का उद्देश्य भी पूरा हो जाएगा यानि आप अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करेंगे और उस पर गर्व करते हुए उसे अपनाएंगे।

वर्तमान स्थिति :–

हिन्दी और अंग्रेजी के इस बरसों पुराने द्वंद्व में हिन्दी अडिग बनी हुई है। सकारात्मक पक्ष यह है कि थोड़ा ही सही लेकिन हिन्दी का कुछ तो विकास हुआ है। अब हिन्दी समग्र उत्तर भारत पर अपनी चादर ओढ़ाए दक्षिण की ओर अपना रुख कर चुकी है। सिनेमा के साथ–साथ मीडिया ने इस दिशा में काफी महत्व पूर्ण योगदान दिया है। जिसके चलते अनेक कंपनियाँ भी अपने विज्ञापन हिन्दी में जारी करने लगी हैं। जिससे हिन्दी का प्रयोग काफी बढ़ा है। मीडिया के इस अतुलनीय योगदान के बाद अब आवश्यकता है तो हम सबके स्वयं आगे आने की, कि हम सभी बिना हिचक इस दिशा में अपना कदम बढ़ाएं और हिन्दी में काम करते हुए गर्व महसूस करें। क्योंकि निज भाषा के निःसंकोच प्रयोग से–

मान बढ़ेगा, शान बढ़ेगी,
दुनिया में पहचान बनेगी,

इस संदर्भ में 'चीन' का उदाहरण काफी होगा। अतः इस दिशा में– एक आह्वान..........! हर उस भारतीय से, जो 'भारतवर्ष' से प्यार करता है।

नराकास करनाल के उल्लेखनीय कार्य

- सदस्य कार्यालयों को राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतु मार्गदर्शन
- नराकास करनाल के समस्त कार्यालयों के डाटाबेस को अद्यतन रखना
- समिति के पत्राचार को कागजन्यून से कागजविहीन(लेस पेपर से पेपरलेस) करना
- समय–समय पर विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं का आयोजन
- समय–समय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन
- उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों का राजभाषा शील्ड व ट्राफी से सम्मान
- उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालय प्रधानों का प्रशस्ति–पत्र से सम्मान
- उत्कृष्ट कार्य करने वाले राजभाषा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशस्ति–पत्र से सम्मान
- सदस्य कार्यालयों से कैशलैस तरीके से अंशदान प्राप्त करना
- समिति के वित्तीय अभिलेखों की समय पर लेखा परीक्षा
- समिति की पत्रिका का समय पर प्रकाशन
- छमाही बैठकों में सदस्य कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों की प्रतिभागिता की समीक्षा
- प्रशासनिक प्रधानों के स्टेशन से बाहर रहने पर अगले वरिष्ठतम अधिकारी द्वारा प्रतिभागिता की समीक्षा
- राजभाषा विभाग, गृह–मंत्रालय को ऑनलाइन रिपोर्ट / सूचनाओं का प्रेषण

सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का कार्यान्वयन और हिन्दी व क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका

भाषा किसी भी मानव समाज के लिए एक सहज व्यवस्था है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान प्रदान करता है। अपनी बात कहने के लिए और दूसरे की बात समझने के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है। भारत बहुभाषी देश है। यहाँ अनेक भाषाएं प्रचलित है। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं के लिए प्रावधान किए गए हैं। आठवीं अनुसूची में हिन्दी के साथ असमिया, बंगाली, ओड़िया, नेपाली, कश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम, उर्दू, संस्कृत, सिन्धी, कोंकणी, मणिपुरी, बोडो, डोगरी, संथाली, मैथिली 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है। भाषाएं आज तकनीकी, व्यापारिक और सामाजिक विकास का माध्यम भी है, जिसके परिणामस्वरूप बैंकिंग कारोबार में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए गरीबी व बेरोजगारी आज भी मुख्य मुद्दे हैं। इन मुद्दों का समाधान किए बिना वास्तविक अर्थों में विकास करना संभव नहीं है। विभिन्न योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवनज्योति बीमा योजना जिनमें मात्र 12 रुपये एवं 330 रुपये में बीमा कवर होता है या अटल पेंशन योजना जो असंगठित क्षेत्र के कामगारों को सुरक्षा प्रदान करती है। जनधन योजना हो या मुद्रा योजना अथवा बैंकों द्वारा सामाजिक विकास एवं सुरक्षा के लिए संचालित की जा रही अन्य कोई योजना, जागरुकता और ज्ञान के अभाव में अपनी पूर्णता या कहें अंतिम पायदान के व्यक्ति तक नहीं पँहुच सकती है। आमजन तक यदि इन योजनाओं को पँहुचाना है तो हमें इन योजनाओं को आमजन की भाषा में ही प्रस्तुत करना होगा। इसके लिए हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाएं अथवा उस वर्ग की भाषा महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। हिन्दी एवं स्थानीय भाषा में जागरुकता कार्यक्रम, मार्केटिंग और शिक्षण–प्रशिक्षण को प्रभावी बनाकर इन योजनाओं का प्रचार प्रसार किया जा सकता है। लोगों को उनकी भाषा में ही सजग करने के लिए जगरुकता कार्यक्रमों को ग्राम पंचायतों से भी जोड़ने की आवश्यकता है। इस तरह हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से आम नागरिकों एवं वंचितों को योजनाओं का लाभ प्रदान कर समाजिक एवं वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर विकासोन्मुख एवं आर्थिक उत्थान किया जा सकता है।

तरुण शर्मा
राजभाषा अधिकारी
केनरा बैंक, अँचल कार्यालय, करनाल

आज की बैंकिंग सेवाएँ और समाज

आज के सामाजिक जीवन में बैंकों का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। पहले लोग बैंकिंग क्षेत्र से ज्यादा अवगत नहीं थे और बैंकों की संख्या भी ज्यादा नहीं थी इसलिए समाज का हर तब का इससे जुड़ा हुआ नहीं था। परन्तु वर्तमान में बैंकों के प्रति सामाजिक जागरूकता बढ़ी है एवं बैंकों ने नई–नई तकनीकों को आम लोगों की सुविधा के लिए मुहैया करवाया है। इस तरह समाज का हर भाग बैंकों से जुड़ रहा है। निम्न आय, मध्यम आय एवं उच्च आय रखने वाला हर परिवार किसी न किसी रूप में बैंक से जुड़ रहा है चाहे उन्हें विभिन्न प्रकार के ऋण की सुविधा प्राप्त करनी हो या सरकारी अनुदान ग्रहण करना हो। जरूरत मंद और योग्य छात्र भी अपनी स्कोलरशिप बैंक के माध्यम से ही ग्रहण करने लगे हैं।

ए टी एम, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, ई–बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग इत्यादि के इस्तेमाल से बैंकिंग और भी अधिक आसान हो गई है। वर्तमान में बैंक की तरफ से अनेक प्रकार की सुविधाएं ग्राहकों को दी जा रही हैं। इन सुविधाओं के कारण आम आदमी अपने सपनों को पूरा कर पा रहा है। हमारी युवा पीढ़ी जहां शिक्षा ऋण से अपने सपने पूरे कर रही है, वहीं गृह ऋण, वाहन एवं अन्य ऋणों के द्वारा आम आदमी अपना भविष्य सुरक्षित कर रहा है।

बैंकों के द्वारा प्रधानमंत्री जन–धन योजना, मुद्रा योजना में किए गए उत्कृष्ट प्रदर्शन से तो सभी वाकिफ हैं। प्रधानमंत्री जन–धन योजना ने समस्त भारत वर्ष को बैंकिंग नेटवर्क में जोड़कर समस्त विश्व के सामने एक बेहतरीन उदाहरण पेश किया है वहीं प्रधानमंत्री मुद्रा योजना ने करोड़ों लोगो को स्व रोजगार प्रदान कर देश की प्रगति की रफ्तार को तीव्र किया है।

जहां हम बैंकों द्वारा प्रदान की जा रही आम आदमी के लिए सहूलियतों को देखते हैं, वहीं हमें बैंक कर्मचारियों के कार्यों की भी सराहना करनी चाहिए। गाँव– गाँव में बैंकों के खुलने और वहाँ के कठिन परिवेश में भी कर्मचारियों द्वारा लगन से किए गए कार्यों से बैंक और देश का विकास हो रहा है।

चूंकि वित्त के बिना व्यवस्था संभव नहीं है अतः यह कहा जा सकता है कि आज बैंक और बैंकिंग क्षेत्र के बिना समाज की कल्पना करना कठिन है और भविष्य में बैंकों के इस सराहनीय प्रदर्शन से आम आदमी और देश का सर्वांगीण विकास होता रहेगा, इसमें संदेह नहीं।

संजीव कुमार (प्रबन्धक, राजभाषा)
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे.का. करनाल

राजभाषा : दशा और दिशा

डा. चित्रनायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डेरी अभियांत्रिकी विभाग
भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल–132001
ईमेल आईडी: chitranayaksinha@gmail-com

10 जनवरी, 2017, विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आई रिपोर्ट के अनुसार देश की राजभाषा हिन्दी ने नम्बर एक के सिंहासन से चीनी भाषा मंदारिन को हटा दिया है। इसके साथ ही साथ राजभाषा हिन्दी–दशा के अंतर्गत छपी रिपोर्ट के अनुसार यह तथ्य निकल कर आया, कि "2015 के आकड़ों के अनुसार हिन्दी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है"–यह हिन्दी के सुनहरे काल की दशा को दर्शाता है। साथ ही यह कहना बिल्कुल भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि देश में राजभाषा हिन्दी अपने स्वर्णिम काल से गुजर रही है। वर्तमान समय में पूरे विश्व में लगभग एक अरब तीस करोड़ लोग हिन्दी बोल रहे हैं, जो सर्वाधिक है। आज भारत एक तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था बन चुकी है व यहाँ के युवा पेशेवर व टेक्नोक्रैट दुनिया के सभी देशों में पहुँच रहे हैं। वे पूरे विश्व में हिन्दी का विस्तार कर रहे हैं। साथ ही साथ दुनिया भर की बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में निवेश हेतु आ रही हैं, इसलिए एक तरफ हिन्दी भाषी दुनिया में फैल रही है तो दूसरी तरफ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपना व्यवसाय चलाने व बढाने हेतु अपने कर्मचारियों को हिन्दी सिखानी पड़ रही है। सुखद आश्चर्य की बात है कि तेजी से हिन्दी सीखने वाले देशों में चीन प्रथम स्थान पर है, जहाँ बीस विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। भारत में 78 प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते हैं। 'राजभाषा हिन्दी' ने पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य बखूबी निभाया है। देश का कोई भी भाग हो उत्तर से दक्षिण या पूरब से पश्चिम, वहाँ विचारों की अनुभूति हिन्दी के माध्यम से पूर्णतः संभव है। देश में क्षेत्र 'ग' के लोग प्रायः वहाँ की क्षेत्रीय भाषा में ही मुख्यतः बात करते हैं, लेकिन वहाँ भी उस क्षेत्र की मातृभाषा के अलावे सिर्फ हिन्दी ही अकेली ऐसी भाषा है जिसमें सफलतापूर्वक विचारों को व्यक्त किया जा सकता है। हिन्दी भाषा को पूरे देशवासियों ने अपने में आत्मसात किया है। हम पूरे देश में कहीं भी जाएँ, उत्तर में जम्मू–कश्मीर, लेह–लद्दाख से लेकर दक्षिण में मैसूर, बैंगलोर, कन्याकुमारी तक, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप या फिर उत्तर–पूर्व के राज्यों आसाम, मणिपुर, त्रिपुरा, सिक्किम इत्यादि से लेकर पश्चिम के गुजरात–राजस्थान तक कहीं भी, किसी भी भाग में अगर हम हिन्दी बोल व समझ सकते हैं तो हमें किसी भी भाग में घूमने–फिरने, आने–जाने, ठहरने, खाने–पीने या कोई सामान खरीदने में कोई परेशानी बिल्कुल भी नहीं होती है। सम्पूर्ण भारत में हिन्दी पूरे देश व देशवासियों को एक धागे में पिरोने का काम बखूबी कर रही है। लता मंगेशकर जी के गाये मधुर हिन्दी गीतों के शौकीन व चाहने वाले देश के हर कोने में भरे पड़े हैं। ठीक उसी प्रकार अभिनय–सम्राट दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन आदि अभिनीत यादगार हिन्दी फिल्मों के दीवाने भी देश के हर कोने कोने में मौजूद हैं। टीवी पर हिन्दी सीरियल जैसे महाभारत, रामायण आदि ने तो देश के हर कोने में अपनी सर्वश्रेष्ठता प्रदर्शित की ही थी। साथ ही विज्ञापन की दुनिया हो, टीवी पर समाचार या हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं की बात हो, हिन्दी ने देश के हर कोने में अपना स्थान सर्वोपरि ही रखा है। क्षेत्रीय भाषाओं के साथ–साथ हिन्दी को पूरे देश में एक बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

राजभाषा हिन्दी– राजभाषा की दिशा के अंतर्गत एक बात तो पूरी तरह से सत्य है कि पूरे भारत देश को अगर एक भाषा के आधार पर संबोधित किया जाये तो वह हिन्दी ही हो सकती है और हिन्दी को देश में राष्ट्रभाषा का दर्जा भी अवश्य मिलना चाहिए। देश में सबसे योग्य व आम व्यक्ति जब एक तथाकथित एलिट क्लास के लोगों को टीवी में अंग्रेजी में बोलते देखता है तो उसके अन्दर कुंठा की भावना पैदा होती है और वो इंग्लिश मीडियम व स्पोकन इंग्लिश के पीछे भागता है। वो अपने बच्चों को इंग्लिश मीडियम के स्कूल में ही पढ़ाना चाहता है। आम धारणा यही बनती जा रही है कि तथाकथित हाई सोसाइटी का हिस्सा बनना है तो हिन्दी छोड़ सिर्फ अंग्रेजी में बातचीत की जाए। लेकिन यह धारणा एक भ्रम मात्र ही है। अंग्रेजी ही सभ्य व विकसित होने की पहचान है, इस दकियानूसी मानसिकता से हम सबों को बाहर निकलना होगा। देश में अभी भी संविधान, विधि शिक्षा, चिकित्सा व मेडिकल शिक्षा, इंजीनियरिंग आदि क्षेत्रों में हिन्दी का घोर अभाव है, जिसे सही दिशा में आगे बढ़ाना है। आज देश के प्रधानमंत्री पूरे विश्व में अपना भाषण गर्वपूर्वक हिन्दी में ही देते हैं और इससे पूरे देशवासियों व हिन्दी का सम्मान पूरे विश्व में बढ़ता ही जा रहा है। उन्होंने पूरे देश व देशवासियों को एकरूपी धागों में पिरोने हेतु राजभाषा हिन्दी का विस्तार किया है और हिन्दी को पूरे देश के साथ–साथ पूरे विश्व में भी फैलाया है। भाषा हमारे विचारों, भावों, अनुभूतियों आदि को संप्रेषित करने का एक माध्यम होता है और यह क्षमता ईश्वर ने सिर्फ मनुष्यों को प्रदान की है। भाषा के माध्यम से ही एक मनुष्य अपनी भावना, विचार और अनुभूति दूसरे मनुष्य के समक्ष रख पाता है और इस प्रकार पूरी मानव जाति का विकास हर दिशा में संभव हो पाता है। अतः सम्पूर्ण देश व देशवासियों के सर्वांगीण विकास हेतु यह आवश्यक है कि हम पूरे देश में क्षेत्रीय भाषाओं के साथ–साथ हिन्दी का भी विस्तार करें व विकसित देशों की श्रेणी में खड़े हों। पूरे विश्व में हमारी पहचान हिन्दी से ही होती है और हमें इस बात पर गर्वान्वित होना चाहिए। भाषा के द्वारा हम अपने सर्वश्रेष्ठ संस्कारों व विचारों को व्यक्त करने में सक्षम होते हैं और अगर ये अपनी मातृभाषा में हो तो ये सर्वोत्तम है।

सकारात्मक दृष्टिकोण

एक 6 वर्ष का लड़का अपनी 4 वर्ष की बहन के साथ बाजार से जा रहा था। चलते–चलते उसने देखा कि उसकी बहन पीछे रह गई है। मुड़कर देखने पर पता चला कि उसकी बहन एक खिलौने की दुकान के आगे खड़ी होकर खिलौनों को एकटक देख रही है। वह उसके पास गया और बोला '' तुझे कुछ चाहिए क्या?'' तो उसकी बहन ने एक सुंदर–सी गुड़िया की तरफ अँगुली कर दी। तब उस बच्चे ने एक बड़े भाई की तरह वह गुड़िया लेकर अपनी बहन को दे दी। गुड़िया लेकर उसकी बहन बहुत खुश हुई। अब इस सारी घटना को उस दुकान का मालिक बड़े ही आश्चर्य के साथ देख रहा था। उसे यह सब देख बड़ी हैरानी हुई। वह बच्चा दुकानदार के पास जाकर बोला ''यह गुड़िया कितने की है?'' तब दुकानदार ने बड़े ही प्यार से कहा ''बेटा! आप क्या दे सकते हो?'' तक बालक ने अपनी जेब से अपनी वो सीपियाँ निकाली जो उसने समुद्र के किनारे से बिनी थीं। और गिन–गिनकर दुकानदार को देने लगा। दुकानदार ने बड़े ही प्यार से वो सीपियाँ ले ली। फिर बालक बोला ''कम हैं या कुछ और चाहिए?'' दुकानदार बड़े स्नेह से बोला'' नहीं–नहीं बेटा! ये तो बहुत ज्यादा हैं। ज्यादा आपको वापिस दे देता हूँ।'' 4 सीपियाँ लेकर बाकी सीपियाँ उसने बच्चे को वापिस दे दी, बच्चा और उसकी बहन गुड़िया लेकर अपने रास्ते पर खुशी–2 आगे बढ़ गये। अब ये पूरा घटनाक्रम दुकानदार का नौकर बड़े ही आश्चर्य से देख रहा था। बच्चों के जाने के बाद नौकर बोला ''मालिक! आपने इतनी महंगी गुड़िया उन बच्चों को सिर्फ चार सीपियों के बदले में दे दी?'' दुकानदार बहुत ही गंभीर और संतुष्टि वाली मुस्कान के साथ बोला, ''मैंने अपने जीवन में न जाने कितने उतार–चढ़ाव देखे हैं। आज इन सीपियों के बदले वह गुड़िया देकर मैं बता नहीं सकता, मुझे कितनी खुशी हुई है। उस बच्चे को आज पता ही नहीं है कि पैसा क्या होता है? उसके लिए उसकी सीपियों ही सबसे मूल्यवान थीं। और उस गुड़िया को खरीदने के लिए वह अपनी सबसे मूल्यवान वस्तु को भी देने के लिए तैयार हो गया था। और जब वह बालक बड़ा होगा ना........ तब उसे पैसे के महत्व का पता चलेगा। तब उसे ध्यान आयेगा कि उसने कभी अपनी बहन के लिए 4 सीपियों के बदले में गुड़िया खरीदी थीं। और तब उसे मेरी याद आयेगी। मुझे याद करते हुये उसे यह समझ आ जायेगा कि इस दुनिया में अच्छे लोगों की भी कमी नहीं है। और इस तरह वह भी एक अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित होगा। बात सिर्फ हमारे दृष्टिकोण की है। हम जैसा अपना दृष्टिकोण रखेंगे, वैसा ही हम दूसरों के विषय में सोचेंगे। आज मेरे द्वारा दी गई वह गुड़िया आने वाले समय में उस बच्चे को भी एक सकारात्मक दृष्टिकोण वाला इंसान बनायेगी और वह भी शायद ऐसे ही दूसरों के जीवन में भरकर उनको भी एक उत्तम व्यक्तित्व का इसांन बनने के लिए प्रेरित कर सके।......... बस यही जीवन है।'' इस प्रकार हम भी अपने जीवन में उत्तम दृष्टिकोण को अपनाकर न केवल किसी के जीवन में खुशियां भरकर उसके जीवन को बदल सकते हैं, बल्कि समाज में भी एक सार्थक परिवर्तन ला सकते हैं।

पंकज सिंह,
केन्द्रीय विद्यालय, करनाल

''सफलता के लिए जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक सोच बहुत जरूरी है''

"क्षमा बड़न को चाहिए"

राकेश कुमार कुशवाहा, (भूतपूर्व निरीक्षक)
एम.ए.(हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत), पी.जी.डी.टी.
सहायक निदेशक(राजभाषा),
भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल
ईमेल rakeshkumar19782014@gmail.com

मैंने अपनी व्यक्तिगत डायरी में "क्षमा" पर जितनी पंक्तियाँ संग्रहित कर लिखी हैं, उनमें रहीम दास जी की निम्नलिखित पंक्तियाँ मुझे बहुत अच्छी लगती हैं :–

"क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात,
का रहीम हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात"

रहीमदास जी की उपरोक्त सुंदर पंक्तियाँ में यह संदेश निहित है कि बड़ों को अपने से छोटों को उनकी भूल और गलतियों के लिए क्षमा कर देना चाहिए। महर्षि भृगु के पद–प्रहार से भगवान विष्णु का मान सम्मान कम नहीं हो गया था।

हमें कई अवसरों पर आशानुरूप काम पूरा न होने पर अपने से छोटों, बच्चों, सहकर्मियों आदि पर क्रोध आ जाता है। क्रोधवश आवेश में आकर हम उन्हें अनर्गल अर्थरहित शब्द भी कह जाते हैं। इससे उनका मनोबल तो कम होता ही है, साथ ही हमारा अन्तर्मन भी अस्थिर और खिन्न हो जाता है। कई अवसरों पर हमें बाद में इस बात का पश्चात्ताप भी होता है कि हमने गुस्से में अपने से छोटों का कुछ ज्यादा अपमान भी कर दिया और यदि हम चाहते तो हम उन्हें समझाकर स्थिति को अनुकूल कर सकते थे। यह भी कह सकते हैं कि क्रोध में अपना और सामने वाले का नुकसान करने के बाद हमें क्षमा का महत्व समझ में आता है। क्षमा का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। यदि हम अपनी भूल या गलती के लिए क्षमा मांग लेते हैं या सामने वाले को क्षमा कर देते हैं तो दोनों पक्षों का क्रोध और तनाव कम हो जाता है। कवि रामधारी सिंह दिनकर ने भी अपनी कविता "शक्ति और क्षमा" में उल्लेख किया है कि क्षमा वीरों को ही सुहाती है–

"क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल है,
उसका क्या जो दंतहीन विषहीन विनीत सरल है।"

कविवर रामधारी सिंह दिनकर ने क्षमा के साथ सहनशीलता और दया के महत्व को भी अपनी कविता "शक्ति और क्षमा को रेखांकित किया है–

"सहनशीलता क्षमा दया को तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है।"

शायद ही कोई धर्म–संप्रदाय हो जिसमें क्षमा और सहनशीलता के महत्व को स्वीकार न किया गया हो। हिन्दू धर्म में मनु ने धर्म के दस लक्षणों–धैर्य, क्षमा, दम(संयम), अस्तेय(चोरी न करना), शौच(अन्तः–बाह्य शुद्धि), इन्द्रिय निग्रह, धी(सत्कर्म से बुद्धि को बढ़ाना), विद्या(यथार्थ ज्ञान), सत्यम(हमेशा सत्य का आचरण करना), अक्रोध(क्रोध को छोड़कर हमेशा शांत रहना) आदि में "क्षमा" को दूसरे सबसे महत्वपूर्ण लक्षणों में शामिल किया है। महाभारत के रचयिता वेदव्यास ने यह कहा है कि "जिसने पहले कभी तुम्हारा उपकार किया हो, उससे यदि कोई भारी अपराध हो जाए तो भी पहले के उपकार का स्मरण करके उस अपराधी के अपरोध को क्षमा कर देना चाहिए।" जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी को उनके तप–ध्यान के दौरान संगम नामक ग्वाले ने उसके बैलों का चोर समझकर उनके कान में कील ठोकने का दुःसाहस किया, किन्तु महावीर स्वामी ने उसे क्षमा कर दिया था। जैन धर्मावलंबियों द्वारा पर्युषण पर्व के अंतिम दिन को "क्षमावणी" या "क्षमा दिवस" के रूप में मनाया जाता है। आत्ममंथन के इस पर्व में यह संकल्प लिया जाता है कि किसी जीव मात्र को कोई कष्ट नहीं पहुँचायेंगे। इस पर्व के अंत में "मिच्छामि दुखड़म" की घोषणा की जाती है अर्थात् "यदि मेरे द्वारा किसी भी जीव–जन्तु, जीवित–मृत को मेरे किसी भी कार्य से जाने–अनजाने में दुख पहुँचा हो तो मैं क्षमा याचना करता हूँ। जैन धर्म के अनुसार क्षमा ही अहिंसा है। इस्लाम धर्म में भी खुदा को "अलगफूर" अर्थात् "सब कुछ माफ करने वाला" बताया गया है। कुरान में यह उल्लेख है कि "जो क्षमा करता है और बीती बातों को भूल जाता है, उसे ईश्वर की ओर से पुरस्कार मिलता है। पैगम्बर हजरत मोहम्मद द्वारा उन पर हर दिन कूड़ा फेंकने वाली बुजुर्ग महिला को क्षमा कर देना भी उनकी क्षमाशीलता की मिसाल है। कुरान शरीफ में भी लिखा है कि "जो वक्त पर धैर्य रखे और क्षमा कर दे, तो निश्चय ही यह बड़े साहस के कामों में से एक है। कुरान में यह भी कहा गया है कि सच्चे दिल से माफी मांगने वाले को अल्लाह माफ कर देता है। बाइबल भी हमें क्षमा करने के लिए प्रेरित करती है। बाइबल में जीसस अपने हत्यारों के लिए ईश्वर से कहते हैं, " हे परमपिता, उन्हें क्षमा कर दो क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।" यहूदियों की पुस्तक तोरा में तीन बार क्षमा माँगने वाले को माफ करने को कहा गया है। मार्क ट्वेन ने कहा है कि क्षमा उस फूल की तरह है जो उसे कुचलने वाले को भी खुशबू देता है। बौद्ध धर्म में क्षमा को साधना का अनिवार्य अंग माना गया है। इससे बुराइयाँ साधक से दूर रहती हैं। गुरू नानक जी ने अपने उपदेश में यह कहा है, "सदैव प्रसन्न रहना चाहिए और ईश्वर से सदैव अपने लिए क्षमा मांगनी चाहिए। सिख गुरू गोविंद सिंह जी एक जगह कहते हैं, "यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करता है तो उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना वीरों का काम है।" स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि "तमाम बुराई के बाद भी हम अपने आपको प्यार करना नहीं छोड़ते तो फिर दूसरे में कोई बात नापसंद होने पर भी उससे प्यार क्यों नहीं कर सकते।

उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर यदि हम अपने जीवन में क्षमा और सहनशीलता को अपनाते हैं तो अपने हमारे चारों ओर एक सकारात्मक और अनुकूल वातावरण स्वतः तैयार हो जाएगा और हमें जीवन जीने में आनंद की अनुभूति होने लगेगी।

गलतियां हमेशा क्षमा की जा सकती हैं,
यदि आपके पास उन्हें स्वीकारने का साहस हो।

जिंदगी के खिलाड़ी

वो जो हुनर रखते हैं,
जिंदगी को एक नए अंदाज में जीने का,
वो जो हौसला रखते हैं,
हर मुश्किल को एक अवसर में बदलने का,
तमन्ना जो रखते हैं दिल में,
हर पल को जीने की,
जिंदगी सलाम उन्हीं को करती है,
जो चाह रखते हैं बुलंदियों को छूने की।।

हर ज़िल्लत एक एहसास कराती है,
फिर चुनौती भी अवसर बन जाती है।
पर रुकते नहीं वो तूफानों में भी,
जो लहरों के विपरीत तैरने का माद्दा रखते हैं।
वो गहराईयों से घबराया नहीं करते,
जो उड़ान आसमानों की भरते हैं।।

वो जो संघर्षों से खेलते हैं,
उनकी हर कोशिश एक नई ईबारत लिखती है।
हर मुश्किल कहती है उनको,
सुलझने की मैं तुमसे ही उम्मीद रखती हूँ।
वो जो हार नहीं मानते,
सफलता भी उनके कदम चूमने को बेकरार रहती है।
ऐसे होते हैं वो जिंदगी के खिलाड़ी,
जिनकी एक झलक की, हर किसी को दरकार होती है।

'डेहरिया' जो झुकते नहीं,
परिस्थितियों के आगे भी,
वो जो गमों की बिसात पर,
दु:खों से खेलते हैं,

खिलाड़ी वही हैं।
हर बाजी पर दाँव जो,
जिंदगी का खेलते हैं,
खिलाड़ी जिंदगी के वही हैं।।

–सोनी कुमार,
प्रबंधक(राजभाषा),
पंजाब एण्ड सिंध बैंक,
आँचलिक कार्यालय– करनाल,

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

नराकास, करनाल द्वारा दिनाँक 18.7.2017 को संपन्न 'हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता' का प्रश्न-पत्र

नोट : प्रतिभागियों को निम्नलिखित शब्द तीन बार श्रुतलेखन के लिए दुहराए गए– पूर्णांक : 50

क.सं0	शब्द	क.सं0	शब्द
1	एतद्द्वारा	26	अनुस्मारक
2	सुनिश्चित	27	साक्षात्कार
3	सहानुभूति	28	प्रौद्योगिकी
4	सांविधिक	29	हस्तांतरण
5	प्रसंस्करण	30	सम्प्रेषण
6	उपस्थिति	31	पर्यावरण
7	प्रस्तुतीकरण	32	सशक्तिकरण
8	श्रीमती	33	प्रयोजनमूलक
9	व्यक्तित्व	34	पुनर्वर्गीकरण
10	शृंगार	35	अनुमोदनार्थ
11	गरिमामयी	36	जीविकोपार्जन
12	सार्वभौमिकता	37	कार्रवाई
13	अनधिकृत	38	यथाप्रस्तावित
14	आगंतुक	39	प्राधिकृत
15	स्थानान्तरण	40	सत्यापन
16	कालावधि	41	अनुकम्पा
17	पुनरीक्षण	42	पारितोषिक
18	वैयक्तिक	43	गौरवान्वित
19	अनापत्ति प्रमाण–पत्र / प्रमाण–पत्र	44	पदार्पण
20	कार्यान्वयन	45	गुरूत्वाकर्षण
21	पारिश्रमिक	46	सर्वोत्कृष्ट
22	परिप्रेक्ष्य	47	अविस्मरणीय
23	प्रतिष्ठित	48	आशीर्वाद
24	तत्वावधान	49	रिपोर्ट
25	विचाराधीन पत्र	50	अंतरराष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय

नराकास, करनाल द्वारा 12.10.2017 को संपन्न हिन्दी शब्दावली (शब्द-ज्ञान) प्रतियोगिता

उत्तर-पत्रक

परीक्षार्थी का पंजीकृत रोल नंबर : ....
(इस उत्तर-पत्रक में कहीं पर भी अपना नाम न लिखें और न ही हस्ताक्षर करें)

मातृभाषा : ....
(गैर हिन्दीभाषी प्रतिभागियों को प्राप्तांक के 20 प्रतिशत बोनस अंक देय हैं)

अनुदेश

1.1. नीचे दिए गए अंग्रेजी भाब्दों के समानार्थी हिन्दी शब्द लिखिए।
2.2. शब्दों को लिखते समय वर्तनी का विशेष रूप से ध्यान रखें।
3.3. पूर्णांक : 50 अंक, प्रत्येक शब्द के लिए 1 अंक निर्धारित है।

क.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी समानार्थी	क.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी समानार्थी
1	Acceptance	स्वीकार्यता, स्वीकृति, प्रतिग्रहण, स्वीकार्य, मंजूरी	26	Reminder	अनुस्मारक, स्मरण-पत्र, तकाजा
2	Versus	बनाम, विरूद्ध	27	Privilege	विशेषाधिकार, सुअवसर
3	Good faith	सद्भाव, सदाशय, नेकनीयत	28	Modification	आशोधन, रूपांतरण, तरमीम
4	Public Interest	लोक / जन / सार्वजनिक हित, जनता की भलाई	29	Hereby	एतद्द्वारा, इस माध्यम से
5	Parliament	संसद	30	Monitoring	अनुवीक्षण, मानीटरन, मोनीटरिंग, निगरानी
6	Circumstantial	पारिस्थितिक,परिस्थितिजन्य, संयोग, हालाती, हालातीय	31	Entrepreneur	उद्यमी , उद्यमकर्ता
7	Evidence	साक्ष्य, प्रमाण, गवाह, गवाही, सबूत	32	Empowerment	सशक्तिकरण, सामर्थ्यकरण, सामर्थ्य
8	Presentation	प्रस्तुतीकरण	33	Result oriented	परिणामोन्मुखी, परिणाम-उन्मुखी, परिणामपरक
9	Applicant	आवेदक, प्रार्थी, आवेदनकर्ता	34	In fact	वस्तुतः, वास्तव में
10	Untouchability	अस्पृश्यता, छुआछूत	35	Autonomous	स्वायत्तशासी, स्वायत्त

लगातार जारी ....शब्दावली (शब्द-ज्ञान) प्रतियोगिता का उत्तर-पत्र

11	Globalization	वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण	36	Genuine	जायज, जरूरी, वास्तविक, असली, खरा, शुद्ध
12	Sub-Committee	उप-समिति	37	Representation	अभ्यावेदन, प्रतिनिधित्व
13	Unauthorized	अनधिकृत, अप्राधिकृत, गैर अधिकृत	38	Pros and Cons	पक्ष-विपक्ष, आगे-पीछे, सभी पहलू
14	Mandatory	आज्ञापक, अनिवार्य, अधिदेशात्मक, अत्यावश्यक, बाध्यतः	39	Modus Operandi	कार्य-प्रणाली, कार्य करने का तरीका, कार्य-विधि
15	Settlement	बंदोबस्त, बन्दोबस्त, निपटारा, समझौता, समाधान, राजीनामा, रजामंदी	40	Full and Final	पूरा और अंतिम, पूर्ण, अनंतिम, समावेशी
16	Statistics	सांख्यिकी	41	Appreciation	प्रशंसा, प्रशस्ति, तारीफ, सराहना
17	Write off	बट्टे खाते में डालना	42	Filmsy Grounds	सारहीन आधार/कारण, बेतुका आधार/कारण
18	Youth training	युवा प्रशिक्षण	43	Ex-parte	एकतरफा, एक-तरफा
19	Eye witness	चश्मदीद गवाह, साक्षी, प्रत्यक्षदर्शी	44	Discretionary Power	विवेकाधिकार, स्वेच्छानिर्णय शक्ति, स्वविवेकी शक्ति, स्वैच्छिक शक्ति, विवेकाधीन शक्तियाँ
20	Zonal	आँचलिक, आंचलिक, अंचल	45	Proficient	निपुण, प्रवीण, दक्ष, माहिर
21	Under Reference	संदर्भाधीन, प्रसंगाधीन, संदर्भ के अधीन	46	Demonetization	विमुद्रीकरण, नोटबंदी, नोटबन्दी
22	Undersigned	अधोहस्ताक्षरी	47	Contravention	उल्लंघन, अवहेलना
23	Tour programme	दौरा कार्यक्रम	48	Casting Vote	निर्णायक मत
24	Subordinate Services	अधीनस्थ सेवाएं/सेवायें	49	Bankrupt	दिवालिया, दिवाला, कंगाल
25	Redemption of Debt	ऋण मोचन, ऋण मुक्ति, कर्ज से मुक्ति, ऋण-विमोचन	50	In addition to	के अतिरिक्त, को छोड़कर, के अलावा, इसके अलावा

नराकास करनाल द्वारा दिनाँक 29.11.2017 को संपन्न 'हिन्दी मुहावरा/लोकोक्ति लेखन प्रतियोगिता' का उत्तर-पत्रक

निर्देश :

1. उत्तर पत्रक पर केवल अपना रोल नंबर एवं मातृभाषा लिखें।
2. उत्तर पत्रक पर कहीं भी अपना नाम न लिखें एवं न ही हस्ताक्षर करें। उत्तर पत्रक पर अपने नाम का किसी भी रूप में उल्लेख करने पर उत्तर पत्रक का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।
3. सभी प्रश्न अनिवार्य है। पूर्णांक 50 अंक है एवं समय सीमा एक घण्टे है। उत्तर में प्रश्न-पत्र में उल्लेखित मुहावरों का प्रयोग वर्जित है।
4. उत्तर में वर्तनी प्रयोग एवं व्याकरण शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाना अपेक्षित है।
5. अहिन्दीभाषियों को प्राप्तांक के 20 प्रतिशत अतिरिक्त अंक प्रदान किए जाएंगे।
6. परीक्षा हाल में अपना मोबाइल बंद करके रखें।

1. पाँच ऐसे मुहावरे लिखिए जिनमें कम से कम एक संख्या (जैसे एक,दो,तीन............) का उल्लेख अवश्य हो (वाक्य-प्रयोग न करें)। 5x2=10
2. पाँच ऐसे मुहावरे / लोकोक्ति लिखें जिनमें "आँख" शब्द का उल्लेख अवश्य हो एवं वाक्य प्रयोग भी करें। 15x2=30
3. यहाँ नीचे दिए गए मुहावरों में से किन्हीं 15 मुहावरों / लोकोक्तियों का अर्थ लिखकर वाक्य मे प्रयोग करें।

(1) लाल गुदड़ी में नहीं छिपते	उत्तम गुणों को छिपाया नहीं जा सकता।
(2) जी कहो, जी कहलाओ	आदर लेने के लिए आदर देना जरूरी
(3) जैसा कन भर वैसा मन भर	थोड़ी मात्रा की जाँच से पता चल जाता है कि पूरी चीज कैसी है
(4) जैसे को तैसा मिले, मिले डोम को डोम	जो व्यक्ति जैसा होता है उसे जीवन में वैसे ही लोग मिलते हैं।
(5) जोगी जोगी लड़ पड़े, खप्पड़ का नुकसान	बड़ों की लड़ाई में गरीबों की हानि होती है।
(6) झटपट की धानी, आधा तेल आधा पानी	जल्दी का काम, अच्छा नहीं होता।
(7) ढाक के तीन पात	परिणामरहित / यथास्थिति बने रहना
(8) कलई खुलना	पर्दाफाश होना
(9) मेंढकी को जुकाम होना	अनहोनी होना
(10) अरण्य रोदन	निष्फल निवेदन
(11) गूलर का फूल होना	दुर्लभ होना
(12) हल्दी चूना लगाना	खूब पीटना
(13) साँच को आँच नहीं	सच्चे का निडर होना
(14) सुर्खाब के पर लगना	विशिष्ट / दुर्लभ होना
(15) रसातल को पहुँचाना	बर्बाद करना
(16) दाँत काटी रोटी	घनिष्ठ मित्रता / पक्की मित्रता
(17) लिखित चंद्रमा, लिखिगा राहू	योग नहीं बैठने पर योग्यता होने पर भी उपलब्धि हासिल न होना
(18) मिट्टी का माधो	निपट मूर्ख
(19) पड़ता खाना	लागत और अभीष्ट लाभ मिल जाना
(20) ढाई घड़ी का आना	अल्प समय के लिए आना
(21) लिखे ईसा पढ़े मूसा	अव्यविस्थत / खराब लिखावट

4. निम्नलिखित अंग्रेजी मुहावरों / प्रचलित वाक्यांशों में से 5 का हिन्दी में अर्थ लिखिए 5x5=1

(1) White Elephant	महंगा परन्तु बेकार
(2) Turn a deaf ear to	अनसुना करना
(3) After taking into account	पर विचार करने के उपरांत
(4) Fiar and square	निष्पक्ष
(5) Capital punishment	मृत्युदंड
(6) At large	कानून की गिरफ्त से दूर / फरार
(7) An apple of discord	झगड़े का कारण / फसाद की जड़
(8) In an apple pie order	सुचारू रूप से / अच्छे से / निर्विघ्न / व्यवस्थित

नराकास, करनाल द्वारा दिनाँक 1.12.2017 को संपन्न 'हिन्दी पैराग्राफ-श्रुतलेखन प्रतियोगिता' का प्रश्न पत्र (सामग्री)

वर्तमान युग में हिन्दी भाषा का वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण का केन्द्रीय तत्व है। इसके चलते विश्व स्तर पर हिन्दी के प्रचार–प्रसार की आवश्यकता बढ़ गई है। हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा कही जाती है। बाजार, मीडिया एवं विज्ञापन के सभी पहलुओं में से यदि हिन्दी की उपस्थिति को हटा दिया जाए तो कई आर्थिक आँकड़े और अर्थजगत का गणित प्रभावित हो जाएगा। राजभाषा के पुनरूत्थान में आज सबसे बड़ी समस्या हमारी इच्छाशक्ति है। एक ओर प्रतिस्पर्द्धा की अंधी दौड़ में हम अपने आप को अत्याधुनिक दिखाना चाहते हैं, टूटी–फूटी अंग्रेजी बोलकर अपना अधकचरा ज्ञान प्रदर्शित करना चाहते हैं, वहीं राजभाषा की उपेक्षा हमारी प्रवृत्ति और नियति बनती जा रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम हिन्दी भाषा के गौरव का दम भरें। लगभग एक करोड़ बीस लाख भारतीय मूल के लोग विश्व के 132 देशों में बिखरे हुए हैं जिनमें आधे से अधिक हिन्दी से परिचित ही नहीं उसे व्यवहार में भी लाते हैं। गत पचास वर्षों में हिन्दी की शब्द संपदा का जितना विस्तार हुआ है उतना विश्व की शायद ही किसी भाषा में हुआ हो। विदेशों में हिन्दी के पठन–पाठन और प्रचार–प्रसार का कार्य हो रहा है। भारत के बाहर 165 विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन की व्यवस्था है। हिन्दी का व्यापक प्रयोग एवं प्रस्तुतीकरण जन–संचार माध्यमों की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। विश्व में अब उसी भाषा को प्रधानता मिलेगी जिसका व्याकरण संगत होगा, जिसकी लिपि कम्प्यूटर की लिपि होगी। कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के सहारे हिन्दी शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से होने की संभावना बढ़ गई है। वर्तमान स्थिति में वेबसाइट पर हिन्दी इलेक्ट्रॉनिक शब्दकोश उपलब्ध है। इसी तरह अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं में पारस्परिक अनुवाद प्राप्त करने की सुविधा भी उपलब्ध है। सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी भाषा का प्रचलन धीरे–धीरे बढ़ रहा है। कई विदेशी कंपनियों ने अपनी वेबसाइट पर हिन्दी भाषा को स्थान दिया है। विदेशी भाषाओं की फिल्में हिन्दी में डब की जा रही हैं। आज प्रौद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी की भाषा को आम आदमी के नजदीक पहुँचाने की आवश्यकता बढ़ गई है। हिन्दी में भी कंप्यूटर शब्दावली के निर्माण में हमें बाजार और उपभोक्ताआ को ध्यान में रखना होगा। बाजार के वैश्वीकरण से जहाँ हिन्दी भाषा के दिन फिरते नजर आ रहे हैं वहीं यदा–कदा इसकी प्रकृति में विकृति के कुछ लक्षण भी दृष्टिगोचर हो जाते हैं, किन्तु ये नगण्य हैं।

आइए हम किंकर्तव्यविमूढ़ मतिभ्रम से अपने आप को परे रखकर उत्कृष्ट विचार अपने अंतर्मन में लाएं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी हिन्दी भाषा आशा, उल्लास और त्योहारों की भाषा है। हमारी जिजीविषा राजभाषा के प्रचार, प्रसार और कार्यान्वयन को निश्चित रूप से नई दिशा प्रदान करेगी।

नराकास करनाल द्वारा 16.2.2018 को संपन्न 'वाक्यांश-अनुवाद प्रतियोगिता' का उत्तर-पत्रक

सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाले निम्न में से किन्हीं 50 अंग्रेजी वाक्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए (50 अंक):–

क्र.	वाक्यांश अंग्रेजी में	वाक्यांश हिन्दी में लिखें
1	Above given	ऊपरलिखित, ऊपर दिया हुआ
2	A brief note is placed below	एक संक्षिप्त नोट नीचे रखा है
3	Abstract of teller's receipt	टेलर या गणक की रसीद का सार
4	Bring into operation	चालू करना, अमल में लाना/प्रचालन में लाना
5	By no means	कदापि नहीं, कभी नहीं
6	Comes in the purview of Manager	प्रबंधक के कार्य क्षेत्र में (आता है)
7	Consequent upon	के परिणामस्वरूप/फलस्वरूप
8	Concluding Remark	समापन टिप्पणी
9	Commutation of pension	पेंशन का सारांशीकरण, पेंशन का कम्यूटेशन
10	Delegation of financial powers	वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन
11	Dismissal on default	दोष पर सेवाच्युत, बर्खास्तगी।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

12	Fair and equitable	उचित और साम्ययुक्त
13	Forwarded and recommended	अग्रेषित एवं संस्तुत
14	In absence of information	सूचना/जानकारी के अभाव में
15	In official capacity	पद की हैसियत से/आधिकारिक तौर पर
16	Kindly expedite disposal	कृपया शीघ्र निपटान करें
17	Memorandum of understanding	समझौता ज्ञापन
18	Non cognizable offence	असंज्ञेय अपराध
19	Pending the conclusion of enquiry	जाँच समाप्त होने तक/जाँच का परिणाम लंबित
20	Re-assessment of disability pension	अशक्तता(विकलांगता) पेंशन का पुनर्निर्धारण
21	Signed, sealed and delivered	हस्ताक्षरित, मोहरबंद व सुपुर्द किए
22	To the best of knowledge and belief	जहाँ तक पता है और विश्वास है
23	Until further orders	अगले आदेश तक, दूसरे आदेश तक
24	Vetting of draft	प्रारूप का पुनरीक्षण या मसौदे की वेटिंग
25	With retrospective effect	पूर्वव्यापी(पूर्वावधिक) प्रभाव सहित
26	Bachelor of Technology	प्रौद्योगिकी स्नातक
27	Diploma in Public Health	जन(लोक) स्वास्थ्य डिप्लोमा
28	Master of Arts	कला निष्णात, कला में स्नातकोत्तर
29	Proportional representation	आनुपातिक प्रतिनिधित्व
30	To the contrary	इसके विपरीत
31	Through over sight	भूल जाने से, भूलचूक से या भूलवश
32	As an exceptional case	अपवाद के रूप में
33	Budget provision exists	बजट में व्यवस्था है
34	Charged expenditure	प्रभारित खर्च, कोर्ट के आदेश का खर्च
35	Demi-Official	अर्ध-शासकीय
36	Follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई
37	Ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी
38	Exigencies of public service	लोक सेवा की तात्कालिक आवश्यकता(आकस्मिकताएं)
39	Hold over	स्थगित करना
40	Hard and fast rule	पक्का नियम
41	in modification of	का आशोधन करते हुए
42	Liable to disciplinary action	अनुशासनिक कार्रवाई की जा सकती है
43	Notified for general information	सार्वजनिक की जानकारी के लिए अधिसूचित
44	Ultimately it has to be done	अंततः यह करना ही होगा
45	Take for granted	मान लेना, मान कर चलना, महत्व नहीं समझना
46	Relaxation of rules	नियमों में छूट(शिथिलता)
47	Text book committee	पाठ्यपुस्तक समिति
48	Quick disposal of stores	सामानों का शीघ्र निपटान
49	petty contingent voucher	खुदरा(लघु) आकस्मिक व्यय वाउचर
50	On compassionate grounds	करुणामूलक आधार पर, अनुकंपा आधार पर
51	In anticipation of	की प्रत्याशा(आशा/अपेक्षा) में
52	Private and confidential	निजी व गोपनीय
53	Breach of Rule	नियम-भंग/नियमों की अवहेलना
54	Casting Vote	निर्णायक मत
55	Caretaker government	कामचलाऊ सरकार

नराकास करनाल द्वारा दि. 19.04.2018 को संपन्न 'वाक्य-अनुवाद प्रतियोगिता' का उत्तर-पत्रक

अनुदेश : निम्न वाक्यों में से 25 वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करें। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

(पूर्णांक : 50 अंक)

A brief summary of the case may be put up to the undersigned for perusal and passing appropriate orders on merit basis.	अधोहस्ताक्षरी को मामले का संक्षिप्त सारांश अवलोकन एवं मेरिट(गुणता) के आधार पर उपयुक्त आदेश पारित करने के लिए प्रस्तुत करें।
Certified that the rates charged in the bill are correct as per latest guidelines of the GOI and the bill could be passed from within the budget of the institute.	प्रमाणित किया जाता है कि भारत सरकार के नवीनतम दिशानिर्देशों के अनुसार बिल में प्रभारित दरें सही हैं एवं बिल को संस्थान के बजट के अन्तर्गत पास किया जा सकता है।
Total may be restricted to maximum ceiling amount of CEA/Hostel Subsidy per annum without asking for any bills/receipts etc.	बाल शिक्षण भत्ता/हॉस्टल सब्सिडी के योग को बिल/रसीदें आदि मांगे बिना प्रत्येक साल की अधिकतम सीमा तक प्रतिबंधित किया जा सकता है।
In the event of any change in the given particulars which affect eligibility for subject allowance, I undertake to intimate the same promptly and refund excess payment, if any made to me.	दिये गए ब्योरे में किसी भी परिवर्तन की स्थिति में, जिससे विषयांकित भत्ते की पात्रता प्रभावित होती है, मैं यह वचन देता हूँ कि मैं तुरंत इसे अवगत करा दूंगा तथा अधिक भुगतान, यदि मुझे किया गया है, के धन को शीघ्रतापूर्वक वापस जमा कर दूंगा।
All Ministries/Departments are requested to upload it on their websites for wider publicity as this is also mandatorily required in pursuance of RTI rules.	सभी मंत्रालय/विभागों से यह अनुरोध है कि इसे उनकी वेबसाइटों पर व्यापक प्रचार के लिए अपलोड करें, चूंकि सूचना का अधिकार नियमों के अनुसरण में यह अनिवार्यतः आवश्यक भी है।
The Hon'ble Tribunal in the aforesaid decision dated 28.04.2016 has held that the MACP benefit would be given in the hierarchy of next higher Grade Pay	माननीय अधिकरण ने पूर्वोक्त निर्णय दिनाँक 28.4.2016 में यह बताया है कि एम.ए.सी.पी. लाभ अगले उच्च ग्रेड वेतन के पदसोपान में प्रदान किए जाएंगे।
The MACPS envisages merely placement in the immediate next higher grade and this practice has so far been implemented in all other previous cases.	एम.ए.सी.पी. योजना में मात्र बिल्कुल अगले उच्च ग्रेड में लाना परिकल्पित है एवं यह इस प्रक्रिया को अब तक पिछले सभी मामलों में कार्यान्वित किया गया है।
The High Court has dismissed at the admission stage a writ petition seeking a direction to the Centre to formulate laws for scrutiny of cash withdrawals from various funds.	उच्च न्यायालय ने उस एक रिट याचिका जिसके द्वारा केन्द्र को विभिन्न निधियों से नकदी निकासी के लिए नियम बनाने के लिए निर्देशित करने का आवेदन किया गया था, को प्रारंभिक अवस्था में खारिज कर दिया है।
This issues with the concurrence of the Internal Finance Division.	इसे/यह आंतरिक वित्त प्रभाग की सहमति से जारी किया जा रहा है।
The undersigned is authorised to take disciplinary action against him	अधोहस्ताक्षरी उसके विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के लिए प्राधिकृत हैं।

The punishment has been imposed with retrospective effect.	सजा पूर्व प्रभाव सहित अधिरोपित की गई है।
Self contained notice has not been served to the delinquent.	आरोपी को सर्वसमाहित सूचना नहीं दी गई है।
Our Head of the institution could not attend the conference as he was away from the district on bonafide government duty.	हमारे संस्थान प्रमुख सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो सके चूंकि वे बोनाफाइड सरकारी ड्यूटी पर जिले से बाहर थे।
It is directed to explain the reasons that as to how you failed to comply with the orders of the competent authority.	यह निदेश दिया जाता है कि उन कारणों को स्पष्ट करें कि आप सक्षम प्राधिकारी के आदेशों की पालना/अनुपालना करने में क्यों असफल रहे।
It has come to the notice of the HOD that while processing CEA applications you have failed to meet the requirements of the audit in certain cases.	विभागाध्यक्ष के संज्ञान में यह आया है कि आप बाल शिक्षण भत्ता आवेदनों को निष्पादित करते समय कुछ मामलों में ऑडिट की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असफल रहे हैं।
There may be situations wherein wards and relatives of the civil servants residing abroad (for education and other purposes) could be having medical emergencies or family events.	कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हो सकती हैं जिनमें सिविल सेवक जिनके बच्चे एवं संबंधी, विदेश में (शिक्षा व अन्य उद्देश्यों के लिए) रह रहे है, के साथ चिकित्सकीय आपात या पारिवारिक घटना घटित हो सकती है।
Before the guidelines in the draft O.M. is finalized, all Cadre Controlling Authorities are requested to offer their comments/views in this regard, if any	मसौदा कार्यालय ज्ञापन के दिशा–निर्देशों को अंतिम रूप देने से पहले, सभी संवर्ग नियंत्रण प्राधिकारियों से यह अनुरोध है कि वे इस बारे में टिप्पणी/राय, यदि कोई हों, प्रस्तुत करें।
Undersigned is directed to say that a need for further streamlining the procedure for grant of permission for going abroad on private visit has been felt.	अधोहस्ताक्षरी को यह कहने का निदेश हुआ है कि निजी दौरों पर विदेश जाने के लिए अनुमति प्रदान करने की प्रक्रिया को और अधिक सुगम बनाने की आवश्यकता महसूस की गई है।
When the conduct of an employee is under investigation but the investigation has not reached the stage of issue of charge-sheet, his application may be forwarded with brief comments	जब कर्मचारी का आचरण अन्वेषण के अधीन हो किन्तु अन्वेषण आरोप–पत्र जारी करने की अवस्था तक नहीं पहुँचा हो, तो उसके आवेदन को संक्षिप्त टिप्पणी के साथ अग्रेषित किया जाए।
You are a most deserving employee for the manager post and your performance is also calculated to have promoted the efficiency of this bank.	आप प्रबंधक पद के लिए सुपात्र कर्मचारी हैं एवं आपके कार्यों का निष्पादन से बैंक की दक्षता के समुन्नत होने का परिचय भी मिलता है।
The conditions for admissibility of pay protection shall be the same as stipulated in this Department's OMs dated 07.08.1989 and 10.07.1998 referred to above.	वेतन संरक्षण की देयता के लिए शर्तें इस विभाग के ऊपर संदर्भित कार्यालय ज्ञापन दिनाँक 7.8.1989 एवं 10.7.1998 में निर्धारित अनुसार समान होंगी।

An employee on CCL may be permitted to leave headquarters with the prior approval of appropriate competent authority and LTC may be availed while an employee is on CCL.

बाल देखभाल छुट्टी काट रहे एक कर्मचारी को उपयुक्त सक्षम प्राधिकारी के पूर्वानुमोदन से मुख्यालय छोड़ने की अनुमति दी जा सकती है एवं कर्मचारी बाल देखभाल छुट्टी पर छुट्टी यात्रा रियायत ग्रहण की जा सकती है।

Departments are requested to give wide circulation to these instructions for guidance in the matter and also to ensure strict adherence to the prescribed time-schedule.

विभागों से यह अनुरोध है कि वे मामले के अन्तर्गत इन अनुदेशों का मार्गदर्शन के लिए व्यापक प्रचार करें एवं विहित समय–सीमा की कड़ाईपूर्वक पालना सुनिश्चित करें।

In continuation of this Headquarter letter of even number dated 06th October 2017, I am directed to say that inadvertently the post of Senior manager was not included in the list of posts mentioned at part (i) para 1 of the letter dated 22.09.2017.

इस मुख्यालय के समसंख्यक पत्र दिनाँक 06 अक्तूबर 2017 के क्रम में, मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि पत्र दिनाँक 22.9.2017 के पैरा 1 के भाग(एक) में उल्लेखित पदों की सूची में वरिष्ठ प्रबंधक के पद को भूलवश शामिल नहीं किया गया था।

The method of recruitment to the said posts, age limit, qualifications and other matters connected therewith shall be as specified in columns 5 to 13 of the said Schedule.

उपरोक्त पदों पर भर्ती का तरीका, आयु–सीमा, अर्हता एवं तत्संबंधी अन्य मामले उक्त अनुसूची के कॉलम 5 से 13 में विनिर्दिष्ट अनुसार होंगे।

It has repeatedly been pointed out that it is primarily the responsibility of the Administrative Ministry / Department to ensure that timely action is taken at each stage of a court case.

यह बार–बार इंगित किया गया है कि अदालती मामले की प्रत्येक अवस्था में प्रशासनिक मंत्रालय/विभाग की समय पर कार्रवाई सुनिश्चित करने की मुख्य जिम्मेदारी है।

E-Receipts produced by Central Govt. employees as a proof of payment of fee, etc., may be treated as original and hence may be allowed for claiming reimbursement of CEA.

केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों द्वारा फीस(शुल्क) आदि के भुगतान के प्रमाण में प्रस्तुत की गई ई–रसीदों को मूल माना जाएगा एवं अतएव इन्हें बाल शिक्षण भत्ते की प्रतिपूर्ति के लिए अनुमति दी जाएगी।

कुछ बनने का नहीं, कुछ अच्छा करने का ख्वाब देखें

दि. 15.2.2018 को संपन्न 'हिन्दी नारा-लेखन प्रतियोगिता' में प्रतिभागियों द्वारा लिखे गए कुछ प्रेरक नारे (प्रतिभागियों को राजभाषा, स्वच्छता एवं नारी सशक्तीकरण विषयों पर नारे लिखने थे)

प्रस्तुत द्वारा : श्री वाजिद अली, कला अध्यापक, जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल राजभाषा

1. होगा देश का समुचित विकास, अपनायेंगे जब, अपनी भाषा, अपना लिबास।
2. अपनी भाषा अपना मान, हिन्दी में काम करना है आसान।
3. देश में भाषायें न्यारी–न्यारी, हिन्दी है हम सबकी दुलारी।
4. आमजन की भाषा है हिन्दी, राष्ट्र के माथे की है बिन्दी।
5. हिन्दी है हिन्दुस्तान का गहना, सरल, मृदुभाषा और सीधा कहना।
6. एक दूजे पर न इल्ज़ाम धरे, आओ मिलकर हिन्दी में काम करें
7. देश की भाषाओं का सार हैं, सब आमजन को हिन्दी से प्यार है।
8. राष्ट्र की भाषायें जैसे सात सुरों का साज़, हिन्दी अपनी, सब भाषाओं के सर का ताज़।
9. नारी बिना न संसार चले, आगे बढ़ जाओ, कितना भले।
10. सृष्टि को आगे बढ़ाती है नारी, न समझो अबला, न समझो बेचारी।
11. बेटी है एक अनमोल रत्न, बिन बेटी, बहु का कैसे करोगे जतन।
12. हर क्षेत्र में जाने को अब तैयार, नारी भी कर रही नित नए आविष्कार।
13. स्वच्छता पहला हो अपना काम, घर ही बन जायेगा निर्मल धाम।
14. स्वच्छता पर गर देंगे ध्यान, स्वच्छ बनेगा अपना हिन्दुस्तान।
15. स्वच्छ मस्तिष्क और स्वच्छ होगा समाज, स्वच्छता का तुम प्रण ले लो आज।
16. बतलाओ उनको आने वाली जो पीढ़ी है, स्वच्छता ही आगे बढ़ने की सीढ़ी है।
17. विकसित राष्ट्र की ग़र करो कल्पना, देखो स्वच्छ रहने का सपना।

प्रस्तुत द्वारा : सोनिका यादव, सहायक, भाकृअनुप–राडेअनुसं (एनडीआरआई), करनाल

1. बराबरी का साथ निभाएं, महिलाएं अब आगे आएं।
2. नारी नहीं किसी से कम, हर क्षेत्र में दिखा रहीं अपना दम।
3. विकट परिस्थितियों में निकाले हल, नारी से ही है देश का कल।
4. जब हर नारी होगी साक्षर, तभी तो देश होगा हर क्षेत्र में अग्रसर।
5. अगर देश को महान बनाना है, तो हर क्षेत्र में नारी को सम्मान दिलाना है।
6. नारी में हैं उमगों की तरंगे, वहीं से उड़ते हैं संस्कारों के परिंदे।
7. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं, देश को आगे बढ़ाओ।
8. बेटी भार नहीं, है आधार, सोचो, समझो, करो विचार।
9. बेटियों को न रहने दो "निरक्षर", वो भी बन सकती हैं बड़ी अफसर।
10. हिन्दी देश की शान है, हमें इस पर अभिमान है।
11. जी भर जानो भाषा अनेक, पर भूलो न राजभाषा एक।
12. हिन्दी को अपनाना है, देश को आगे बढ़ाना है।
13. हिन्दी में पत्राचार हो, हिन्दी में व्यवहार हो।
14. देश वही महान है, जिसकी राजभाषा उसकी शान है।
15. हिन्दी को आगे बढ़ाना है, जन–जन तक पहुँचाना है।
16. अगर रोग मुक्ति की है लालसा, तो स्वच्छता ही है एकमात्र रास्ता।

प्रस्तुत द्वारा : श्री दीपक यादव, वरिष्ठ तकनीशियन, भाकृअनुप–राडेअनुसं (एनडीआरआई), करनाल

1. हम सब ने यह ठाना है, देश को स्वच्छ बनाना है।
2. स्वच्छता का दीप जलाऐगें, घर–घर उजियारा फैलाऐंगे।
3. भारत का यह नारा है, स्वच्छता को अपनाना है।

6. हम सबका एक ही लक्ष्य हो, साफ सुथरा सबका भविष्य हो।
7. घर–घर जाकर गंदगी को भगाएंगे, अपने परिवार को बिमारियों से बचाएंगे।
8. सबकी जिंदगी का एक सपना हो, साफ सुथरा राष्ट्र अपना हो।

10. हस्पताल न जाऐ कोई, स्वच्छता अपनाऐ यदि हर कोई।
11. दिल में एक जुनून जगाना है, स्वच्छता के बारे में सबको बतलाना है।
12. सोते जागते बस एक ही सपना, स्वच्छ, निर्मल हो देश अपना।
13. स्वच्छता है एक अभियान, हम सब करे इसका सम्मान।
14. आओ देश की प्रगति में सहयोग करें,
    स्वच्छता अपनाकर मन संतुष्ट करें।
15. देश को आगे बढ़ाना है, स्वच्छता को अपनाना है।

प्रस्तुत द्वारा : श्रीमती ऊषा कत्याल, एमएसएमई विकास संस्थान, करनाल

1. अबला नहीं है अब, सबला है नारी
2. शिक्षित नारी, शिक्षित समाज, इसी में है सब का विकास।
3. हम सब ने यह ठाना है, भारत को स्वच्छ बनाना है।
4. स्वच्छता ही मेरा धर्म, मेरा ईमान, घर–घर पहुंचे एक ही गान।
5. आओ मिल कर करे प्रयास, स्वच्छता में ही हो हम सब का वास।।

प्रस्तुत द्वारा : श्री मुकेश कुमार तोमर, वरिष्ठ तकनीशियन, दूरदर्शन, करनाल

शिक्षित नारी शिक्षित समाज।
नारी तू महान है, भारत की पहचान है।
नर–नारी सब एक समान, तभी बढ़ेगा हिन्दुस्तान।
बेटा–बेटी एक समान, तभी बनेगा देश महान।
हिन्दी हिन्द की शान है, इस पर हमें अभिमान है।
हिन्दी की बिन्दी शान है, तभी हमें अभिमान है।
अ से अः तक, क से ज्ञ तक में पूरा ज्ञान समाया है।
यह है भाषाओं की रानी, हिन्दी नाम कहाया है।
सुनो सुनो ऐ दुनिया वालों, हिन्दुस्तान हमारा है,
हम हिन्द के हिन्दुस्तानी हिन्दी ज्ञान हमारा है।
भाषाओं की भाषा अपनी, हिन्दी की अभिलाषा हो
हिन्द देश के सच्चे हिन्दी, यही हमारी परिभाषा हो।
स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत, यही हमारा नारा है,
संकल्पित हो करें कार्य, तभी उत्थान हमारा है।

प्रस्तुत द्वारा : श्रीमती दिनिका गोयल, कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारी, बीएसएनएल, करनाल

1. माना कि सब चाहते हैं सुखों का मेवा, स्वच्छतो को भी मान लो माधव सेवा।
2. अगर जीना चाहते हो भरपूर, स्वच्छता से क्यों रहते हो दूर।
3. अब नहीं कदम डगमगायेंगे, स्वच्छता के लिए जी–जान लगायेंगे।
4. समाज की नींव है नारी, क्यों ये तुमने है दुत्कारी।
5. नारी है ईमान देश का, नारी है सम्मान देश का।
6. भाषाओं का शृंगार है हिन्दी, जैसे दुल्हन के माथे की बिन्दी।
7. गंदगी को दूर भगाना है, स्वच्छता को अपनाना है।
8. गन्दगी है जान लेवा, स्वछता ही है असली सेवा।
9. स्वच्छता अभियान में करो सहयोग, इससे बड़ा नहीं कोई योग।

प्रस्तुत द्वारा : श्री चन्द्रभानु सिंह, तकनीकी सहायक, माकृअनुसं, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

1. नारी को पढ़ाना है, देश को आगे बढ़ाना है।
2. जिस जगह होगा नारी का सम्मान, वहाँ होगा देश का सम्मान।
3. गंदगी को हटाना है, देश को स्वच्छ बनाना है।
4. स्वच्छ रहेगा देश, आगे बढ़ेगा देश।
5. हर नर–नारी खाये कसम, स्वच्छता की सेवा हो परम धर्म।
6. स्वच्छ रहो, स्वस्थ रहो।
7. गंदगी को भगाना है, राष्ट्र को आगे बढ़ाना है।

प्रस्तुत द्वारा : श्री निशांत गर्ग, अधिकारी, केनरा बैंक, करनाल

1. नारी को पढ़ाना है हर क्षेत्र में आगे बढ़ाना है

2. अंतर राज्य संवाद होगा आसान, देश को मिलेगी उसकी एकता की पहचान।
3. राजभाषा को अपनाना है उसका सम्मान बढ़ाना है।
4. स्वच्छता अपनाएं, देश की तरक्की में सहयोग बढ़ाएं।

प्रस्तुत द्वारा : श्री धर्मेन्द्र, तकनीशियन, माकृअनुसं, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

1. स्वच्छ रहो स्वस्थ रहो।
2. स्वच्छ वायु जीवन हमारा, प्रदूषण मुक्त हो देश हमारा
3. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ।
4. अगर आज बेटियों को मार दोगे तो कल बहु(पत्नी) कहाँ से लाओगे।

प्रस्तुत द्वारा : श्री तरसेम सिंह, बिजनेस एसोसिएट, बैंक ऑफ बड़ौदा, करनाल

1. जहां है नारी का सम्मान, वही देश है सबसे महान।
2. हम सबकी है प्यारी, हिन्दी राजभाषा हमारी।
3. हम सबका है ये अभियान, स्वच्छता पर हो हमारा ध्यान।
4. आओ, आज को स्वच्छ बनाएं, सुखद, सुंदर हम कल को बनाएं।
5. जात–पात, ऊँच–नीच का भेद छोड़, चलो, चलाएं स्वच्छता की होड़।
6. जब भारत का नाम बढ़ेगा, हिन्दी का अभियान बढ़ेगा।
7. आदि, अन्त और कालान्तर, स्वच्छता चलती रहे निरंतर।
8. गांधी जी का था ये सपना, सबसे स्वच्छ हो भारत अपना।
9. सुदृढ़, शिक्षित और नारी सम्मान, इनसे ही है देश का अभिमान।
10. नारी को दुर्बल ना मानो, इसके अदम्य् साहस को पहचानो।

प्रस्तुत द्वारा : श्री दीपक कुमार सुनेजा, प्रबंधक, केनरा बैंक, करनाल

1. प्रेम का प्रतीक, हर घर की है जान। हे भारत की नारी, तुझे कोटि–कोटि प्रणाम।
2. तिरंगा हमारा गुमान है। हिन्दी हमारा सम्मान है।
3. आधुनिक भारत की पहचान, नर–नारी एक समान।

प्रस्तुत द्वारा : श्री राम बहादुर वर्मा, तकनीकी सहायक, माकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल

1. जो रखता घर में सफाई। दस रोग आपहिं मिटि जाई।।
2. स्वच्छ समाज में स्वस्थ लोग रहते। स्वस्थ शरीर में स्वच्छ विचार पनपते।
3. आस पास जो रखे सफाई, उसकी होती है समाज में बड़ाई।।
4. एक नारी, दो घर की उजियारी।

प्रस्तुत द्वारा : श्री सुमित कुमार, प्रबंधक, केनरा बैंक, करनाल

1. देश का मान, भाषा का सम्मान। हिन्दी में हो हर जगह काम।
2. हिन्द तभी महान होगा, जब हिन्दी का सम्मान होगा।
3. विदेशी भाषा का ज्ञान है, यह गर्व की बात है। मातृभाषा का अपमान हो, यह शर्म की बात है।

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

हमारी राजभाषा हिन्दी

हमें अपनी मातृभाषा हिन्दी के विकास के लिए अपने आने वाली पीढ़ी को प्रेरित करना चाहिए कि वे ज्यादा से ज्यादा हिन्दी का उपयोग करें ताकि हम अपनी राजभाषा का विस्तार कर सकें क्योंकि हिन्दी सबसे सरल भाषा है जो आसानी से समझ आ जाती है। हमें अपनी हिन्दी राजभाषा को बढ़ाने के लिए पत्राचार व बोलने में ज्यादा से ज्यादा उपयोग में लाना चाहिए क्योंकि यह लिखने व पढ़ने में बहुत सरल है। हिन्दी भाषा के विकास के लिए हमें समय–समय पर प्रतियोगिताओं का आयोजन करके इसे बढ़ाने में मदद कर सकते है। क्योकि प्रतियोगिताओं के द्वारा हमारे ज्ञान व जानकारी भी बढ़ती है। इससे हमें लोगों को जागरूक करने में सहायता कर सकते है।

धर्मेन्द्र, तकनीशियन,
भाकृअनुसं, क्षे0के0, करनाल

प्रभु सरंक्षण

एक बार की बात है। एक फकीर रेत के मार्ग पर अकेला चला जा रहा था। चलते–चलते जब वह काफी थक गया तो उसने पीछे मुड़ कर देखा और आश्चर्यचकित हो गया कि वह तो अकेला है फिर भी चार पैरों के निशान कैसे बन गए। तब फकीर ने जोर–जोर से आवाज लगाते हुए कहा,

" हे ईश्वर। अब तू मेरे साथ साथ चल रहा है, क्योंकि अब मुझ पर कोई विपदा नहीं है और मैं खुशहाल हूं। जब मैं कष्ट में था तब मेरे दो ही पदचिन्ह बनते थे क्योंकि मैं अकेला चलता था।"।

इस पर आसमान से आकाशवाणी हुई–"हे फकीर, जब तुम कष्ट में थे तब भी मैं तुम्हारे साथ था और आज भी साथ हूं। बस अन्तर केवल इतना है कि कष्ट के समय मैं तुम्हें अपनी उठा कर चलता था जिसकी वजह से मेरे दो ही पदचिन्हों का आकार बनता था और अब मैं तुम्हारे साथ–साथ चलता हूँ।" यह सुनकर फकीर भावविभोर हो गया और उसकी ईश्वर के प्रति आस्था और गहरी हो गई।

तात्पर्य यह है कि अगर हम अपना कार्य नेक, ईमानदारी व सच्चाई से करें तो हमें प्रभु का पूर्ण सरंक्षण मिलता है। ईश्वर सहर्ष अपने आप ही हमारे सारे कष्टों को मिटा देता है। अतः हमें अपना कार्य पूर्ण निष्ठा और मेहनत से करते रहना चाहिए।

तरसेम सिंह,
बिजनेस एसोशिएट, बैंक आफ बड़ौदा, करनाल

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत की अधिकतर जनसंख्या गांवों में निवास करती है। गाँवों में रहने वाले लोगों का व्यवसाय कृषि है। गाँवों में साक्षरता का स्तर काफी कम है। हमारे समाज में बेटियों को पढ़ाया नहीं जाता है। ये एक विडंबना है कि आजादी के इतने वर्षों के बाद भी लोगों की मानसिकता नहीं बदली है। समाज की इस मानसिकता को सिर्फ शिक्षा द्वारा ही बदला जा सकता हैं। भारत के एक सर्वे के अनुसार पुरूष स्त्री लिंग अनुपात में हरियाणा में लड़कियों की संख्या सबसे कम है। बेटी का पैदा होना इस प्रदेश में एक अभिशाप समझा जाता था। लेकिन आज वर्तमान सरकार के अथक प्रयासों से भ्रूण हत्या की दर में कमी आई है। इन कुरीतियों को समाप्त करने के लिए सरकार भी कई योजनाएं जैसे सुकन्या समृद्धि योजना आदि चला रही हैं, ताकि बेटियों को बोझ नहीं समझा जाए।

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिससे लोगों की मानसिकता को बदला जा सकता है। महिलाओं के शिक्षित होने से एक सभ्य समाज का निर्माण हो सकता है। बेटी के शिक्षित होने से एक समान अधिकार वाले समाज की स्थापना हो सकती है। बेटी के शिक्षित होने से ही महिला सशक्तीकरण सम्भव है। यही कहा जा सकता है कि बेटी का शिक्षित होना ही एक नये समाज का निर्माण करना है। जिसमें सबका अधिकार समान हो। महिलाओं को शिक्षित करके सामाजिक कुरीतियों जैसे भ्रूण हत्या, बाल विवाह आदि को रोका जा सकता है। यह तब तक ही संभव है जब आप अपनी बेटी को शिक्षित करेंगे। उसे उसके अधिकारों के प्रति जागरूक करेंगे।

सुनील कुमार,
पुस्तकालय, इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, करनाल

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

विश्व–विजेता

विश्व विजय का स्वप्न दृष्टा हिटलर कई देशों को जीतता हुआ आगे बढ़ रहा था और आगे बढ़ता हुआ उसका ध्यान हॉलैंड पर पड़ा। हॉलैंड एक छोटा देश होने के कारण उसे जीतना आसान लगा। हॉलैंड के बीच में समुद्र का पानी आ जाने से अक्सर कई गाँव डूब जाते थे। इसलिए उन्होंने अपने क्षेत्र के आस–पास दीवारें बना दीं, ताकि देश में समुद्र का पानी न आ सके। हिटलर के द्वारा आक्रमण कर दिए जाने पर देशवासियों ने सोचा गुलाम होने की बजाए हमें सामना करके देश के लिए मरना ठीक है। देश के राजा ने जब हिटलर से सामना किया तो एक तरफ से दो तीन गाँव की दीवारें तुड़वा दी, जिससे गावों में पानी घुस आया। गाँववासियों के साथ साथ हिटलर की सेना के भी कुछ लोग डूब गये। इससे हिटलर की सेना का हौसला टूट गया और हिटलर को सेना वापिस बुलानी पड़ गयी।

तात्पर्य यह है कि जीत अस्त्र–शस्त्र से ही नहीं बल्कि मन व आत्मा से भी हो सकती है।

यादविन्दर कुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक,
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान,
क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

स्वयं का अनुभव

सन् 2008 में कक्षा–12वीं उत्तीर्ण करने के बाद मुझे गाँव की ही एक संस्था में अध्यापन कराने का अवसर मिला। यह संस्था गांव के ही एक महापुरूष स्वर्गीय स्वामी ईशामंद जी द्वारा स्थापित की गई थी, जो एक स्वतंत्रता सैनानी थे। उनकी कड़ी मेहत से प्रेरित होकर दिन–रात बच्चों के अध्ययन कार्य व सामाजिक कार्य में सहयोग देकर मैंने स्वयं को एक अच्छे मार्ग की ओर अग्रसर किया। आज जो मैं हूँ, वो, स्वामी जी के पदचिह्नों पर चल कर ही मैंने प्राप्त किया है। उनसे मैंने यही सीखा है कि "कर्म किये जा, फल की चिन्ता मत कर"।

सुनील कुमार, तकनीशियन
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

प्रायश्चित

करनाल जो कि हरियाणा राज्य का एक जिला है, उसके दक्षिण दिशा में एक छोटा सा गाँव था। उसमें एक तरसेम नाम का छोटा सा बच्चा निवास करता था। उसके माता पिता कृषक थे। बच्चे में आगे बढ़ने की इच्छा थी। बड़ा होने पर उसने कृषि कार्य छोड़कर एक छोटी सी दुकान बनाई तथा उसमें रात दिन मेहनत करके खूब पैसा कमाया। माता पिता वृद्ध हो गये थे तथा गरीबी का जीवन व्यतीत करते थे। तरसेम यह सब कुछ भूल गया कि बचपन में उसको किसने पाला था। उसके लिए पैसा ही सब कुछ था। एक दिन वह दुकान का सामान खरीदने दिल्ली शहर गया तथा लौटते समय रास्ते में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। वह रास्ते पर लहुलुहान अवस्था में पड़ा हुआ था। लोग–बाग उसे देखकर चले जा रहे थे। इसी बीच, उसके पिता जो किसी कारणवश वहाँ से गुजर रहे थे, उन्होंने देखा कि कुछ लोग दुर्घटनास्थल पर एकत्रित थे तथा दुर्घटना स्थल पर त्राहि–त्राहि मची हुई थी। उसके बुजुर्ग पिता वहाँ यह देखने के लिए पहुँचे कि आखिर दुर्घटनागस्त व्यक्ति जीवित बचा कि नहीं। उन्हें अपनी बूढ़ी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि वह उनका अपना बेटा ही था जो दुर्घटना का शिकार हो गया था। उन्होंने अपने बेटे को उठाया तथा उसे अपने साथ घर ले आए। दुर्घटना में उसकी एक आँख खराब हो गई थी। अब वह देख नहीं सकता था। बेटा सिर्फ अपने पिताजी की आवाज पहचानता था। अब वह बहुत शर्मिन्दा था कि जिन माँ–बाप ने उसे मेहनत–मजदूरी करके बड़ा किया था, वह उन्हें भूल गया था और आज वही माता–पिता उसकी देखभाल कर रहे थे। बार–बार अपने प्रायश्चित के लिए मन ही मन भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि काश मैं अपने माता पिता को इस प्रकार नहीं भुलाता। उसे अपनी भूल का अहसास हो चुका था। इस लघु कथा से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने बड़ों–बुजुर्गों को नहीं भुलाना चाहिये और अपने मात–पितृ ऋण को अवश्य चुकाना चाहिये।

प्रेम सिंह, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी,
सम्पदा अनुभाग, भाकृअनुप–राडेअनुस
(एनडीआरआई), करनाल

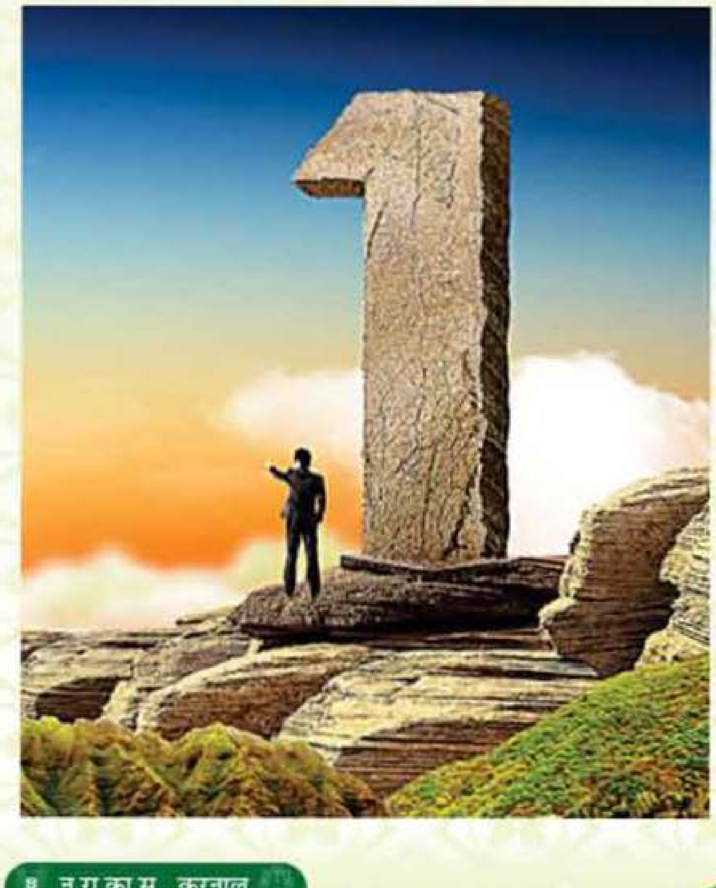

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

पहल (शुरुआत)

राजभाषा हिन्दी को सरकारी कार्यालयों में लागू करने की दिशा में सरकार की तरफ से अनेकों प्रयास किए जा रहे थे, लेकिन हिन्दी में काम करने के बारे में कोई सकरात्मक पहल नहीं हो रही थी। फिर कार्यालय में मुखिया के रूप में हमारे निदेशक महोदय ने कार्यभार संभाला जो हिन्दीत्तर प्रदेश से थे लेकिन उनकी इच्छा सरकार के नियमों के अनुसार हिन्दी में काम करने की थी। कार्यालय में काम संभालते ही उन्होने सभी स्टाफ के साथ बैठक की और बाकी कामों पर वार्तालाप के साथ–साथ उन्होंने प्रेरणा दी कि आज से पूरे स्टाफजन अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करेंगे। उन की इस पहल से पूरा स्टाफ प्रभावित हुआ और सभी फाइलों पर पत्राचार में हिन्दी में हस्ताक्षर होने लगे। धीरे–धीरे निदेशक महोदय ने अंग्रेजी की नोटिंग, ड्राफ्टिंग के नीचे हिन्दी में टिप्पणियां लिखनी शुरू कर दीं। कुछ दिनों में ही कार्यालय की अधिकतर फाइलों पर हिन्दी में काम होने लगा। सभी प्रकार के फार्म हिन्दी में तैयार करवा दिए गए। संस्थान के निदेशक की तरफ से सभी कार्यों का निपटान हिन्दी में होने लगा। उन्होंने प्रशासन, लेखा और अन्य विभागों की सभी रबड़ की मुहरों, नामपट्ट, कुछ प्रेरणा सन्देश हिन्दी में बनवा कर सभी विभागों को दे दिए। बैठकों में बातचीत हिन्दी में होने लगी, सूचनाओं का आदान–प्रदान हिन्दी में होने लगा। संस्थान का नाम हर तरफ हिन्दी में काम करने वाले उत्कृष्ट कार्यालयों में गिना जाने लगा। एक दिन राजभाषा विभाग की एक समिति हिन्दी कार्य का निरीक्षण करने हेतु कार्यालय में आई और संस्थान के सभी रजिस्टरों, फाइलों को जांच करने के बाद उन्होनें संस्थान का नाम प्रथम पुरस्कार हेतु चुना और निदेशक महोदय ने उस पुरस्कार का श्रेय कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों को दिया। उस के बाद से आज तक कार्यालय में लगातार हिन्दी में काम करने की प्रथा चल पडी। उन की हिन्दी में कार्य करने की पहल ने पूरे वातावरण को हिन्दी मय बना दिया। सच है कि हिन्दी में सरकारी कार्य को किए जाने की पहल अगर उच्चाधिकारियों से शुरू हो जाए तो कोई कारण नहीं कि कार्यालयों में हिन्दी में कार्य न हो। आइए इस की पहल अपने–आप (स्वयं) से शुरू करें।

ऊषा कत्याल, पदनाम : आशुलिपिक, ग्रेड–एक,
सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, करनाल

पतीले का बच्चा

एक शहर में बर्तनों को बेचने वाला बहुत लालची दुकानदार था। दुकान के व्यवस्थित व हर प्रकार का सामान होने के कारण शहर के कोने कोने से लोग उससे सामान लेने आते थे। बिक्री अधिक होने से दुकानदार अमीर होता जा रहा था। अमीरी आने के साथ–साथ पर उसमें नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही थी। वह किसी की भावना की कद्र नहीं करता था और उसका लालच दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था जिससे जनता बहुत दुखी थी और उन्होंने इसकी शिकायत राजा से कर दी। एक दिन राजा रूप बदल कर उसकी दुकान पर पहुँचा और दुकानदार से दो पतीले खरीद लाया। पतीले बड़े बड़े होने की वजह से दुकानदार को भी ध्यान था कि मैंने इस व्यक्ति को दो पतीले बेचे हैं। कुछ महीने के बाद राजा दुकानदार के पास गया और एक छोटा सा पतीला दुकानदार के आगे रखकर बोला कि मैं दो पतीले आपसे खरीद कर ले गया था। इन पतीलों ने इस छोटे से पतीले को जन्म दिया है और आप इसे रख लीजिए, ये आपका है। दुकानदार ने भी वह पतीला अपने पास रख लिया। दुकानदार ने राजा को उस छोटे पतीले के बदले राजा को कुछ भी नहीं दिया। कुछ समय बाद राजा एक बड़े वाला पतीला दुकानदार के पास ले गया और कहने लगा कि ये पतीला वापिस ले लो और मेरे पैसे मुझे लोटा दो। दुकानदार ने कहा–"मैं आपकी पूरी राशि वापिस नहीं कर सकता, क्योंकि आप दो पतीले लेकर गये थे। तो राजा ने कहा कि उनकें से एक पतीला मर गया है। इस पर दोनों के बीच पैसे को लेकर बहुत बहस हुई। तब राजा ने कहा कि जब मैं छोटा पतीला लेकर आया था, तब भी तुमने उसके बदले मुझे कुछ वापिस नहीं किया थे और उसके पैसे भी अपनी जेब में रख लिए थे। और अब जब एक पतीला मर गया है तो उसके पैसे आपको लौटाने ही पड़ेंगे। इस बीच दुकानदार को उसके नौकर ने चुपके से उसके कान में यह बता दिया कि ये राजा हैं और ये सारी गतिविधियां उसके लालच को जनता के सामने उजागर करने के लिए की गई है। इसपर वह बहुत शर्मसार हुआ और उसने राजा से अपने धूर्तता के लिए क्षमायाचना की और आगे से सादगी व नैतिक मूल्यों पर आधारित दुकानदारी करने का संकल्प लिया।

सुभाष कुमार, आशुलिपिक, ग्रेड–एक,
एम एस एम ई विकास संस्थान, करनाल

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

"माध्यम"

रेल अपनी पूरी रफ्तार पर थी। ए.सी. फर्स्ट क्लास का डिब्बा था। चार लोग एक कंपार्टमेंट में बैठे बातचीत कर रहे थे।

प्रथम व्यक्ति : अजी, सरकार के भी अजीब चोंचले हैं। जबरदस्ती हिन्दी थोपती है। कहती है कार्यालयों में सारा काम हिन्दी में करो।

दूसरा व्यक्ति : सही फरमा रहे हैं जनाब। अजी हिन्दी भी कोई भाषा है। बेमतलब के आफत डाल दी है गले में।

तीसरा व्यक्ति : इतना ही शौक है हिन्दी में काम करवाने का सरकार को, तो राजभाषा को क्यों न राष्ट्रभाषा ही घोषित कर दें।

चौथा व्यक्ति : जो एक हिन्दी उपन्यास पढ़ने में व्यस्त था अचानक से बोला– साहब ठीक कह रहे हैं।

लेकिन हम चारों के संवाद का माध्यम तो हिन्दी ही है। ....

रेल अपनी पूरी रफ्तार पर थी पर कंपार्टमेंट में शांति थी।

ध्रुव ज्योति, प्रबंधक (विधि)
केनरा बैंक, करनाल

अपना समय अच्छाई में व्यतीत करो

हमें अपना समय अच्छे कार्य करके व्यतीत करना चाहिए चूंकि हम अच्छे कर्म करेंगे तो इसका प्रभाव हमारे पड़ोस, वातावरण, समाज में जरूर दिखाई देगा, यदि हम अच्छे कार्यों की सूची बनाएं तो बहुत लम्बी सूची बन जाएगी। मैं कुछ अच्छे कार्यों का बखान यहां करना चाहूंगा :–

(1) ईश–स्मरण :–सर्वप्रथम इन्सान को उठने के बाद तथा नित्यक्रम पूर्ण करने के उपरांत भगवान के नाम का सुमिरन 15 मिनट अवश्य करना चाहिए। इस समय को आप बढ़ा भी सकते हैं। क्योंकि जितना अधिक आप सुमिरन करेंगे उतनी ही परमात्मा आपको खुशियाँ देगा और उतना ही आपका आत्मबल बढ़ेगा। शास्त्रों में भी कहा गया है कि आत्मबल सफलता की कुंजी है। आप आत्मबल के सहारे प्रत्येक कार्य में सफलता हासिल करेंगे।

(2) रक्तदान करना चाहिए :– हर इन्सान को 3 माह के अन्दर रक्तदान अवश्य करना चाहिए। इससे दूसरों को जीवनदान तो मिलता ही है तथा स्वयं का स्वास्थ्य भी ठीक रहता है।

(3) पौधारोपण करना :– हर मनुष्य को कम से कम एक पौधे का रोपण अवश्य करना चाहिए। इससे हमें ताजी हवा मिलती है तथा वातावरण शुद्ध रहता है।

(4) आंखें दान करना :– हमें मरणोपरांत अपनी आँखें दान करनी चाहिए। ऐसा करके आप किसी नेत्रहीन व्यक्ति को रोशनी या कहें जीवन दे सकते हैं।

(5) देह–दान करना :– हमें मरणोपरांत अपना शरीर दान करना चाहिए। इसके लिए आप जीते जी काम कर सकते है। हमारा मृत शरीर पीजीआई में शोध के काम आ सकता है और शरीर का कोई अंग किसी जरूरतमंद व्यक्ति को भी लग सकता है।

(6) स्वच्छता अभियान :– स्वच्छता एक सामाजिक कार्य है। स्वच्छता से हमारा वातावरण साफ–सुथरा रहता है और हमारा अपना कार्य करने में खूब मन लगता है।

(7) विधवा विवाह कराना :– यदि कोई स्त्री कम उम्र में विधवा हो जाती है और आप उसकी शादी करवा देते हैं तो यह एक सामाजिक कार्य होगा।

(8) लड़का–लड़की एक समान समझना :– हमें अपनी पुत्री व पुत्र को एक समान समझना चाहिए और उनमें भेदभाव नहीं करना चाहिए।

(9)फूड बैंक बनाना :– हमें मिलकर एक फूड बैंक बनाना चाहिए। इसमें हम सभी अपना–अपना योगदान दे सकते हैं और किसी गरीब परिवार को राशन दे सकते है। वह परिवार आपको सदा याद रखेगा यानि आपको दुआएं देता रहेगा।

इनके अलावा और भी बहुत अधिक मानवीय भलाई के कार्य हैं। जैसे एक छोटा सा कार्य है किसी अंधे व्यक्ति को सड़क पार करवाना, दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को हस्पताल पहुचांना, गिरे हुए व्यक्ति को उठाना इत्यादि। हमें भलाई के कार्य करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

सुभाष कुमार, आशुलिपिक, ग्रेड–एक,
एम एस एम ई विकास संस्थान, करनाल

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

भावना

युद्ध की समाप्ति के पश्चात् श्रीराम अपनी सेना के बीच में विचार–विमर्श कर रहे थे व सभी को बराबर पुरस्कार वितरित कर रहे थे। इस पर सबने श्रीराम से यह पूछा कि आप वानर सेना व एक गिलहरी को एक समान मान सभी को पुरस्कार क्यों बाँट रहे हैं। श्री राम जी ने यह कह कर सभी को समझाया कि आपकी बात बिल्कुल ठीक है कि आपने भारी भरकम पत्थर उठाकर व अन्य भारी सामान उठाकर युद्ध को जितवाने में मदद की। परंतु आपने जो पत्थर व सामान उठाये वे आपके शरीर के अनुरूप थे। वहीं यह गिलहरी जब लंका के लिए सेतु का निर्माण हो रहा था तो जितनी भी रेत इसके शरीर से लग जाती थी वह लेकर समुंद्र में चली जाती थी और इसने जब तक सेतु का निर्माण पूर्ण नहीं हो गया ऐसा ही किया। परंतु इसकी सेवा की भावना बिल्कुल आपके जैसी ही थी। इसलिये यह पुरस्कार की बराबर की हिस्सेदार है। श्री राम जी का यह उत्तर सुनकर सभी निरूत्तर और सन्तुष्ट हो गए। किसी ने सच ही कहा है कि कोई भी कार्य हो उसकी पीछे की भावना शुद्ध व निर्मल होनी चाहिए। यहाँ मेरा यह अनुरोध भी है कि हिन्दी में कार्य करने की भावना पुरस्कार तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, क्योंकि हिन्दी में कार्य करना देश की सेवा करने जैसा है। इसी राष्ट्र भावना के कारण ही चीन व जापान जैसे देश महाशक्ति कहलाते हैं।

मनजीत सिंह, अवर श्रेणी लिपिक,
भाकृअनुप–राडेअनुसं.(एनडीआरआई), करनाल

माँ की ममता और यमराज

एक दिन एक बच्चा गहरी नींद में सो रहा था। सपने में उसने देखा कि यमराज उसकी माँ के प्राण हरने आ रहे हैं। उसकी नींद खुली तो उसने देखा कि यमराज उसके सामने खड़े हैं। बच्चा यमराज को देखकर डर गया, लेकिन हिम्मत करके बोला कि वह उनसे एक सौदा करना चाहता है। उसने सौदे का प्रस्ताव रखा कि वे उसकी माँ की जगह उसके प्राण ले जाएं और उसकी माँ को जीवनदान दे दें। यमराज ने मुस्कराते हुए प्रत्युत्तर दिया कि वे तो उसके ही प्राण लेने आये थे, लेकिन उससे पहले यह सौदा उसकी माँ ने करके अपने पुत्र के प्राणों को बचा लिया था। किसी ने सही ही कहा है कि माँ, माँ होती है। माँ से बढ़कर कुछ नहीं, वह चाहे जन्म देने वाली माँ हो या धरती माँ।"

जालम सिंह चौहान, निपुण सहायक कर्मचारी
भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

तीन गुरू

एक गांव में एक बहुत प्रभावशाली महंत रहा करते थे। उनके बहुत से शिष्य थे। वह अपने सभी शिष्यों को हमेशा प्रेरणादायक कहानियाँ सुनाया करते थे। आसपास के कई गांवों में सभी उनको अच्छे से जानते थे और उनका बड़ा ही आदर–सत्कार किया करते थे। एक बार एक शिष्य ने पूछा–महंत जी आप किस गुरू की पूजा करते हैं या आपके गुरू कौन हैं ? शिष्य की बात को सुनकर पहले तो वे बहुत मुस्कुराए और फिर उन्होंने कहा–मेरे वैसे तो बहुत गुरू हैं, यदि मैं सभी के नाम बताऊँ तो बहुत ज्यादा देर हो जाएगी। लेकिन मेरे तीन प्रमुख गुरू हैं। जिनका नाम मैं तुम्हें जरूर बताऊंगा। एक बार घूमते–घूमते मैं अपना रास्ता भटक गया और एक अनजान गाँव में चला गया। रात्रि हो चुकी थी, तथा सभी के घर बंद थे। मुझे सोने के लिए कोई भी जगह नहीं मिल रही थी। तभी मैंने एक आदमी को एक घर की दीवार पर कूदते देखा। मैं उसके पास गया और बोला–क्या मुझे आपके घर में सोने के लिए जगह मिलेगी। उस व्यक्ति ने कहा कि आप यहां पर रह सकते हो। मैं एक चोर हूँ और अब अपने काम पर जा रहा हूँ। आप यहाँ पर साधना करो और यह कहकर वह वहाँ से चला गया। जब सुबह वह आया तो मैंने उससे पूछा कि आपको क्या मिला ? उसने कहा आज नहीं मिला तो क्या हुआ, कल तो कुछ न कुछ मिल ही जाएगा। मैं उसके घर एक महीना रहा और एक महीना उसने रोज यही कहा, फिर मैं वापिस अपने गांव लौट आया। उस चोर से मुझे कभी निराश नहीं होने की सीख मिली। जब भी मैं गहरी साधना में बैठता हूँ तो कई बार ऐसा समय भी आता था, जब मैं निराश हो जाता था कि इस साधना से मुझे कुछ नहीं मिलता, पर तभी मुझे उस चोर का ध्यान आ जाता था जो कहा करता था कि–भगवान ने चाहा तो एक न एक दिन जरूर कुछ मिलेगा। उसका दृढ़ संकल्प मुझे हमेशा याद रहता था और इसलिए मैंने उसे अपना गुरू बना लिया।

गुरू ने बताया कि मेरा दूसरा गुरू है –एक कुत्ता। एक बार मैं बहुत प्यासा एक गावं से जा रहा था, तभी वहां एक प्यासा कुत्ता भी भागा हुआ आ रहा था। वहीं पास में ही एक नदी बह रही थी। कुत्ता बार–बार उसके पास जाता और वापिस हो जाता। वह अपनी परछाई देखकर यह समझता था कि पानी में एक और कुत्ता भी है। इसी सोच से वह डर जाता था। लेकिन थोड़ी देर में उस कुत्ते ने पानी में छलांग लगा दी और उसकी परछाई और उसका डर दोनों ही गायब हो गये। उसी समय मुझे भी यह बात समझ में आ गई कि जब तक हम किसी चीज से डरते रहेंगे तो कुछ नहीं कर सकते और यदि हम साहस के साथ डर का सामना करें तो विजय हमारी ही होगी।

गुरू के अनुसार उनका तीसरा गुरू है–एक बच्चा। उन्होंने बताया कि एक बार मैं एक गावं से जा रहा था। मैंने एक बच्चे को हाथ में मोमबती जलाकर मन्दिर की तरफ जाते देखा। वह बच्चा मेरे पास से जा रहा था। मैंने उस बच्चे से हंसते हुए पूछा कि क्या तुमने जब मोमबती जलाई और जब यह बंद थी उसके मध्य में किसी चीज को देखा। उस बच्चे ने मोमबती बुझाते हुए मुझसे कहा कि क्या आपने मोमबती जले समय से बुझते समय के बीच किसी चीज को देखा। मेरा घमण्ड उसी समय टूट गया और मैंने विचार किया कि हमें कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए। इस प्रकार महंत जी ने अपने शिष्य को बताया कि ये तीनों मेरे गुरू है और इन तीनों से मैंने कुछ न कुछ सीखा है। इस लघुकथा का सार यह है कि हमें किसी से भी कुछ अच्छा सीखने को मिले तो जरूर सीख लेना चाहिए। हमें यह नहीं देखना चाहिए कि वह हमसे बड़ा है, छोटा है, पशु है या कोई और। हमें सीखने का भाव हमेशा अपने जीवन में बनाए रखना चाहिए तभी हमारा जीवन सार्थक और सही दिशा में जाएगा।

दीपक यादव, वरिष्ठ तकनीशियन,
भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

दरिद्रता

दरिद्रता इच्छाओं की कोख से पैदा होती है। जिनकी जितनी अधिक इच्छाएं होती हैं, उनको उतना ही अधिक दरिद्र होना पड़ेगा, अर्थात् वे उतने ही अधिक दासता के चक्रव्यूह में फंसते चले जाएंगे। उनको दुःख भी उतना ही अधिक उठाना पड़ेगा। दरिद्रता के निवारण के लिए हमें इच्छाओं की ओर उठने वाले कदमों को कम करना पड़ेगा और दरिद्रता भी उतनी ही कम होती चली जाएगी। जब इच्छाऐं बहुत कम होंगी तो व्यक्ति उतना ही अधिक समृद्ध, सुखी और सन्तुष्ट होगा।

सूफियों के द्वारा अक्सर एक कथा कही जाती है कि एक बार एक फकीर वालशेम ने अपने शिष्य को कहा कि तुम्हें मैं कुछ धन दे रहा हूँ– आपको यह धन किसी दरिद्र को दान करना है। वालशेम फकीर का शिष्य गुरू के पास से कुछ कदम चलने के इसके बाद वह सोचने लगा कि गुरू जी ने मुझे यह धन किसी गरीब को नहीं बल्कि किसी दरिद्र को दान करने के लिए कहा है। शिष्य ने बालशेम फकीर के सत्संग से जाना था कि गरीब या गरीबी परिस्थितिवश होती है और दरिद्र या दरिद्रता मन की स्थिति अनुसार होती है। शिष्य दरिद्र व्यक्ति की तलाश में निकल पड़ा। नगर में दरिद्र की तलाश के चलते चलते वह राजमहल के पास रूक गया। उसने वहाँ राजमहल के पास खड़े हुए कुछ लोगों को आपस में बात करते हुए देखा और वो भी उन लोगों के पास जा कर खड़ा हो गया। वे लोग आपस में बातें कर रहे थे कि राजा ने जनता पर बहुत अधिक कर लगा दिये हैं और इस तरह से उसने प्रजा को लूटने का कार्य किया है। राजा अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्रजा से अत्यधिक कर के रूप में धन एकत्रित कर रहा है। तो उन सभी व्यक्तियों को सुनकर शिष्य ने मन में निश्चय किया कि अब उसकी तलाश पूरी हो गई है और वह राजा के दरबार में चला गया। वहां वह राजा को कहने लगा, कि मैं आपको मेरे गुरू द्वारा दिये गये रूपये आपको दान कर रहा हूँ। उस फकीर के शिष्य की ऐसी हरकत देखकर राजा बड़ा हैरान हुआ और कहने लगा आपने मुझे यह धन क्यों दान किया। शिष्य ने कहा कि जिनकी इच्छाऐं अधिक होती हैं वे उतने ही अधिक दरिद्र होते हैं। मुझे यह धन गुरू जी के कथन के अनुसार किसी दरिद्र को ही दान करना था इसलिए उसके उपयुक्त मैंने आपको ही पात्र पाया। राजा एक क्षण को झेंप गया, किन्तु उसे गुरू की दूरदर्शिता समझ आ गई। वह इससे बहुत प्रभावित हुआ और उसने अपनी दरिद्रता को कम करने के लिए अपनी इच्छाओं को कम करने का निश्चय किया और उसने अपने राज्य में करों को कम करना शुरू कर दिया। इससे उसके राज्य की प्रजा में खुशी और समृद्धि बढ़ने लगी। कहने का तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं को कम कर लेता है, उसकी दरिद्रता दुःख, दासता स्वतः ही मिट जाती है।

रमेश कुमार राणा, तकनीकी अधिकारी,
राष्ट्रीय पशु आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, करनाल

असंभव कुछ भी नहीं

एक राज्य में एक राजा था। उसके दो पुत्र थे। विक्रम और अधाधीश। दोनों बहुत ही प्रभावी राजकुमार थे। एक दिन दोनों राजकुमार शिकार के लिए जंगल में गए। दोनों घूमते–घूमते एक नदी के किनारे पहुँचे। दोनों राजकुमारों की इच्छा नदी में स्नान करने की हुई। दोनों नदी में नहाने लगे। विक्रम नहाते–नहाते नदी के तेज बहाव के साथ बह चला। जब अधाधीश ने ये सब देखा तो वह तुरंत नदी से निकलकर बाहर आया और चिल्लाने लगा। तभी उसने लकड़ी का लटठा पानी के प्रवाह के साथ विक्रम की तरफ फेंका। लेकिन विक्रम इतना घबरा गया था कि वह लकड़ी के लटठे को नहीं पकड़ पाया। सारे सैनिक वहां आ गए। सभी को लगने लगा कि अब विक्रम नहीं बच पाएगा।

सभी विक्रम के लिए शोक मनाने लगे। अब तक तो अधाधीश को भी यकीन हो गया था कि विक्रम नहीं बच पाएगा। तभी दूर से उन्हें एक संन्यासी आते हुए नजर आए। उनके साथ एक नौजवान भी था। जैसे ही वो लोग थोड़ा पास आए तो देखा वो नौजवान, विक्रम ही था। सभी खुशी से झूमने लगे। तभी अधाधीश ने पूछा कि विक्रम इतना बहाव होने के पश्चात भी तुम कैसे बच गए। तभी संन्यासी ने उत्तर दिया कि विक्रम तो पानी के साथ बह ही जाता। किन्तु जब पानी के बहाव के कारण विक्रम काफी आगे आ गया था तो उसको उस स्थान पर कोई यह कहने वाला नहीं था कि "तुम नहीं कर सकते इसलिए उसने स्वयं पर विश्वास रखा ओर लकड़ी के लट्ठे को पूरे प्रयत्न के साथ पकड़ा। इस प्रकार विक्रम ने अपने प्राणों की जान बचाई। भावार्थ यह है कि इस संसार में असंभव कुछ भी नहीं है। किन्तु कभी–कभी हम अपनी क्षमताओं का आंकलन दूसरों के कहने से करने लगते हैं। जब कोई हमसे कहता है कि ये कार्य तो असंभव है तो हम उसे असंभव और दुष्कर मान लेते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि हमें स्वयं के अंदर छुपी क्षमताओं को पहचानना है और प्रत्येक असंभव कार्य को संभव करके दिखाना है।

तभ तो कहा गया है कि –" मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।।"

नीरू त्यागी, प्रशासनिक अधिकारी
युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
मंडल कार्यालय, करनाल

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

धर्म

वैसे तो भारतवर्ष में विभिन्न धर्म व उनके संरक्षक के रूप में विभिन्न धर्म गुरू रहे हैं और समयान्तराल के साथ–साथ नये गुरूओं व संरक्षकों का प्रादुर्भाव होता रहा है। हमारा देश भारत वैसे भी धर्म निरपेक्ष देशों की श्रेणी में सर्वोपरि है। धर्म की स्थापना का उद्देश्य सम्भवतया यही रहा होगा कि अपने मानवीय मूल्यों, गुणधर्मों को व्यवस्थित व सुचारू बनाये रखने के लिए हमें जिस प्रकार से किसी संस्था या संगठन से जुड़े रहने की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार वैयक्तिक, सामाजिक व धार्मिक मूल्यों को सतत् व सुसभ्य तथा क्रमागत रूप में संजोये रखने के लिए हमारे धर्मगुरूओं ने इस सृष्टि के प्रारंभिक दौर से ही यह महसूस कर लिया था कि मानव जाति को एक सूत्र में पिरोये रखने के लिए जो साधन सर्वोत्तम हो सकता है वह मात्र धर्म व उससे जुड़ी आस्था हो सकती है। इसी क्रम में भारतवर्ष के परिप्रेक्ष्य में हम यह पाते हैं कि हमारे देश में वैदिक सनातन संस्कृति को सर्वोत्तम मानकर इसे समाज, देश व मानवता के सर्वोत्तम उत्थान के लिए हमारे धर्म गुरूओं ने अपनाया व अनुयायी बनाये, ताकि वे समस्त भारतवर्ष व विश्व में इसकी स्थापना कर सकें। और तत्कालीन धर्मगुरूओं व उनके अनुयायियों को इसमें काफी हद तक सफलता भी मिली। लेकिन कालान्तर में इसमें तत्कालीन परिस्थितियोंवश अनेकों त्रुटियाँ व्याप्त होती चली गई, जिससे मूल धर्म (वैदिक) से अनेकों अनुयायियों द्वारा कुण्ठित मन से अपने को अलग करते हुए अपने–अपने संप्रदाय बना लिए गए, जिसके परिणामस्वरूप हम पाते हैं कि हमारे देश में ही वैदिक परम्परा का जो विशाल रूप प्रारम्भिक तौर पर था, वह असत्य मत व मतान्तरों के रहते अपना मूल स्वरूप खोकर प्रायः लुप्त हो चला है। उसका प्रारम्भिक कारण जातिवाद, भेदभाव, छुआछूत आदि के कारण त्रस्त लोगों ने अपनी आत्मिक व धार्मिक संतुष्टि की पुष्टि जहाँ मिली, वह वहीं पर अपनी सुविधानुसार अपने को अन्य धर्मों व मतों से जोड़ते चले गए। जिसका परिणाम यह हुआ कि विशाल वैदिक धर्म टूटा और अनेकों धर्मों व मतों में विभक्त होकर बिखर गया। जब इस प्रकार की स्थिति होती है तो स्वाभाविक तौर पर कुछ स्वार्थी या चालाक लोग मौके की तलाश में अपने को ऐसे लोगों से जोड़ते चले जाते हैं जो कि भटकाव की स्थिति में होते है। त्रस्त लोगों को ऐसे लोग प्रलोभन, मनलुभावन सपनों के झांसे में लेकर स्वयं उनके रक्षक, संरक्षक आदि बनकर या यह कहें कि वे ऐसे लोगों की फौज लेकर स्वयं को अपना अलग मत घोषित करके स्वयं उस समूह के धर्म गुरू आदि बनकर बैठ जाते हैं और उन लोगों द्वारा ठगे भी जाते हैं। इसी प्रकार वर्तमान रूप में हमारे देश में विभिन्न धर्मगुरूओं व सतावलम्बियों के गुरू के रूप में जहाँ देखो वहीं एक फौज नजर आ रही है। यहाँ तात्पर्य है कि ऐसे धर्म गुरूओं द्वारा त्रस्त व क्षुब्ध लोगों का धर्म व मतों की आड में शोषण किया जाता है। परिणामस्वरूप हमने देखा है कि ऐसे धर्मगुरूओं को उनकी परिस्थिति स्वरूप भारतीय दण्ड व्यवस्था के अनुरूप जेल के सीखचों के पीछे जाना पड़ा है। जिससे आम मानस के मस्तिष्क में धर्मगुरूओं के प्रति आक्रोश की भावना पनपती जा रही है व धर्म आस्था को ऐसे लोगों द्वारा काफी नुकसान पहुंचाया जा रहा है। निष्कर्ष के तौर पर यही कह सकते है कि हमें अपनी आस्था व धार्मिक भावनाओं को प्राचीन मूल्यों व अपनी परम्पराओं से जोड़े रखने की महती आवश्यकता है ताकि हम अपने धार्मिक मूल्यों को बरकरार रख सकें ताकि वर्तमान स्वरूप में अपने देश को यथाशीघ्र व पुनः विश्व गुरू के पद पर शोभायमान कर सकें।

मुकेश कुमार तोमर,
वरिष्ठ तकनीशियन, दूरदर्शन केन्द्र, करनाल

मच्छर और गर्मी

गर्मी आई–गर्मी आई,
साथ में अपने मच्छर लाई।
घर में मच्छर बाहर मच्छर,
घर के चारों ओर मच्छर।
इतने मच्छर कहाँ से आये,
सोच–सोच कर सिर चकराए।
गर्मी तो हो रही भयंकर,
मच्छरों ने कर रखा है तंग।
क्वाइल लगाएं, रैकेट पकड़े,
हिट डालें या जैकेट पहने।
हैं बड़ी परेशानी में हम,
इनसे बचने में ही है हल।

झलक कुशवाहा
केन्द्रीय विद्यालय, करनाल

गजल

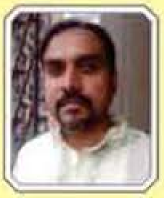

गजल, गजल नहीं होती,
जब तक आँखे सज़ल नहीं होतीं
ज़ज्बातों की आँधी होती हैं
ये किसी की नकल नहीं होती
दिल को छू नहीं पातीं, जब तक
कहानी असल नहीं होती
मन जब चाहे तैयार कर डालो
ये वो फसल नहीं होती
प्रस्फुटन है ये भावों का
किसी जिंदगी का दखल नहीं होती
गजल, गजल नहीं होती
जब तक आँखे सजल नहीं होतीं।

वाजिद अली (कलाध्यापक)
जवाहद नवोदय विद्यालय, सग्गा (करनाल)

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

माँ

मानव इतिहास में धर्मस्थलों का महत्व किसी भी विषय से कहीं ऊपर है। मंदिर, मठ, मस्जिद, एवं कई धर्मस्थल कब से हमारी इस पावन धरती पर हैं। पर यह मंदिर–मठ आए कहाँ से। ऐसा क्या हुआ कि सर्वव्यापी ईश्वर को मूर्ति बनाकर मंदिरों में रखने की आवश्यकता पड़ गई।

मोहन अपनी माँ से बहुत प्रेम करता है। सिन्धु नदी के घाट पर पानी की लहरों को देखता हुआ मोहन यही सोचता कि यदि उसकी माँ उसके साथ न होती तो क्या होता। अपनी सभ्यता को मानते हुए, मोहन भी पेड़, फूल, नदी, पर्वतों को पूजता। पर मन में एक ही विचार आता कि बूढ़ी होती माँ को किसकी पूजा कर वह सदा के लिए अपने साथ रख पाता।

सिन्धु सभ्यता के लोग अब तक 33 कोटि देवी देवताओं से अवगत न थे। सिन्धु सभ्यता को यह सिखाने वाला था– मोहन। शिकार करने मोहन अपने कबिले के कुछ श्रेष्ठ तलवारबाजों के साथ घने जंगल में चला गया। शिकार करते–करते मोहन अपने साथियों से अलग हो जंगल में भटक गया। जंगल में मोहन मिला एक साधु से। साधु भी ऐसा जिसे देख कर यह पता चल जाए कि वह कई वर्षो से तप कर रहा है। लम्बी दाढ़ी, बिखरे बाल, धूल से सना शरीर। साधु निरन्तर ओम का जाप कर रहा था। मोहन को यह ओम शब्द सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। मोहन ने साधु तो देखे थे जो कि कुछ बड़बड़ाते रहते थे, जो मोहन की समझ में न आता। परन्तु अब जो मोहन सुन रहा था वो बहुत ही मधुर था। एक ऐसा शब्द जो मन में शंति का अनुभव कराए। मोहन की जिज्ञासा बढ़ी और वह साधु को जगा कर उनसे प्रश्न करना चाहता था। कई प्रयास किए पर कोई सफलता नहीं। हार कर मोहन ने साधु के शरीर की धूल साफ करनी शुरू की। अपने शरीर पर कई वर्षों की धूल साफ होने के भाव को अनुभव करते हुए साधु ने अपनी आँखें खोलीं। साधु को लगा कि जिस शब्द का उच्चारण वह निरन्तर कई वर्षों से कर रहा है वह ईष्ट देव अब उसके सामने प्रकट हो गए हैं। आँखें खोल साधु ने देखा एक साधारण से मोहन को। अपनी वर्षों की तपस्या को व्यर्थ जाते हुए देख साधु को क्रोध आया। साधु के क्रोध की अग्नि उसके मुखमंडल पर लाल लपटों की तरह दहक रही थी। साधु ने मोहन से कहा कि पिछले 151 वर्षों की तपस्या भंग कर मोहन ने अपनी मृत्यु बुलाई है। मोहन डर गया और साधु से क्षमा माँगने लगा। पर साधु नहीं माना और कहा " जिस पावन मिट्टी को व्यर्थ धूल समझ कर तू मेरे शरीर से हटा रहा था, उसी धूल में मैं आज तुझे मिला दूंगा"। कई दिनों से भटके हुए मोहन को ढूढने पूरा गाँव जंगल में इधर–उधर घूम रहा था। मोहन की माँ अपने बेटे से मिलने को आतुर थी। साधु की बात सुनकर डरा हुआ मोहन जोर से चिल्लाया 'माँ'। यह शब्द सुनते ही मोहन की माँ उस दिशा में भागने लगी। पसीने से भीगा हुआ मोहन अपनी माँ को देख, प्रसन्नता से उससे लिपट गया। साधु अब भी क्रोध से दहक रहा था। मोहन की माँ ने साधु से क्षमा माँगी और विनती की कि वह मोहन के स्थान पर उसे धूल में मिला दे। साधु ने मोहन की माँ कि यह विनती मान ली और एक मंत्र के उच्चारण से उसे धूल में मिला दिया। मोहन धूल की उस ढेरी पर आँसू बहाने लगा। मोहन के आँसू धूल में मिल गए। वह पावन मिट्टी एक मूर्ति की आकृति बनने लगी। देखते ही देखते वह धूल एक सुन्दर देवी की मूर्ति बन गई। गाँव के लोग और मोहन आश्चर्य से उस मूर्ति को देख रहे थे। एकाएक तेज प्रकाश चारों ओर भर गया और साधु स्वयं महादेव में बदल गए। मोहन और सब लोग हाथ–जोड़कर इस अलौकिक दृश्य को देख रहे थे। भगवान शिव ने मुस्कुराते हुए मोहन से कहा, "हर जगह तुम केवल एक ही कामना करते थे कि तुम्हारी माँ सदा के लिए तुम्हारे साथ रहें। मृत्यु लोक में ऐसा संभव नहीं, इसीलिए मैं तुम्हारी माँ को मूर्ति बनाकर सदा के लिए तुम्हारे साथ रहने का वरदान देता हूँ।" ऐसा कह कर महादेव अदृश्य हो गए।

सिन्धु सभ्यता में देवी माँ की मूर्ति पूजा का यह था कारण। ईश्वर सभी जगह नहीं हो सकते इसीलिए उसने माँ बनाई। और सबको माँ का प्रेम मिल सके इसीलिए एक मंदिर बनवाया–जहाँ सबकी देवी माँ निवास करती हैं।

प्रियंका देवी, स०क्षे०तृ (तक.),
भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, करनाल

मन की एकाग्रता

एक दिन स्वामी विवेकानन्द एक नदी के किनारे टहल रहे थे। उन्होंने देखा कि पुल पर कुछ नवयुवक खड़े होकर नदी में पानी की धार में तैरते हुए अण्डों पर बन्दूक से निशाना लगा रहे थे। अण्डे एक धागे की डोर से बन्धे हुए थे, जिससे कि वे पानी में बह न जाएं। दूसरे छोर पर एक पत्थर से डोर बंधी हुई थी। अण्डे पानी की धार से इधर–उधर हिल–डुल रहे थे, जिससे कि नवयुवकों को निशाना लगाने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था। पर किसी भी अण्डे पर निशाना नहीं लगा। नवयुवकों के इस असफल प्रयास को देखकर विवेकानन्द जी मुस्करा रहे थे। एक नवयुवक ने स्वामी जी को मुस्कराते देखकर व्यंग्यात्मक आवाज में कहा आप हम पर हँस रहे हैं, यदि आप में क्षमता है तो आप ही निशाना लगा दीजिए। स्वामी जी बोले लाओ भाई हम भी प्रयास करते हैं। स्वामी जी ने एक, दो नहीं वरन् एक–एक कर सभी दर्जनभर अण्डों पर सटीक निशाने लगाए। निरंतर आश्चर्य से देखते हुए नवयुवक एक ही स्वर में बोले आप–एक कुशल निशानेबाज लगते हैं। विवेकानन्द ने मुस्कराते हुए कहा कि मैंने अपने जीवन में पहली बार बन्दूक पकडी है। विवेकानन्द ने उन नवयुवकों को यह सन्देश दे दिया था कि लक्ष्य साधने की सफलता अभ्यास से अधिक मन की एकाग्रता पर निर्भर करती है।

जालम सिंह चौहान, निपुण सहायक कर्मचारी
भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

भारत–एक कहानी'

यूनान, मिश्र, रोमां सब मिट गए जहाँ से,
बाकि अभी तल्क है नामो निशां हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।।

अमूमन भारत की विविधता में एकता देखती हूँ तो यह विचार जहन में सबसे पहले आता है। हमारा देश अनेक छोटे राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों को एकता, स्नेह से परोये गए पुष्प हार की तरह है, जहां प्रत्येक मोती जैसे पुष्प की अपनी मूल्यता है पर फिर भी सब समान स्तर पर है ना कोई बड़ा ना कोई छोटा।

आजकल देश में उमड़े हालातों को देख कर कभी दिल भयभीत भी होता है और कभी कुछ खास समाचारों को सुनकर संतोष भी होता है। पर भविष्य क्या है और कैसा होगा ऐसा सोचते–सोचते नींद आ गयी। मेरा भविष्य का भारत एक सपना दिखा रहा है, जो इस प्रकार है। एक किसान जो विदर्भ में रहता है, वर्षा ना होने से व्याकुल है, वहीं उड़ीसा, आंध्रप्रदेश में किसान वर्षा की बाढ़ की स्थिति से भयभीत है। सरकार ने उपाय निकाला, क्यों ना हम नहरें बना कर इन क्षेत्रों को जोड़ें ताकि वर्षा का पानी हर जगह सामान रहे। और किसानों को कोई परेशानी ना हो। गांव, कस्बे, बड़े–बूढ़े सबको यह विचार पसंद आया और उन्होंने इस प्रयास को सराहा। कार्य को पूरा करने के लिए एक बड़ी मात्रा में पैसों की आवश्यकता पड़ी। पर जब काम में लगन, मेहनत और बड़ों का आशीर्वाद हो तो कोई भी परेशानी बड़ी नहीं होती। सरकारों व प्रांत के लोगों ने एवं देश के बड़े उद्योगपतियों ने भी इसमें सहायता प्रदान करने का प्रण किया। अब समस्या श्रम व्यवस्था की भी थी। जब बात मेहनत की आती है तो किसान से ज्यादा मेहनती कौन हो सकता है। सब किसानों ने बड़े, बूढ़ों, बच्चों, महिलाओं ने कमर कस ली अब यह नवयुग का आंदोलन बन चुका था। शहरों में गए हुए युवाओं ने भी सोचा, यह वक्त अपने गांव के लिए कुछ करने का है, हम भी श्रम दान करेंगें। नहर बनाने का शिलान्यास हुआ, उस दिन वर्षा भी हुई। सबने इसे ईश्वर का प्रसाद माना और लग गए काम पर। इतनी भारी संख्या में श्रमिकों को संभालना मुश्किल काम था इसलिए श्रमिकों को तीन गुटों में बांट दिया गया। सबको बराबर समय का काम एवं आराम का समय निर्धारित कर दिया गया। सबको कामों के विभिन्न स्तरों पर भी बांटा गया। देखते–देखते कार्य युदध स्तर तक का हो गया। लोग दूसरे प्रांत से भी आते और एक–दो दिन का श्रम–दान करके चले जाते। नहर अब राज्यों की सीमा तक जा पहुँची थी। दोनों राज्यों के किसानों का हर्ष का ठिकाना नहीं था। यह इंद्र देव की कृपा थी कि ना वृष्टि आयी ना तूफान आया। कार्य की निरंतरता उसके पूर्ण होने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। धीरे–धीरे नहर का कार्य पूर्ण होने को आया और अरब सागर, हिंद महासागर में भी मानसून की हवा बहने लगी। कार्य पूर्ण होने के दिन भी वर्षा का प्रसाद लोगों को प्राप्त हुआ। अब वर्षा का इंतजार था। लगातार दो–तीन दिन वर्षा हुई और नहर में जल का स्तर बढ़ा, धीरे–धीरे स्तर बढ़ता गया और उडीसा के तटीय इलाकों से पानी विदर्भ पहुँचा और किसानों ने होली–दिवाली एक साथ बनाई। पूरे राज्य में जश्न का माहौल था। इसमें हर एक आम आदमी की विजय की खुशी थी। अब राज्यों में हो रहे किसान आत्महत्या से सरकार को निजात मिलेगी।

हर खेत में पानी होना, हर किसान की खुशहाली का रहस्य है। दिन में हो रही बारिश के कारण मिट्टी की भीनी–भीनी खुशबू से आँख खुल गयी और दिल में एक आवाज आयी काश यह स्वप्न सच हो जाए। भले ही यह एक स्वप्न था, लेकिन हमें यह मानकर चलना चाहिए कि अगर हम एक समस्या को सिर्फ किसान, मजदूर या सरकार की मान कर चुप रहेंगे तो समाज का कल्याण नहीं होगा। हमें एक सामान्य तरीके से उस समस्या का निपटारा करना चाहिए, मिल–बाँट कर कार्य करने चाहिए।

दीपशिखा श्रीवास्तव, सहायक श्रेणी (तृतीय)
भारतीय खाद्य निगम, करनाल, करनाल

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

मिट्टी के दर्शन

मेरे गांव के समीप ही एक नहर की खुदाई का कार्य काफी लम्बे समय से चल रहा था। रोज गांव के मजदूर भाई अपने–अपने फावड़े लेकर सुबह चल पड़ते थे। नहर की खुदाई के लिए उस दिन भी सभी लगे हुए थे। मैं अपने खेतों से ये सब देख रही थी, क्योंकि आज वर्षों के पश्चात् मुझे अपने खेत में आने का मौका मिला था। जब से मैं शादी होकर शहर आई तब से खेत में जाने का अवसर कम ही मिलता था। बस गाँव में अपने घर से ही वापिस शहर चली जाती थी। वर्षों बाद खेतों में मिट्टी की सौंधी खुशबू मन को बहुत भा रही थी। सारा दिन कैसे बीत गया पता ही नहीं चला।

सांयकाल को मैंने देखा सभी मजदूर अपना दिनभर का कार्य समाप्त करके अपने–अपने घर को निकलने लगे। हम भी उन्हें देखकर घर जाने के लिए तैयारी करने लगे। तभी मैंने देखा एक मजदूर अपने दो छोटे–छोटे बच्चों के कपड़े उतार रहा था, उन्हें नहलाने के लिए। पास ही लगे एक हैण्डपम्प के पास। हमने देखा उस मजदूर ने बच्चों के कपड़े उतारकर उन पर पानी डाला और पास में से ही मिट्टी उठाकर उनके बदन पर रगड़ दी। यह क्या मिट्टी की मिट्टी से ही सफाई। और फिर उस मजदूर ने बच्चों को मिट्टी से रगड़ने के बाद पानी से रगड़–रगड़ कर नहला दिया। बच्चों के नहाने के पश्चात् पास ही मिट्टी में पड़े वही कपड़े फिर से अपने बदन पर पहन लिए, और उनके बदन पर फिर से उतनी ही मिट्टी लग गई। मजदूर ने भी नहाकर वही मटमैले कपड़े पहने और चल पड़ा गांव की ओर। यह सब देखकर हमसे रहा नहीं गया और हम उससे पूछ ही बैठे भाई नहाने का क्या फायदा। आप सब के बदन पर तो फिर से उतनी ही मिट्टी लग गई। हमारी बात सुनकर उन मजदूर ने जो मिट्टी के दर्शन हमें करवाये, वह सुनकर हम माथा पकड़कर बेठे गये। "हमारे बदन पर मिट्टी लगी है तो क्या, हम इसी मिट्टी में पैदा हुये हैं, हम साफ हैं तो भी मिट्टी से और गन्दे हैं तो भी मिट्टी से। हमारा काम भी है मिट्टी और हमारा अन्त भी मिट्टी से ही है। हम सब का अस्तित्व ही मिट्टी है।" मिट्टी के ऐसे दर्शन हमने आज तक नहीं देखे–सुने थे। तभी पास में खड़े दूसरे मजदूर ने आवाज लगाई– "अरे ओ दीना, नहर की थोड़ी मिट्टी साथ ले आना वो पड़ोस वाले काका गुजर गये हैं। जब उनकी अर्थी उठेगी तो थोड़ी मिट्टी साथ में रख देगें।"

वर्षों बाद मैंने मिट्टी के ऐसे दर्शन अपनी आंखों से किये और सच में आज मन बहुत दिन खुश है यह सब देखकर और महसूस करके। इस प्रसंग के माध्यम से मैं शहरों में रह रहे लोगों तक मिट्टी की महक और मिट्टी से प्यार का भाव बताना चाह रही हूँ ताकि वो भी इसे अपने जीवन में मौके आने पर महसूस करें। यह प्रसंग मेरा अपना निजी अनुभव है।

सन्तरा देवी, निजी सचिव
भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान
संस्थान, करनाल

आलस दरिद्रता का कारण

एक गाँव में एक निर्धन किसान रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी और दो बच्चे थे। खेती–बाड़ी में किसान का मन बिल्कुल भी नहीं लगता था। खेत में फसल भी अच्छी नहीं होती थी। किसान बहुत परेशान रहता था। एक दिन किसान के मित्र ने उसे बताया कि पास के जंगल में एक साधु रहता है, वह बहुत धनी है। साधु आपकी अवश्य मदद करेंगे। आप उनकी शरण जरूर जाइए। किसान अगले ही दिन साधु से मिलने चला गया। किसान ने अपनी दरिद्रता के बारे कह सुनाया। साधु ने कहा–हे किसान ! यदि आप मुझे अपनी दोनों आँखें दे दो तो मैं आपको दस हजार रूपये दे दूँगा। किसान ने कहा–नहीं, महाराज मैं आपको अपनी आँखें नहीं दे सकता। बिना आँखों के मैं देखूँगा कैसे? साधु ने कहा ठीक है। यदि आप मुझे अपनी दोनों टाँगें दे दो तो, मैं आपको बीस हजार रूपये दे दूँगा। किसान ने तुंरत कहा–नहीं, महाराज बिना पैरों के मैं चलूँगा कैसे? साधु ने कहा अच्छा तो आप मुझे अपने दोनों हाथ दे दो। मैं आपको पचास हजार रूपये दे दूँगा। किसान ने कहा–नहीं, महाराज बिना हाथों के मैं काम कैसे करूँगा, खेत में हल कैसे चलाऊँगा। साधु ने कहा–बेटा जब आपके पास बहुमूल्य स्वस्थ शरीर है तो आप फिर कैसे गरीब हुए'। किसान साधु के पैरों में गिर गया और क्षमायाचना करने लगा। साधु ने कहा बेटा जब आपके पास देखने के लिए आँखें, चलने के लिए पैर और काम करने के लिए हाथ हैं तो आप गरीब नहीं हो। प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ शरीर होते हुए कभी भी गरीब नहीं हो सकता। बेटा कठोर परिश्रम करो आपकी गरीबी अपने आप दूर हो जाएगी। "व्यक्ति आलस्य करने से निर्धनता को प्राप्त होता है और मेहनती व्यक्ति कभी भी निर्धन नहीं हो सकता", साधु की यह सीख उस किसान को आजीवन याद रही।

विजयपाल सहरावत, प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय, करनाल

नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों द्वारा लिखित उल्लेखनीय सामग्री

ऑनर किलिंग

घर के सूने आँगन में बेटी का शव था। पिता पथराई नजरों से उसे देख रहे थे। तभी बेटी के सिर पर किसी ने हाथ रखा और चौंक कर पिता की नजरें जब उठीं तो देखा वह था। गाँव वालों के बीच खुसुर पुसुर शुरू हो गई। तभी एक आवाज आई कि इसकी यहाँ आने की हिम्मत कैसे हुई। पिता सतर्क हुए और अपने हाथ से इशारा कर बढ़ते हुए लोगों को रोका और उठ खड़े हुए। एकांत में जाकर उन्होंने बिटिया की तस्वीर को देखा। उन मुस्कुराती आँखों में अब उसके डबडबाते आँसू नजर आने लगे और फिर से बिटिया के आखिरी शब्द कानों में गूँजने लगे, "पिता जी मैं अकेले विदा नहीं होना चाहती थी।" यह सोचकर पिता की आँख भर आई पर वह उन आँसुओं को पोंछ कर बाहर चल दिए। बिटिया का शव चिता की ओर ले जाया जा रहा था और वह भी कोने में खड़ा था। अब पिता की आँसुओं का बाँध टूटने लगा था और वह फूट–फूट कर रोने लगे। रोते हुए उन्होंने उन बेबसी भरी निगाहों की ओर देखा और जेब से सिंदूर की डिबिया उसकी ओर बढ़ा दी। हतप्रभ आँखों से उसने डिबिया से सिंदूर निकाल कर उसकी मांग भरी। झुकते हुए उसके चेहरे पर गिरे अपने आँसुओं को पोछा और उसका माथा चूमा। पिता ने भी बिटिया की ओर जाकर झुकी हुई नजरों से माफी माँगी और जलती हुई चिता के साथ अपनी ऊँची जाति के अभिमान को भी जला दिया।

इस लघुकथा का उद्देश्य :

1. जिस तरह समय के साथ मार्ग बदल जाते है उसी तरह पुरानी रीति–रिवाज़ों का बदलना भी अनिवार्य है।
2. मनुष्य की पहचान जाति, जन्म या धर्म के आधार पर नहीं होती। उसका कर्म ही उसकी पहचान है।
3. कट्टर समाज की सोच को बदलना होगा और ऑनर किलिंग के नाम पर हो रही हत्याओं को रोकना होगा।

परमिता नायक, अधिकारी,
केनरा बैंक, करनाल

गुरू की सीख

बहुत दूर एक गाँव में एक गुरू रहते थे। वह एक दिन अपने चेलों सहित गाँव में भ्रमण करने को निकले। भ्रमण के दौरान रास्ते में उन्हें एक दुखी व परेशान सा व्यक्ति मिल गया। दुखी व्यक्ति ने गुरू से पूछा कि हे महाराज! इस गाँव में किस प्रकार के लोग रहते हैं? गुरू ने उस नए व्यक्ति से उसके प्रश्न का कारण पूछा। उसके जवाब में व्यक्ति ने बताया कि वह परेशान होकर पास वाले गाँव से इस गाँव में रहने आया है। इसलिए वह जानना चाहता है कि यहाँ पर लोग कैसे हैं। गुरू ने व्यक्ति के प्रश्न के जवाब में पूछा कि उसके पिछले गाँव में कैसे लोग थे ? व्यक्ति ने बताया कि वहाँ तो सब कपटी और झूठे लोग थे। गुरू ने उस व्यक्ति बताया कि यहाँ भी सब ऐसे ही लोग हैं। थोड़ी देर बाद दूर चलने पर गुरू की टोली को एक और व्यक्ति मिल गया। इस व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए गुरू से पूछा कि महाराज मैं यहाँ रहना आया हूँ क्या आप मुझे बता सकते हैं कि इस गाँव के लोग कैसे हैं? गुरू ने इस व्यक्ति से भी पूछा कि वह जहाँ पहले रहता था वहाँ के लोग कैसे थे? व्यक्ति ने बताया कि वहाँ के लोग तो बहुत ही सच्चे और अच्छे थे। गुरू ने मुस्कुराते हुए कहा कि यहाँ भी ऐसे ही लोग रहते हैं। आश्रम पहुँचकर गुरू के चेलों से रहा नहीं गया और उन्होंने गुरू से पूछा कि आपने दोनों व्यक्तियों को एक प्रश्न के उत्तर क्यों दिए। इस पर गुरू ने बहुत ही सरल भाव से समझाया कि दुनिया में आपको हर प्रकार के लोग मिलेंगे। अच्छाई व बुराई एक साथ रहेगी। आप पर निर्भर करता है कि आप क्या देखना चाहते हैं। पहले व्यक्ति को लोग बुरे व कपटी लगे तो उसे सभी ऐसे लगेंगे। उसी तरह दूसरे व्यक्ति को गाँव में सभी अच्छे लगे तो उसे हर जगह अच्छे लोग ही मिलेंगे। गुरू का जवाब सुनकर सब चेले आश्चर्यचकित रह गए कि इतनी गहरी बात गुरू ने कितनी सरलता से समझा दी।

प्रिया फोगाट, स0श्रे0तृतीय
भारतीय खाद्य निगम, करनाल

बुरे वक्त की जमा पूंजी

एक बार एक किसान ने खेत में फसल उगाई। बारिश की वजह से उसको बहुत नुकसान भुगतना पड़ा, जिससे उसके पास खाने के लिए ग्यारह महीने का गेहूँ ही बचा रह गया। लेकिन एक वर्ष में बारह मास होते हैं। इसलिए किसान को चिंता सताने लगी कि अनाज तो ग्यारह महीने का है एक महीने का अनाज कहाँ से आयेगा। वह पूरा दिन इसी चिंता में घुनने लगा। एक दिन उसकी बहु ने देखा कि पिताजी बहुत चिंता में बैठे है तो उसे रहा नहीं गाया उसने पिताजी से पूछा की पिताजी आप चिंता में क्यों बैठे हो तो उसने बहुत सोच समझ कर अपने बेटे की बहु को कहा कि मेरे को इस बात की चिंता रहती है कि अनाज तो एक महीने का कहाँ से आएगा ग्यारह महीने का ही है तो उसकी बहु ने कहा पिता जी आप चिंता मत कीजिए हमारा काम चल जाएगा तो उसकी बहु ने क्या किया जब भी खाना बनाती तो एक मुट्ठी गेहूँ एक अलग बर्तन में निकाल देती ऐसे करके उनके ग्यारह महीने निकल गये तो बाहरवाँ महीना भी ऐसे ही निकल गया जैसे ग्यारह निकलें तो उसके पिता ने पूछा बेटी हमारे पास तो ग्यारह महीने का अनाज था बारह महीने कैसे निकले तो उसने बताया की पिताजी जब भी मैं खाना बनाती थी एक मुट्ठी गेहूँ दूसरे बर्तन में निकाल कर रख देती इसी वजह से हमारा बारहवाँ महीना भी निकल गया हमे बचत की आदत डालनी चाहिए कभी भी काम आ सकती है।

सारः– इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि बुरे वक्त में जमा पूंजी कभी भी काम आ सकती है। अतः जीवन में बचत की आदत डालें, ताकि किसान की तरह जमा पूँजी बुरे वक्त में काम आ जायें।

निशा, स0श्रे0तृतीय (गोदाम)
भारतीय खाद्य निगम, करनाल

आओ हिन्दी शब्द-प्रयोग सुधारें(संकलित)

हिन्दी लिखने वाले अक्सर 'ई' और 'यी' में, 'ए' और 'ये' में और 'एँ' और 'यें' में जाने–अनजाने भूल करते हैं...।

अतः कहाँ क्या इस्तेमाल होगा, इसका ठीक–ठीक ज्ञान होना चाहिए...।

जिन शब्दों के अन्त में 'ई' आता है वे संज्ञाएँ होती हैं क्रियाएँ नहीं..

जैसेः मिठाई, मलाई, सिंचाई, ढिठाई, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, निराई, गुड़ाई, लुगाई, लगाई–बुझाई...।

इसलिए 'तुमने मुझे पिक्चर दिखाई' में 'दिखाई' गलत है...

इसकी जगह 'दिखायी' का प्रयोग किया जाना चाहिए...।

इसी तरह कई लोग 'नयी' को 'नई' लिखते हैं...।

'नई' गलत है, सही शब्द 'नयी' है...

मूल शब्द 'नया' है, उससे 'नयी' बनेगा...।

क्या तुमने क्वेश्चन–पेपर से आंसरशीट मिलायी...?

('मिलाई' गलत है...।)

आज उसने मेरी मम्मी से मिलने की इच्छा जतायी...।

('जताई' गलत है...।)

उसने बर्थडे–गिफ्ट के रूप में नयी साड़ी पायी...।

('पाई' गलत है...।)

अब आइए 'ए' और 'ये' के प्रयोग पर...।

बच्चों ने प्रतियोगिता के दौरान सुन्दर चित्र बनाये...।

('बनाए' नहीं...।)

लोगों ने नेताओं के सामने अपने–अपने दुखड़े गाये...।

('गाए' नहीं...।)

दीवाली के दिन लखनऊ में लोगों ने अपने–अपने घर सजाये...।

('सजाए' नहीं...।)

तो फिर प्रश्न उठता है कि 'ए' का प्रयोग कहाँ होगा..?

ए' वहाँ आएगा जहाँ अनुरोध या रिक्वेस्ट की बात होगी...।

अब आप काम देखिए, मैं चलता हूँ...।

('देखिये' नहीं...।)

आप लोग अपनी–अपनी जिम्मेदारी के विषय में सोचिए...।

('सोचिये' नहीं...।) नवेद! ऐसा विचार मन में न लाइए...।

('लाइये' गलत है...।)

अब आखिर(अन्त) में 'यें' और 'एँ' की बात...

यहाँ भी अनुरोध का नियम ही लागू होगा...

रिक्वेस्ट की जाएगी तो 'एँ' लगेगा , 'यें' नहीं...।

आप लोग कृपया यहाँ आएँ...।

('आयें' नहीं...।)

जी बताए, मैं आपके लिए क्या करूँ ?

('बतायें' नहीं...।)

मम्मी, आप डैडी को समझाएँ..।

('समझायें' नहीं..।)

अन्त में सही–गलत का एक लिटमस टेस्ट... एकदम आसान सा..

जहाँ आपने 'एँ' या 'ए' लगाया है , वहाँ 'या' लगाकर देखें...।

क्या कोई शब्द बनता है ?

यदि नहीं, तो आप गलत लिख रहे हैं...।

आजकल लोग 'शुभकामनायें' लिखते हैं...

इसे 'शुभकामनाया' कर दीजिए...।

'शुभकामनाया' तो कुछ होता नहीं ,

इसलिए 'शुभकामनायें' भी नहीं होगा...।

सही शब्द शुभकामनाएं होगा ।

'दुआयें' भी इसलिए गलत हैं और 'सदायें' भी...

'देखिये' , 'बोलिये' , 'सोचिये' इसीलिए गलत हैं क्योंकि 'देखिया' , 'बोलिया' , 'सोचिया' कुछ नहीं होते...।

राजभाषा हिन्दी में विभिन्न लोगो

यादों का कारंवा

कुछ लोग ज़िंदगी में इस कदर आते हैं
कि वो हमारी, ज़िंदगी बन जाते हैं
जिस दिन हमसे वो दूर जाते हैं
दिल को एक गहरा–सा ज़ख्म दे जाते हैं
जब–2 उन याद भरे लम्हों की बात आती है
तब–2 दोस्तों की बारात याद आती है
सोचकर वो साथ बिताए हुए लम्हे
आँखों में एक तन्हाई–सी भर आती है
वो कहते हैं न, दिल के रिश्ते बड़े अज़ीब होते हैं
दूर रहकर भी करीब होते हैं
जिनके पास होते है यार और उनकी यारी
वो अक्सर बहुत खुशनसीब होते हैं
उनके साथ उठना उनके साथ बैठना
उनके साथ हँसना उनके साथ रोना
कभी रूठना तो कभी उनका मनाना
ऐसे जीते थे हम;
थी मौज मस्ती और यारों का याराना
लगता है सब रूठ गए
क्यूं? वो साथ छूट गए
जिनके सहारे जीते थे हम
क्यूं वो सात सालों के साथ, एक पल में टूट गए
यादों का कारवां कोई आसानी से बना नहीं सकता
लिखा है जो उस खुदा ने वो कोई मिटा नहीं सकता
यादों की दीवार तो इतनी मज़बूत होती है दोस्तों;
मज़हबों का तूफां भी उसे गिरा नहीं सकता।

प्रिया शर्मा
कक्षा–ग्यारवी (ए)
जवाहर नवोदय विद्यालय
सग्गा, करनाल

मुस्कुराते हसगुल्ले

पतिदेव शयन कक्ष में बैठे लेपटाप पर काम रहे थे। पास ही बिस्तरे पर आराम से बैठर पत्नी जी मोबाइल में व्यस्त थीं। अचानक पति के मोबाइल पर मैसज की रिंग टोन बजी। मोबाइल रसोईघर में फ्रीज के ऊपर चार्जिंग पर लगा था। पति झपट कर मोबाइल के पास पहुंचा और चेक किया तो उस पर पत्नी का मैसेज था। 'कृपया आते हुए फ्रिज मे से पानी की बोतल उठाते लाना'–तुम्हारी अपनी।''

कविता

शिक्षक (Teacher)

पहली शिक्षिका बनती माँ, जननी मेरी,
निर्देशित करती पकड़ उँगलियाँ मेरी,
रिश्तों को बुनती, बचपन से चुनती दिशा मेरी,
क ख ग से शुरू करती क्ष त्र ज्ञ तक,
पूरी करती शब्दों की कड़ियाँ मेरी,
गिनती सिखलाती जिससे पूरी होती अंकों की संख्या मेरी,
ज्ञान के आंगन में गुरूओं तक पहुंचाती ममता तेरी,
बढ़ती आयु पर संस्कार सिखाती माता मेरी,
जिससे संकलित होती जाती शिक्षा मेरी,
दूसरी गुरूओं की वाणी से नित होता ज्ञानार्जन,
जिससे मस्तिष्क मेरा बनता पावन,
राह दिखाते गुण सिखाते,
जिससे अवलोकित होती यश तुम्हारी,
जो ज्ञान सहज सिखलाते हैं,
शिक्षक वे कहलाते हैं,
ये शिष्य तेरा हो चहुँमुखी उत्थान,
इस शुभाशीष से बिखेरो अपना पूरा ज्ञान,
पायें इसमें गौरव का स्थान,
सुनहरी होगी तेरी जिन्दगी,
बढ़ेगा देश का गौरव मान,
याद करोगे गुरू शिक्षा,
जब पाओगे सबसे सम्मान,
ये माता तू धन्य है,
ये शिक्षक तू धन्य है,
जो तूने संवारी मेरी ये सुलभ जिन्दगानी,
बचपन से बुढ़ापे तक जो करता तेरा गुणगान,
इसलिए सब कहते,
ये शिक्षक तू तो ईश्वर से भी ज्यादा महान।
ये शिक्षक तू तो ईश्वर से भी ज्यादा महान।।
धन्यवाद !
'जय हिन्द' ....

डा. मगन सिंह, प्रधान वैज्ञानिक
भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल

भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल के राजभाषा कार्यकलाप (2017–18)

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में राजभाषा हिंदी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतु संस्थान में वर्ष 1979 में राजभाषा एकक की स्थापना की गई। संस्थान में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन एवं कार्यान्वयन के लिए संस्थान के राजभाषा एकक में वर्ष 1988, 1989 एवं 2011 में क्रमशः हिन्दी अनुवादक, सहायक निदेशक एवं उप निदेशक के पद सृजित किए गए। राजभाषा एकक द्वारा संस्थान के अधिकारियों, वैज्ञानिकों, मंत्रालयिक स्टाफ, तकनीकी स्टाफ आदि को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए हर संभव सहयोग भी प्रदान किया जा रहा है। संस्थान के राजभाषा एकक द्वारा निम्नलिखित विवरणानुसार विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।

संस्थान में गठित संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष में चार बैठकें प्रत्येक तिमाही में एक आयोजित की गई। इन बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में संस्थान की प्रगति का आकलन किया जाता है एवं भावी कार्यक्रमों हेतु कार्ययोजना तैयार कर उन्हें कार्यान्वित किया जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि में 6.6.2017, 8.9.2017, 13.12.2017 एवं 19.3.2018 को तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया।

- राजभाषा नियम 1976 के नियम–11 का अनुपालन करते हुये संस्थान द्वारा सभी प्रकार के मानक फार्मों एवं स्टेशनरी सामान आदि को द्विभाषी रूप में प्रयोग करना सुनिश्चित किया जा रहा है।
- राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को सतत् बढ़ाने एवं कर्मचारियों की सरकारी काम–काज में राजभाषा के प्रयोग में होने वाली झिझक को दूर करने के लिए प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। संस्थान में दिनांक 16.5.2017, 22.5.2017, 6.6.2017, 17.6.2017, 22.9.2017, 1.12.2017 व 14.3.2018 को अर्थात् 7 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन करके इनमें 92 अधिकारियों एवं 64 कर्मचारियों सहित कुल 156 कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है।
- संस्थान में दिनांक 14.9.2017 से 15.10.2017 तक हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितंबर 2017 को हिन्दी दिवस समारोह एवं 16.10.2017 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवधि में संस्थान में कुल 5 प्रतियोगिताएं, दिनांक 14.9.2017 को हिन्दी गीतगायन प्रतियोगिता, 19.9.2017 को हिन्दी शोधपत्र पोस्टर प्रतियोगिता, 22.9.2017 को हिन्दी कार्यशाला, 25.9.2017 को हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता एवं 06.10.2017 को हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह में विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं के 139 विजेताओं को प्रशस्ति प्रमाण–पत्रों से सम्मानित किया गया।
- वर्ष 2016–17 की वार्षिक मूल हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में प्राप्त हुई 11 प्रविष्टियों में से नियमानुसार 10 सुपात्र कर्मचारियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्रों से पुरस्कृत किया गया। इसी प्रकार वर्ष 2017–18 की प्रतियोगिता के लिए प्राप्त हुई 10 प्रविष्टियों में से नियमानुसार सभी 10 कर्मचारियों को नियमानुसार पुरस्कृत किया गया।
- वर्ष 2016–17 की "वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों की मूल हिंदी लेखन प्रतियोगिता" के अंतर्गत 38 वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों आदि को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया गया।
- हर वर्ष की भाँति संस्थान की वार्षिक गृह पत्रिका "दुग्ध गंगा" एवं तिमाही न्यूज लैटर "डेरी समाचार" को पूर्णतः हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा है।
- संस्थान के वैज्ञानिकों से प्राप्त वैज्ञानिक एवं लोकप्रिय लेख, छात्रों के शोध सारांश, वार्षिक प्रतिवेदन, प्रशासनिक पत्र, परिपत्र, ज्ञापन, विभिन्न समारोहों की प्रेस विज्ञप्ति, गणमान्य अतिथियों, मंत्रियों आदि के संबोधन, व्याख्यान एवं अन्य सामग्री का अनुवाद कार्य इस एकक द्वारा किया जाता है।
- गैर हिन्दी क्षेत्रों से अध्ययन हेतु आए एम.एससी./एम.टैक./पीएच.डी. के छात्र जिन्हें मैट्रिक स्तर तक हिंदी का ज्ञान नहीं है उन्हें हिंदी शिक्षण का कार्य इस एकक के स्टाफ द्वारा दिया जाता है।
- राजभाषा एकक द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित "बृहत प्रशासनिक शब्दावली" की प्रतियाँ संस्थान के कर्मचारियों को उपलब्ध कराई गई हैं। संस्थान में अंग्रेजी/टाइपिस्टों/आशुलिपिकों को हिन्दी टाइपिंग सीखने हेतु निरन्तर प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा डेस्क प्रशिक्षण के द्वारा कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग सिखाई जा रही है।
- संस्थान के निदेशक, नगरस्तरीय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के पदेन अध्यक्ष भी हैं। अध्यक्ष नराकास एवं निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल की अध्यक्षता में समिति की दो बैठकें, प्रथम बैठक दिनांक 9.6.2017 को एवं दूसरी बैठक दिनांक 9.11.2017 को संपन्न हुई हैं। नराकास की छमाही बैठकों में करनाल में स्थित 68 केन्द्र सरकार के कार्यालयों, उपकमों, निगमों, अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों, लिमिटेडों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के प्रशासनिक अध्यक्षों, वरिष्ठ अधिकारियों, राजभाषा अधिकारियों एवं प्रतिनिधि अधिकारियों द्वारा प्रतिभागिता की जाती है। इन बैठकों में भारत सरकार, राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि अधिकारी भी शामिल होते हैं। समिति द्वारा समिति के रूटीन प्रकार के कार्यों के अलावा अध्यक्ष नराकास एवं संस्थान के निदेशक महोदय के मार्गदर्शन में संस्थान के राजभाषा एकक के प्रभारी मय नराकास समन्वयक एवं सचिव नराकास द्वारा समिति के सदस्य कार्यालयों को राजभाषा के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतु समय समय पर मार्गदर्शन एवं सहयोग भी प्रदान किया जा रहा है। समिति द्वारा छमाही बैठकों में सदस्य कार्यालयों के प्रधानों एवं प्रतिनिधियों की सहमति से निर्णित अनुसार विभिन्न राजभाषा गतिविधियों का आयोजन किया गया। नराकास के तत्वावधान में 18.7.2017 को हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता, 22.8.2017 को हिन्दी लघुकथा लेखन प्रतियोगिता, 7.9.2017 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, 14.9.2017 को हिन्दी देशभक्ति गीतगायन प्रतियोगिता, 25.9.2017 को हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता, 12.10.2017 को हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिता, 29.11.2017 को हिन्दी मुहावरा/लोकोक्ति लेखन प्रतियोगिता, 1.12.2017 को हिन्दी पैराग्राफ श्रुतलेखन प्रतियोगिता, 1.12.2017 को हिन्दी पैराग्राफ श्रुतलेखन प्रतियोगिता, 15.2.2018 को हिन्दी नारालेखन प्रतियोगिता, 16.2.2018 को हिन्दी वाक्यांश अनुवाद प्रतियोगिता, 14.3.2018 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, 19.4.2018(पूर्वाहन) को वाक्य अनुवाद प्रतियोगिता, 19.4.2018(अपराहन) को हिन्दीतर कर्मचारियों के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा उक्त 07 प्रतियोगिताओं के 46 विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्रों से सम्मानित किया गया।

माकृअनुप–राडेअनुसं(एनडीआरआई), करनाल में संपन्न सरकारी कामकाज(टिप्पण / आलेखन) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना (वर्ष 2017–18) के लिए के विजेता

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	प्रभाग / अनुभाग	पुरस्कार	राशि
1	श्रीमती शीला बर्मन, कुशल सहायक कर्मचारी	श्रम कल्याण अनुभाग	प्रथम	5000/-
2	श्रीमती मीरा रानी, सहायक	नकदी एवं देयक अनुभाग	प्रथम	5000/-
3	श्री नीरज कुमार, कुशल सहायक कर्मचारी	स्थापना–4 अनुभाग	द्वितीय	3000/-
4	श्री प्रभजीत सिंह बहल, सहायक	ऑडिट अनुभाग	द्वितीय	3000/-
5	श्रीमती सुषमा रानी, अपर श्रेणी लिपिक	स्थापना–4 अनुभाग	द्वितीय	3000/-
6	श्री मनजीत सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	नकदी एवं देयक अनुभाग	तृतीय	2000/-
7	डॉ. अश्वनी कुमार रॉय, वरिष्ठ वैज्ञानिक	पशु शरीर क्रिया प्रभाग	तृतीय	2000/-
8	श्री विजयपाल, तकनीकी सहायक	वाहन पूल	तृतीय	2000/-
9	श्री कुलजीत सिंह, अपर श्रेणी लिपिक	स्थापना–1 अनुभाग	तृतीय	2000/-
10	श्रीमती कमलेश कुमारी, सहायक	स्थापना–4 अनुभाग	तृतीय	2000/-

अनुभव

सभी के जीवन में कुछ खट्टे और कुछ मीठे अनुभव अवश्य होते हैं यदि मनुष्य के जीवन में खट्टे मीठे अनुभव न हो तो मनुष्य नीरसता में चला जाता है और जीवन का उद्देश्य ही खत्म हो जाता है। और इन्हीं खट्टे मीठे अनुभवों की सहायता से अपने सफल जीवन की सफलता को प्राप्त करते हैं। हमारे जीवन के खट्टे–मीठे पलों में कुछ सफलताएं होती हैं तो कुछ असफलताएं। हर व्यक्ति के जीवन में सफलता और असफलता के दो कारण होते हैं और दो प्रकार के लोग भी होते हैं। एक तो वह लोग होते है जो आप की सफलता से खुश होते हैं और दूसरे लोग वे होते हैं जो आप कोई भी कार्य करें उनको आपके प्रति ईर्ष्या–द्वेष ही होगा, चाहे जितना भी आप अच्छा कार्य करें। कुछ लोग अपना मत दिये बिना ही उनके पीछे लग जाते हैं और उसकी बुराई या अच्छाई करने लगते हैं। हमने अक्सर देखा है कि कुछ लोग रास्ते में पड़े नुकीले पत्थर की तरह होते हैं। वह कभी किसी का भला नहीं करता। उस पर कोई भी चले वह उसको चुभेगा ही चुभेगा। आप कैसा भी कार्य करें उनको आपकी बुराई ही करनी होती है। लेकिन हमें उसकी परवाह किये बिना अपना कार्य सकारात्मकता के साथ करते रहना चाहिए। इस संबंध में कबीर ने क्या खूब कहा है–

कबिरा तेरी झोपड़ी गलकटियन के पास।
जो करेगा सो भरेगा फिर तू क्यों हुआ उदास।।

रहीम दास ने अपने निम्नांकित दोहे में यह बताया है कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आने वाले सुख–दुख से ही उसे अपने सही शुभचिन्तकों के बारे में पता पड़ पाता है–

रहिमन बिपदा है भली जो थोडे दिन होय।
हित अनहित या जगत में जान पडत सब कोय।।

मेरा यही मानना है कि हमें हर व्यक्ति के गुणों को देखना चाहिए और उसके अवगुणों की उपेक्षा करनी चाहिए। इसी प्रकार यदि मनुष्य के जीवन में निन्दा करने वाले निन्दक हों तो वह अपनी गलतियों को समय–समय पर ठीक करते हुए कामयाबी के सर्वोच्च शिखर तक पहुँच पाएगा। कबीर के अनुसार निन्दक को सदैव अपने साथ रखना चाहिए–

निंदक नियरे राखिये आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिन उज्जल होत सुजान।।

राम बहादुर वर्मा,
माकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल

नराकास करनाल द्वारा दिनॉक 14.3.2018 को संपन्न नगर स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में स्वच्छ भारत अभियान विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागियों द्वारा लिखे गए विचार सभी पाठकों के अवलोकनार्थ यहाँ उदधृत हैं –

इतिहास गवाह है कि कोई भी अभियान किसी नेता या किसी सरकार के दम पर सफलता प्राप्त नहीं करता। जिस भी अभियान को जनता का साथ मिला है, वही अभियान इतिहास में अमर हो सका है। इसी तरह स्वच्छ भारत अभियान, भारत सरकार या इसके एम्बेस्डरों के कारण सफल नहीं हो सकता। यदि इस अभियान को सफल बनाना है तो अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। जिस क्षेत्र में शौचालय नहीं हैं, वहाँ अधिक से अधिक लोग शौचालय बनवाएं व उनका प्रयोग करें। तभी यह अभियान सफल होगा। हर भारतीय को यह सुनिश्चित करना होगा कि भारत में अब कोई भी जन खुले में शौच नहीं करता। केवल तभी स्वच्छ भारत अभियान को एक सफल अभियान माना जाएगा।

श्री राकेश कुमार, तकनीकी अधिकारी,
भाकृअनुप–एनबीएजीआर, करनाल

स्वच्छता अभियान भारत सरकार ने महात्मा गाँधी के सपनों को साकार करने के लिए चलाया गया स्वच्छता अभियान है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र साफ होगें तभी हमारे देश की गिनती दूसरे देशों में बढ़ेगी तथा निजी क्षेत्र भी अपने उद्योग स्थापित करने के लिए भारत में आयेंगे। हम अपने देश की उन्नति में पूरा योगदान दे तथा सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना से जुड़कर अपने देश का नाम रोशन करें और लोगों को इसके लिए जागरूक करें तभी देश आगे बढ़ेगा और दुनिया में अपना नाम स्थापित करेगा।

श्री सुनील कुमार आर्य, क.लिपिक,
जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल

स्वच्छ भारत अभियान या मिशन हमारी सरकार की एक सुन्दर पहल है। निर्मल भारत मिशन पिछले कई सालों में इतना अच्छा काम नहीं कर पाया। इसलिए संसद में बजट सत्र 2014 के दौरान इस सरकार ने इसका प्रावधान किया। हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री जी ने 2 अक्तूबर 2014 में राजपथ से महात्मा गाँधी को श्रद्धांजली देकर शुरू किया।

श्री सुनील कुमार प्रजापति, सहायक मुख्य
तकनीकी अधिकारी, भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत खुले में शौच को जड़ से खत्म करना, साफ व पर्याप्त जल की व्यवस्था करना, गाँवों के सभी कोनों की सफाई करना, ठोस व द्रव्य गंदगी को वैज्ञानिक तरीकों से निपटान करना, हाथों की सफाई तथा सार्वजनिक सम्पत्ति को साफ रखना, अपने आस–पास के वातावरण को साफ रखना तथा गंदगी न फैलाना आदि का प्रचार–प्रसार शामिल है। स्वच्छ भारत अभियान से जुड़ने के लिये क्लीन इंडिया नामक वैबसाइट शुरू की गई है, जिसमें कोई भी व्यक्ति किसी गंदगी वाली जगह का फोटो लेकर तथा सफाई के बाद की उसकी फोटो लेकर इस साईट पर लोड कर सकता है इसके लिये उसको पुरस्कार इत्यादि भी दिया जायेगा तथा सहयोग भी दिया जायेगा। इस अभियान को और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए फिल्म जगत एवं उद्योग जगत की जानी मानी हस्तियों को भी उनकी स्वेच्छा से शामिल किया गया है। इस अभियान को आगे बढ़ाने के लिए हम सभी को योगदान देने की आवश्यकता है।

श्रीमती आशा रानी, भारत सरकार
मुद्रणालय, नीलोखेड़ी, करनाल

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य गांधी जी के सपने को पूरा करना है, जो चाहते थे कि भारत स्वच्छ रहे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने स्वतंत्रता से पहले अपने समय के दौरान कहा था कि स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है।" स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य सड़कों व गलियों की सफाई, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता के बारे में जागरूकता फैलाना आदि है, ताकि हम एक स्वच्छ भारत का निर्माण कर सकें। इसके लिए विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों में व्यवहारिक बदलाव लाने की जरूरत है, ताकि वे अपने दैनिक जीवन में भी स्वच्छता को शामिल करें और रोगों से बच सकें। शहरी क्षेत्रों में ठोस कचरा प्रबंधन व सार्वजनिक–सामुदायिक शौचालयों का निर्माण कर इस अभियान को चलाया जा रहा है। यदि हमारे देश का हर नागरिक इस अभियान को अपनी जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार ले, तो गांधी जी की 150 जंयती 2019, अक्तूबर 2 तक उनका स्वच्छ भारत का सपना साकार हो सकता है। इस अभियान का मूल उद्देश्य लोगों का जागरूक कर उन्हें सफाई के लिए प्रेरित करना है। "स्वच्छता है महा–अभियान, हर नागरिक दे इसमें अपना योगदान।"

सुश्री सोनिका यादव, सहायक,
भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल

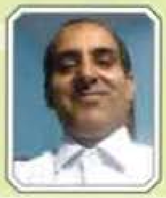

हम भारतवासियों को स्वच्छ भारत सफाई अभियान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। आइए हम यह प्रण करें कि हम अपने मौहल्ले और शहर में गन्दगी नही फैलायेंगे और सफाई अभियान में भागीदारी रखेंगे। तभी हम भारतीय तरक्की की राह पर आगे बढ़ पायेंगे और हमारा देश तभी शक्तिशाली बनेगा।

श्री अशोक कुमार भूटानी, अवर श्रेणी लिपिक,
भारत सरकार मुद्रणालय, नीलोखेड़ी, करनाल

जीवन के खट्ठे–मीठे अनुभव

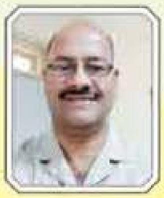

मानव जब जन्म लेता है और अपना जीवन पूर्ण करने की लम्बी प्रक्रिया के दौरान उसे अपने समाज, कुटुम्ब व इससे परे समस्त वह परिवेश जहाँ–जहाँ उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, उसे वहाँ से गुजराना होता है और ऐसे में उसके साथ स्वतः ही कुछ खट्ठे व कुछ मीठे अनुभवों का दौर आता–जाता रहता है। जो लम्हें उसके काम के होते है व अनुरूप होते है उन्हें वह मीठे अनुभवों के तौर पर ग्रहण करता है और अनुभव अनुरूप अनुभूति प्रदान नहीं करते हैं उन्हें मानव खट्ठे अनुभव के तौर पर ग्रहण करता है।

मैं स्वंय यहाँ अपने जीवन में घटित कुछ खट्ठे व कुछ मीठे अनुभवों को अपनी लेखनी से कलमबद्ध करने का प्रयास करूंगा।

प्रथम घटना उस समय की है जब भारत–पाक कारगिल वार चल रहा था। मेरी नियुक्ति दूरदर्शन केन्द्र (राजस्थान)चिड़ावा पर थी। पूरे भारत में देशभक्ति की भावनायें हिलोरे ले रही थी, चूँकि सेना में राजस्थान का प्रतिनिधित्व विशेष तौर पर है वहाँ यह भावना अपने चर्म पर थी। लगभग रोजाना टेलीविजन पर वीरमाँओं के शहीद सपूतों के शव देश के विभिन्न स्थानों पर तिरंगें में लिपट कर पहुँच रहे थे।

मेरे अन्दर का सैनिक मन बार–बार मुझे प्रेरित कर रहा था कि मैं स्वयं सीमा पर जाकर बन्दूक उठा लू और अपने वीर सपूतों के बलिदानों का हिसाब चुकता करूं। मैंने सर्वप्रथम अपने वेतन का एक बड़ा अंश शहीद कल्याण कोष हेतु अपनी सर्वोच्च इच्छा को लिखित तौर पर तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति महोदय को भेजा व एक प्रति अपने विभाग के उच्च अधिकारियों को देते हुऐ मेरी इच्छा को फलीभूत करने के सर्वसम्भावित प्रयास करने हेतु निवेदन किया।

कई दिनों के प्रयासों व प्रतिक्षा के पश्चात् परिणाम नकारात्मक रहां मैं मायूस व निराशा से भर गया था, उसका मुझे आज तक भी अफसोस है। जो मेरे जीवन के खट्ठे अनुभवों में मुख्य हैं।

द्वितीय घटनाः– मेरे जीवन की कुछ मीठी घटनाओं के क्रम में घटना उस समय की है जब में दूरदर्शन केन्द्र, सरदारशहर (राजस्थान) पर नियुक्त था।

मैं प्रारम्भ से ही प्रातः सूर्योदय पूर्व उठकर निवृत्त हो प्रातः भ्रमण पर नियमित जाता था। आज भी वही कम जारी है। मैं भ्रमण पर था मुझे अचानक हवा के साथ एक कागज उड़ता दिखाई दिया जिज्ञासावश मैंने उसे उठाया तो वह बीस का नोट था वह भी बिल्कुल नया नोट, कुछ आगे उसी दिशा में बढ़ा तो दस–दस के तीन नये नोट मिलें। अब मन में विचार आया और आगे चले मैं बढ़ा तो देखता हूँ कि दो पचास–पचास के नोट बिल्कुल नये मिलें। मैं कुछ क्षण के लिए वही रास्ते पर बैठ गया और सोचने लगा कि आज लक्ष्मी की विशेष कृपा हो रही है। मैं पुनः उठा और अपने भ्रमण पथ पर कुछ चलने के बाद एक मन्दिर पड़ता था मैं वही गया और कुछ देर बैठा और आने वालें भक्तों को घटनाक्रम के बारे में बताया, कोई कुछ किसी ने कहाँ मन्दिर के दान पात्र में डाल दों कोई कहने लगा लक्ष्मी जी की कृपा है स्वयं रखकर लक्ष्मी का सम्मान करों।

मैंने अपने पास उन्हें दो चार दिन रखा और मन्दिर में पुजारी व अन्य भक्तों को बताया कि अपने परिचितों जो यहाँ से आते जाते रहते है उन्हें पूछो क्या उनका कुछ रूपया खोया है।

चार–पाँच रोज के बाद मैं नियमित भ्रमण पर उन नोटों को अपने पास ही रखता था ताकि मन्दिर या आस–पास उनका वास्तविक मालिक मिले और उन्हें लौटा सकूं। जब ऐसा नहीं हुआ तो मैंने उन्हें मन्दिर के दान–पात्र में यही सोचकर डाल दिये कि मेरे तो थे नहीं फिर मैं क्यों रखू। आज भी मेरा नियमित क्रम व आदत जारी है मुझे मिलने वाला इस प्रकार का धन मन्दिर में दे देता हूँ। मुझे इससे आत्मीक सन्तोष प्राप्त होता है। और जब भी मुझे कुछ रूपया–पैसा इस तरह मिलता है मुझे वही घटना पुनः स्मृतित हो उठती है।

चूँकि मुझे ऐसा करने पर अच्छी अनुभूति होती है। इसलिए मेरे लिए यह घटना मीठी अनुभूति प्रदान करने वाली रही है।

मुकेश कुमार तोमर,
वरिष्ठ तकनीशियन,
दूरदर्शन केन्द्र, करनाल

अश्रु

कभी किसी अनजाने वक्त पर, आँखों से
बहते अश्क ये आए होंगें,
पलकों में पलते अश्रु धार जैसे मोती बनकर
आए होंगें,
कभी आए होंगें ये किसी अपने के चले जाने
पर,
या बेबस इंसान के सपने अधूरे रह जाने पर,
या फिर खुशी और सफलता भी आँसू दे जाते हैं,
या अनकही कुछ बातें अश्रु धार बन बह जाते हैं।

डोली में बैठी बेटी की आँखें क्यों हैं नम,
मिलन की खुशी या बिछुड़ने का है गम,
कृष्ण के इंतजार में उस राधा रानी सी, पलकें निहारे बैठी होगी कोई, पलकों में पलते खुशी के आँसू रूपी मोतीयों को
पिरोती बैठी होगी कोई।

उससे भी पहले आए होंगें ये आँसू
ममतामयी माँ की आँखों में, अपने बच्चों की हर हार और
जीत में,
वे आँखें भी क्या कम नम हुई होंगी जन्म देने के चरम क्षण
पर,
माँ बनी उस नारी की वेदना और संवेदना के क्षण में,
ये अश्रु ढाल हैं कठिनाई विवशता और दुख के क्षण में।

आँखों से बहते आँसू देख मन में ये ख्याल भी आ रहे हैं,
क्षण भर चमकते ये मोती क्यों पत्थर बनते जा रहे हैं ?

क्यों आज आँसू मोती बन नहीं पाते हैं......................?
क्यों आज आंसुओं ने अपना विश्वास खोया है ?
पछताने से क्या लाभ अब हे मानव, क्योंकि इस संसार में
संवेदन हीनता का बीज तूने स्वयं ही तो बोया है।

संजीव कुमार, प्रबन्धक (राजभाषा)
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे.का. करनाल

हम हैं, वे मुस्कुराते फूल, नहीं जिनको आता मुरझाना।
हम हैं, वे तारों के दीप, नहीं जिनको भाता बुझ जाना।

देवी ।। लघु–कथा ।।

कथाकार : कथा सम्राट "मुंशी प्रेमचंद"

(साभार–लघुकथा साहित्य)

रात भीग चुकी थी। मैं बरामदे में खड़ा था। सामने अमीनुद्दौला पार्क नींद में डूबा खड़ा था । सिर्फ एक औरत एक तकियादार बेंच पर बैठी हुई थी । पार्क के बाहर सड़क के किनारे एक फकीर खड़ा राहगीरों को दुआयें दे रहा था – खुदा और रसूल का वास्ता... राम और भगवान का वास्ता – इस अन्धे पर रहम करो ।

सड़क पर मोटरों और सवारियों का तांता बन्द हो चुका था । इक्के–दुक्के आदमी नजर आ जाते थे । फकीर की आवाज जो पहले नक्कारखाने में तूती की आवाज थी, जब खुले मैदानों की बुलन्द पुकार हो रही थी । एकाएक वह औरत उठी और इधर–उधर चौकन्नी आंखों से देखकर फकीर के हाथ में कुछ रख दिया और फिर बहुत धीमे से कुछ कहकर एक तरफ चली गई । फकीर के हाथ में कागज का एक टुकड़ा नजर आया जिसे वह बार–बार मल रहा था । क्या उस औरत ने यह कागज दिया है ?

यह क्या रहस्य है? उसको जानने के कुतूहल से अधीर होकर मैं नीचे आया और फकीर के पास जाकर खड़ा हो गया ।

मेरी आहट आते ही फकीर ने उस कागज के पुर्जे को उंगलियों से दबाकर मुझे दिखाया और पूछा–बाबा, देखो यह क्या चीज है ?

मैंने देखा–दस रुपये का नोट था । बोला– दस रुपये का नोट है, कहाँ पाया ?

मैंने और कुछ न कहा । उस औरत की तरफ दौड़ा जो अब अन्धेरे में बस एक सपना बनकर रह गई थी । वह कई गलियों में होती हुई एक टूटे–फूटे मकान के दरवाजे पर रुकी, ताला खोला और अन्दर चली गई ।

रात को कुछ पूछना ठीक न समझकर मैं लौट आया ।

रात भर जी उसी तरफ लगा रहा । एकदम तड़के फिर मैं उस गली में जा पहुंचा । मालूम हुआ, वह एक अनाथ विधवा है । मैंने दरवाजे पर जाकर पुकारा– देवी, मैं तुम्हारे दर्शन करने आया हूँ ।

औरत बाहर निकल आई–गरीबी और बेकसी की जिन्दा तस्वीर ।

मैंने हिचकते हुए कहा– रात आपने फकीर......

देवी ने बात काटते हुए कहा–" अजी, वह क्या बात थी, मुझे वह नोट पड़ा मिल गया था, मेरे किस काम का था ।

मैंने उस देवी के कदमों पर सिर झुका दिया ।

संकलक व प्रस्तुतकर्ता :
चन्द्रभान, सहायक,
राजभाषा एकक, भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल

स्वास्थ्य विशेष (संकलित)

योग भगाए रोग

यह सर्व सिद्ध हो चुका है कि योग कई रोगों को दूर भगाता है। जहाँ ऐलोपैथी या अन्य विज्ञान हथियार डाल देते हैं, वहाँ भी योग ने अद्‌भुत चमत्कार दिखाए हैं। इसलिए हमें अपने जीवन में योग को अपनाना चाहिए। योग हमारी भारतीय संस्कृति की प्राचीनतम पहचान है। जीवन में सफलता का परचम लहराने के लिये तन और मन का स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक है। इसलिए बेहतर यही होगा कि हम योग को अपने जीवन का हिस्सा बना लें। आज के प्रदूषित वातावरण में योग एक ऐसी औषधि है जिसका कोई अन्य दुष्प्रभाव नहीं है, बल्कि योग के अनेक आसन जैसे कि, शव आसन आदि उच्च रक्तचाप को सामान्य करता है। यह जीवन के लिये बहुमूल्य संजीवनी का काम करता है। कपालभाति प्राणायाम और भ्रामरी प्राणायाम मन को शांत करते हैं। वक्रासन हमें अनेक बीमारियों से बचाता है। आज कंप्यूटर की दुनिया में दिनभर उसके सामने बैठ–बैठे काम करने से अनेक लोगों को कमर दर्द एवं गर्दन दर्द की शिकायत एक आम बात हो गई है, ऐसे में शलभासन तथा ताड़ासन हमें दर्द निवारक दवा से मुक्ति दिलाते हैं। पवनमुक्तासन अपने नाम के अनुरूप पेट से गैस की समस्या को दूर करता है। योग में ऐसे अनेक आसन हैं जिनको जीवन में अपनाने से कई बीमारियां समाप्त हो जाती हैं और खतरनाक बीमारियों का असर भी कम हो जाता है। पूरे दिन में महज कुछ मिनट का ही प्रयोग यदि योग में हम उपयोग करते हैं, तो अपनी सेहत को हम चुस्त–दुरुस्त रख सकते हैं। फिट रहने के साथ ही योग हमें सकारात्मक ऊर्जा व स्फूर्ति भी देता है। योग से शरीर में रोग प्रतिरोध क्षमता का विकास भी होता है। जहाँ जिम आदि से शरीर के किसी खास अंग का ही व्यायाम होता है वहीं योग से शरीर के समस्त अंग प्रत्यंगों,ग्रंथियों का व्यायाम होता है जिससे अंग प्रत्यंग सुचारू रूप से कार्य करने लगते हैं। योगाभ्यास से रोगों से लड़ने की शक्ति बढती है। योगासन मांस पेशियों को पुष्टता प्रदान करते हैं जिससे दुबला पतला व्यक्ति भी ताकतवर और बलवान बन जाता है। योग के नित्य अभ्यास से शरीर से वसा कम भी हो जाता है इस तरह योग पतले और मोटे दोनों के लिए फायदेमंद है। योग का प्रयोग शारीरिक , मानसिक और आध्यत्मिक लाभों के लिए हमेशा से होता रहा है। कई वर्षों के अनुसंधानों में यह साबित हो चुका है कि योग शारीरिक और मानसिक रूप से मानव जाति के लिए वरदान है।

पहला सुख निरोगी काया
दूजा सुख घर में हो माया
तीजा सुख कुलवंती नारी
चौथा सुख पुत्र हो आज्ञाकारी
पंचम सुख स्वदेश में वासा
छठवा सुख राज हो पासा
सातवा सुख संतोषी जीवन,
ऐसा हो तो धन्य हो जीवन

मोबाइल प्रौद्योगिकी विशेष (संकलित)

गूगल असिस्टेंट

हैलो, मैं क्या मदद कर सकता हूँ?

गूगल असिस्टेंट क्या है

यह एप गूगल कंपनी के द्वारा डेवलप किया गया है। इस एप को अपने स्मार्टफोन में प्ले स्टोर से डाउनलोड करके आप इसकी सहायता से आसानी से कई जानकारी मोबाइल से मांग सकते हैं। अपने निजी और कार्यालय के काम में मदद ले सकते हैं या कॉल करने जैसे आदेश दे सकते हैं। आप कुछ विचार पाने के लिए अपने गूगल असिस्टेंट से, "आप क्या कर सकते हो?" यह भी पूछ सकते हैं। आप इस पर मौसम के मिजाज की जानकारी के लिए पूछ सकते हैं, जैसे कि "आज मौसम कैसा है? वीक एंड में मौसम कैसा रहेगा? इसी प्रकार आप अपने आस पास के होटल या रेस्टोरेंट, रास्तों, ज्ञानवर्द्धक जानकारी आदि के बारे में प्रश्न पूछ कर वोकल फॉर्म अर्थात् मनुष्य की बोली में उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। यह असिस्टेंट आपके रोजमर्रा के कामों में सहायता करने के लिए बनाया गया है। कैलेंडर, जीमेल, सर्च, फोटो, मैप और ऐसे कई ऐप को यह आपके बोलने भर से चलाना करना शुरू कर देता है। यह किसी ऐसे वास्तविक सहायक या कहें सलाहकार की तरह है, जो आपके सवालों के तत्काल जवाब देगा। यह हंसी–ठिठौली से लेकर सुबह के अलार्म लगाने जैसी जरूरी चीजें भी आपके लिए करके देगा।

गूगल असिस्टेंट की सहायता से फोन को बिना हाथ लगाए ऐसे करें कॉल

सबसे जरूरी पहलू, यह आपके एक इशारे पर कॉल और एसएमएस भी करने में सक्षम है। संभव है, कभी आपके दोनों हाथों में सामान हो, आप किसी आपात अवस्था में हो या हाथ से कॉल करने के बजाय आपके पास बोलकर कॉल करने वाला ही विकल्प बचा हो, ऐसे में गूगल असिस्टेंट आपके लिए किसी को भी कॉल और एसएमएस कर सकती है..

कैसे करें गूगल असिस्टेंट की मदद से कॉल

गूगल के वर्चुअल सहायक की मदद आप अपनी कॉन्टैक्ट लिस्ट में मौजूद दोस्त, परिजनों और रिश्तेदारों को वॉयस कमांड देकर कॉल कर सकते हैं। इसके लिए आपको अपने फोन की होम बटन को कुछ सेकेंड तक दबाए रखना होगा। इसके बाद आपकी गूगल असिस्टेंट सक्रिय हो जाएगी। यहां आप श्ओके गूगलश कहें और इसके बाद आप कॉल करने का आदेश दे सकते हैं। मसलन, आपने अपने पिता का नंबर श्डैडश नाम से सेव कर रखा है, तो कहें– कॉल डैड। आपके ऐसा कहते ही गूगल असिस्टेंट सक्रिय हो जाएगी और कॉन्टैक्ट लिस्ट से नंबर ढूंढकर आपसे पुष्टि करने को कहेगी। फिर आपको हां या ना में जवाब देकर आगे जाना है। इस तरह आप गूगल असिस्टें ट की मदद से कभी भी, किसी को भी कॉल कर सकते हैं।

गूगल असिस्टें ट से एसएमएस

गूगल असिस्टेंट से अपनी कॉन्टैक्ट लिस्ट में मौजूद लोगों को एसएमएस करना भी उतना ही आसान है, जितना कि कॉल करना। गूगल असिस्टेंट से एसएमएस करने के लिए आप अपने फोन का होम बटन कुछ सेकेंड के लिए दबाए रखें। इसके बाद कॉन्टैक्ट लिस्ट में मौजूद लोगों में से किसी का भी नाम लें और कहें "एसएमएस राकेश" तो लिस्ट में मौजूद मोहन के विकल्प आपको दिखाए जाएंगे। इसके बाद आप सही विकल्प चुनकर मैसेज को भी बोलकर टाइप करवा सकते हैं। इसके लिए गूगल असिस्टेंट आपको मैसेज बोलने के लिए कहता है। इस तरह आप गूगल असिस्टेंट की मदद से आपात स्थिति में, मीटिंग में, बस या ट्रेन में सिर्फ मैसेज के जरिए अपनी बात पहुंचा सकते हैं।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल की उल्लेखनीय गतिविधियाँ

वर्ष 2017-18 (अवधि 1.4.2017 से 31.3.2018 तक)

1. **प्रमाण-पत्रों व पुरस्कारों के द्वारा अधिकाधिक कर्मचारियों को प्रेरणा**

रिपोर्टाधीन अवधि में समिति के द्वारा आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं के 86 विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया गया।

2. **समिति की राजभाषा गतिविधियों का व्यापक प्रचार-प्रसार**

रिपोर्टाधीन अवधि में भारत सरकार के राजभाषा विभाग के मार्गदर्शन में नराकास करनाल द्वारा आयोजित की जाने वाली समस्त गतिविधियों, छमाही बैठकों, प्रतियोगिताओं आदि के आयोजन का इलेक्ट्रानिक, दृश्य, श्रव्य, प्रिंट माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया, ताकि सदस्य कार्यालयों के साथ-साथ आम लोगों को भी भारत सरकार, गृह मंत्रालय व नराकास करनाल के समन्वित प्रयासों के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके तथा वे राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के प्रति प्रोत्साहित हो सकें।

3. **विविध राजभाषा प्रतियोगिताओं का आयोजन**

राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु दि. 9-6-2017 व 9-11-2017 को संपन्न छमाही समीक्षा बैठकों में सदस्य कार्यालयों की सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया था कि समिति द्वारा अधिकाधिक राजभाषा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा, जिससे सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागी अधिकारियों व कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के प्रति जागरूकता बढ़े। तदनुसार रिपोर्टाधीन अवधि में निम्ननलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों ने निम्नलिखित विवरणानुसार बढ़-चढ़ कर भाग लिया। विजेताओं को समिति की छमाही समीक्षा बैठकों में राजभाषा विभाग के गण्यमान्य हस्तियों से प्रमाण-पत्र व प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाता है-

क्र.सं.	आयोजन तिथि	नगरस्तरीय प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कृत विजेता
1	18.07.2017	हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता	08
2	22.08.2017	हिन्दी लघुकथा लेखन प्रतियोगिता	10
3	12.10.2017	हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिता	12
4	07.09.2017	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता	03
5	14.09.2017	हिन्दी देशभक्ति गीत-गायन प्रतियोगिता	05
6	25.09.2017	हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता	12
7	29.11.2017	हिंदी मुहावरा एवं लोकोक्ति लेखन प्रतियोगिता	09
8	01.12.2017	हिंदी पैराग्राफ श्रुतलेखन प्रतियोगिता	10
9	15.02.2018	हिंदी नारालेखन प्रतियोगिता	5
10	16.02.2018	हिंदी वाक्यांश अनुवाद(अंग्रेजी-हिन्दी) प्रतियोगिता	7
11	14.03.2018	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता	5
12	19.04.18 (पूर्वाह्न)	वाक्य अनुवाद (अंग्रेजी से हिन्दी) प्रतियोगिता	9
13	19.04.2018(अपराह्न)	गैर हिन्दी-भाषी कर्मचारियों हेतु निबंध प्रतियोगिता	1

4 **छमाही बैठक में अगली बैठक की तिथि का निर्धारण**

प्रत्येक छमाही बैठक में यह निर्णय लिया जाता है कि अगली छमाही में किस तिथि को समीक्षा बैठक आयोजित की जाएगी। इस प्रकार समिति के सदस्य कार्यालय अगली बैठक में प्रतिभागिता के लिए सुगमता से कार्ययोजना बना पाते हैं।

5 **राजभाषा विभाग के वार्षिक कैलेण्डर अनुसार समय पर छमाही बैठकों का आयोजन**

समिति के सदस्य कार्यालयों की सर्वसम्मति एवं राजभाषा विभाग के वार्षिक कैलेण्डर के अनुसार प्रत्येक वर्ष जून एवं नवंबर माह में छमाही बैठकों का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2017-18 में इन्हें 09.06.2017 एवं 09.11.2017 को विधिवत् रूप से समय पर आयोजित किया गया। गृह मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में श्री प्रमोद कुमार शर्मा उप-निदेशक (कार्यान्वेयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 नई दिल्ली ने उक्त दोनों समीक्षा बैठकों में शामिल हुए कार्यालय प्रधानों को राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार व कार्यान्वयन के लिए परिणामोन्मुखी मार्गदर्शन प्रदान किया।

6 **राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर संयुक्त वेबसाइट में समिति की गतिविधियों का अपडेशन**

राजभाषा विभाग के नराकास संयुक्त वेबसाइट पोर्टल http//www.narakas.rajbhasha.gov.in पर समिति कोड 005 के अंतर्गत समिति की समस्त गतिविधियों एवं अन्य सभी वॉछित व संगत जानकारियों का समय पर अपडेशन किया जा रहा है।

7 राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर छमाही बैठकों के कार्यवृत्ति व गतिविधियों का अपडेशन

राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर नराकास सूचना प्रबंधन प्रणाली के लिंक http://www.narakas.rajbhasha.gov.in/005 पर समिति की बैठकों के कार्यवृत्त व सभी वाँछित ब्योरे समय पर अपडेट किये जा रहे हैं।

8 बैठकों में सदस्य कार्यालयों की गतिविधियों का प्रेरणार्थ स्लाइड प्रदर्शन

प्रत्येक छमाही बैठक में पिछले छह माह के दौरान सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए आयोजित की गई उल्लेखनीय गतिविधियों को पावरप्वाइंट स्लाइडों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है ताकि छमाही बैठक में अन्य कार्यालयों को उत्प्रेरणा मिल सके।

9 नराकास करनाल द्वारा समय पर वार्षिक कैलेण्डेर–2018 जारी

समिति की ओर से वार्षिक कैलेण्डर जारी किया जाता है जिसमें समिति का संक्षिप्त परिचय, बैठकों का ब्यौरा, कार्य एवं अन्य ब्यौरे का उल्लेख किया जाता है। समिति के वर्ष 2018 के कैलेण्डर का दि. 09.11.2017 को संपन्न छमाही बैठक में विमोचन उपरांत इसकी पर्याप्त प्रतियाँ सदस्य कार्यालयों को वितरित की गईं।

10 सदस्य कार्यालयों को नराकास समिति सचिवालय द्वारा सक्रियतापूर्वक मार्गदर्शन

सभी सदस्य कार्यालयों मे राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के अनुपालन की छमाही बैठकों में समीक्षा की जाती है एवं समिति के पदाधिकारियों द्वारा राजभाषा हिन्दीं के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिए सदस्य कार्यालयों को आवश्याकता पड़ने पर सक्रियतापूर्वक यथावश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

11 प्रत्येक तिमाही हिन्दी कार्यशाला, संगोष्ठी इत्यादि का आयोजन

समिति द्वारा सदस्यों कार्यालयों के लिए प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशालाओं संगोष्ठियों आदि का आयोजन किया जाता है।

12 समिति द्वारा समय पर वार्षिक गृह पत्रिका का समय पर प्रकाशन व वितरण

समिति के द्वारा प्रत्येक वर्ष एक वार्षिक गृह पत्रिका "कर्णोदय" का प्रकाशन किया जाता है, जिसमें सम्मिलित सदस्य कार्यालयों में संपन्न राजभाषा गतिविधियों के प्रकाशन के साथ–साथ सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों के आलेख एवं रचनाए आदि प्रकाशित किए जाते हैं। समिति की वर्ष 2016–17 की वार्षिक गृह पत्रिका "कर्णोदय" समय पर प्रकाशित कर सदस्य कार्यालयों को पर्याप्त संख्या में वितरित की जा चुकी हैं।

13 समिति द्वारा कागजविहीन(पेपरलैस) पत्राचार को बढ़ावा

समिति द्वारा भारत सरकार की पेपरलेस पत्राचार नीति को बढ़ावा देने के लिए समिति की वार्षिक गृह पत्रिका "कर्णोदय" को देश की सभी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को ईमेल से सॉफ्टकॉपी के रूप में भेजा जा रहा है। साथ ही समिति के सभी सदस्य कार्यालयों, कार्यालय प्रधानों, पदाधिकारियों व कर्मचारियों को भी पत्रिका को ईमेल से सॉफ्टकॉपी के रूप में भिजवाया जाता है। समिति के सभी पत्राचार आदि भी पेपरलैस माध्यम से संपादित किये जा रहे हैं।

14 समिति द्वारा नकदीविहीन(कैशलेस) लेन–देन किया जाना

समिति के सभी लेन–देन आदि नकदीविहीन संपादित किए जा रहें हैं।

15 सदस्य कार्यालयों की अनुकरणीय प्रतिबद्धता व समिति सचिवालय को भरपूर सहयोग

इस समिति के द्वारा सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों व राजभाषा अधिकारियों की एक उप समिति गठित की गई है। यह उप समिति सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व कार्यान्वयन की स्थिति का जायजा लेने के लिए समय–समय पर संबंधित कार्यालय प्रधानों को पूर्व सूचना के साथ उनके कार्यालयों का दौरा करती है। उप समिति ने अब तक यह पाया है कि नराकास करनाल के सभी सदस्य कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधान अपने–अपने कार्यालयों में राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम व भारत सरकार द्वारा समय समय पर जारी किए जाने वाले अनुदेशों की सुदृढ़ अनुपालना व क्रियान्वयन के लिए प्रतिबद्ध हैं तथा वे राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को सतत् आगे बढ़ाने के लिए सार्थक प्रयास भी कर रहे हैं। नराकास करनाल के समिति सचिवालय को विभिन्न् गतिविधियों व प्रतियोगिताओं के आयोजन, राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व कार्यान्वयन में भरपूर सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

16 सदस्य कार्यालयों द्वारा समिति के प्रयासों की सराहना

नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों द्वारा समिति की राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार, कार्यान्वयन व प्रगति के लिए किए जा रहे प्रयासों को मुक्त–कंठ से सराहा जा रहा है।

17 उप–निदेशक(कार्यान्वयन) क्षे.का.का.–1, नई दिल्ली द्वारा समिति के प्रयासों की सराहना

श्री प्रमोद कुमार शर्मा उप–निदेशक(कार्यान्च्यन) क्षेत्रीय कार्यान्वतयन कार्यालय–1, नई दिल्ली के द्वारा दि. 10.11.2017 को इस संस्थान (भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान) में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने के लिए राजभाषा निरीक्षण किया

गया एवं उनके कार्यालय के पत्र सं. 18/86 / 2017–उ.क्षे.का.का.–1(दि.) / 1442 दिनॉक 5.12.2017 के तहत राजभाषा संबंधी निरीक्षण की रिपोर्ट इस संस्थान को प्राप्त हुई है। निरीक्षण रिपोर्ट के पैरा संख्या 12 में इस टिप्पणी के साथ नराकास करनाल के कार्यों की सराहना की गई है – "यह संस्थान नराकास करनाल का अध्यक्षीय कार्यालय है। नराकास बेहतर कार्य कर रही है। नराकास के सदस्य सचिव का कार्य उत्तम है"।

18 सदस्य कार्यालयों के सुझावों को तत्काल कार्यान्वित किया गया

सदस्य कार्यालयों से प्राप्त हुए सभी सुझावों को तत्काल कार्यान्वित किया गया एवं अब तक संपन्न् सभी छमाही बैठकों के सुझावों व बिन्दुओं पर कार्रवाई संपन्न् हो चुकी है एवं किसी भी मुद्दे पर कार्रवाई बाकी नहीं है।

19 सदस्य कार्यालयों को प्रतिदिन "आज का हिन्दी शब्द" एवं "सुविचार" प्रेषण

समिति के द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों को प्रतिदिन समिति की ईमेल आईडी tolic.karnal.ndri@gmail.com से "आज का हिन्दी शब्द" एवं "सुविचार" प्रेषित किया जाता है।

20 राजभाषा पुरस्कार शील्ड वितरण समारोह का समय पर आयोजन

नगर में राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले अधिकाधिक कार्यालयों को राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण–पत्रों से सम्मानित किया जाता है। दि. 09.6.2017 को संपन्न छमाही बैठक एवं राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 18 कार्यालयों को राजभाषा शील्ड से, 18 कार्यालय प्रधानों को प्रशस्ति प्रमाण पत्रों से व 18 राजभाषा अधिकारियों को प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल (हरियाणा)
सत्यमेव जयते

ई–बुलेटिन
"राजभाषा झलक"

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
करनाल (हरियाणा)

**"न.रा.का.स. करनाल के बढ़ते कदम,
प्रेरणा प्रोत्साहन सहयोग के संग"**

(नराकास की छमाही बैठक में विमोचनार्थ प्रस्तावित)

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

नराकास करनाल द्वारा नगर स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के परीक्षा परिणाम

"हिन्दी मुहावरा–लोकोक्ति लेखन प्रतियोगिता (29.11.2017 को संपन्न)

क्र.	नाम व पदनाम	कार्यालय का नाम	स्थान
1	श्री अनिल कुमार शर्मा, वरि0तक0अधिकारी	भाकृअनुप–के0मृ0ल0अनु0सं0, करनाल	प्रथम
2	श्रीमती प्रेम मेहता, निजी सचिव	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	प्रथम
3	सुश्री सोनिका यादव	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	द्वितीय
4	श्री वाजिद अली	जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल	तृतीय
5	श्रीमती नीरू त्यागी, प्रशा.अधिकारी	युनाइटेड इं0 इंश्योरेन्स कं0लि0, मंडल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
6	श्री सुमित कुमार, प्रबंधक	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
7	श्री कुनाल कालड़ा, वि0ले0अ0	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	प्रोत्साहन
8	श्री सुरेन्द्र कुमार, प्रशासनिक अधिकारी	युनाइटेड इ0 इंश्योरेन्स कं0लि0, करनाल	प्रोत्साहन
9	श्री चन्द्रभानु सिंह, तक.सहायक	भाकृअनुप–भा.कृ.अनु.सं., क्षे.के., करनाल	प्रोत्साहन

"हिन्दी पैराग्राफ श्रुतलेखन प्रतियोगिता (01.12.2017 को संपन्न)

क्र.	नाम व पदनाम	कार्यालय का नाम	स्थान
1	डॉ0 लता सबीखी, अध्यक्ष, डेरी प्रौद्योगिकी	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	प्रथम
2	श्री कुनाल कालड़ा, वि0ले0अ0	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	द्वितीय
3	श्री वाजिद अली, कला अध्यापक	जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल	तृतीय
4	श्री नरेन्द्र कुमार, अधिकारी	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
5	श्रीमती पूनम सलूजा, आशुलिपिक	एम0एस0एम0ई0 विकास संस्थान, करनाल	प्रोत्साहन
6	श्रीमती पूजा, अधिकारी	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
7	श्री चन्द्रभानु सिंह, तक.सहायक	भाकृअनुप–भा.कृ.अनु.सं., क्षे.के., करनाल	प्रोत्साहन
8	श्री सोमवीर, प्रबंधक	पंजाब एण्ड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
9	श्रीमती ज्योति भाटिया, अधिकारी	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
10	श्रीमती मीनू धीमान, सहायक निदेशक	एम0एस0एम0ई0 विकास संस्थान, करनाल	प्रोत्साहन

"हिन्दी नारा–लेखन प्रतियोगिता (15.02.2018 को संपन्न)

क्र.	प्रतिभागी का नाम व पदनाम	कार्यालय पुरस्कार	स्थान
1	श्री वाजिद अली, कला अध्यापक	जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल	प्रथम
2	सुश्री सोनिका यादव, सहायक	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	प्रथम
3	श्री दीपक यादव, वरिष्ठ तकनीशियन	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	द्वितीय
4	श्रीमती दिनिका गोयल, कनि0 दूरसंचार अधि0	भारत संचार निगम लिमिटेड, करनाल	तृतीय
5	श्री तरसेम सिंह, बिजनेस एसोसिएट	बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन

वाक्यांश अनुवाद प्रतियोगिता (16.2.2018 को संपन्न)

क्र.	नाम व पदनाम	कार्यालय का नाम	स्थान
1	श्री कुनाल कालड़ा, वित्त एवं लेखाधिकारी	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	प्रथम
2	श्रीमती मीरा रानी, सहायक	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	द्वितीय
3	श्री दीपक कुमार चावला, मुख्य प्रबंधक	बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल	तृतीय
4	श्री मुनीश गुलाटी, प्र0अ0	भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
5	श्री मुकेश दुआ, स.प्र.अ.	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	प्रोत्साहन
6	श्री प्रशांत शर्मा, प्रबंधक	बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्या.करनाल	प्रोत्साहन
7	श्रीमती पूजा गुप्ता, अधि	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (14.03.2018 को संपन्न)

क्र.	नाम व पदनाम	कार्यालय का नाम	स्थान
1	सुश्री सोनिका यादव, सहायक	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	प्रथम
2	श्री मुकेश कुमार तोमर, वरिष्ठ तकनीशियन	दूरदर्शन, करनाल	प्रथम
3	श्री चित्रनायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक	भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल	द्वितीय
4	श्रीमती आशा रानी, नर्स	भारत सरकार मुद्रणालय, नीलोखेड़ी	तृतीय
5	श्री अशोक कुमार भूटानी, उ0क्षे0लि0	भारत सरकार मुद्रणालय, नीलोखेड़ी	प्रोत्साहन

वाक्य अनुवाद प्रतियोगिता (19.4.2018 को संपन्न)

क्र.	प्रतिभागी का नाम	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1	कुनाल कालड़ा, वित्त एवं लेखा अधिकारी	भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल	प्रथम
2	प्रशांत शर्मा, प्रबंधक	बैंक ऑफ बडौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल	द्वितीय
3	राकेश कुमार, तकनीकी अधिकारी	भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो करनाल	तृतीय
4	दीपक कुमार चावला, मुख्य प्रबंधक	बैंक ऑफ बडौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल	तृतीय
5	सुमित कुमार, प्रबंधक	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
6	निशान्त कुमार, वैज्ञानिक	भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल	प्रोत्साहन
7	वंदना, कर सहायक	प्रधान आयकर आयुक्त, करनाल कार्यालय	प्रोत्साहन
8	अजय कुमार, अधिकारी	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
9	धनेन्दर कुमार जैन, सहायक प्रबंधक	नैशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन

हिन्दीतर भाषियों के लिए आयोजित हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (19.4.2018 को संपन्न)

क्र.	प्रतिभागी का नाम	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
01	डा. सम्पत राजू, मुख्य तकनीकी अधिकारी	भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल	प्रोत्साहन

विज्ञान एक क्रियात्मक प्रयोग है–महादेवी वर्मा.....

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

न.रा.का.स. करनाल की विभिन्न गतिविधियों की झलक (2017-18)

न.रा.का.स. करनाल की विभिन्न गतिविधियों की झलक (2017-18)

न.रा.का.स. करनाल की विभिन्न गतिविधियों की झलक (2017–18)

नराकास करनाल के वार्षिक कैलेण्डर–2018 का विमोचन

नराकास करनाल की वार्षिक गृह पत्रिका 2016–17 का विमोचन

नगर–स्तरीय हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के सदस्य कार्यालय, उनके लोगो, कार्यालय प्रधान व ई-मेल

क्र.सं.	समिति के सदस्य कार्यालय का नाम एवं पता	कार्यालय का लोगो	कार्यालय प्रधान का नाम व ई-मेल
1	निदेशक एवं कुलपति, भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, (एन.डी.आर.आई) अग्रसैन चौक करनाल, हरियाणा, पिन-132001 (सदस्य एवं समन्वय कार्यालय)	ndri	डा. आर.आर.बी.सिंह, निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास, करनाल। dir.ndri@gmail.com
2	निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (सीएसएसआरआई), काछवा रोड, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा, निदेशक director.cssri@icar.gov.in
3	निदेशक, भाकृअनुप-राष्ट्रीय पशु आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, पी.बी.129, बलड़ी बाईपास, जीटी रोड, करनाल, हरियाणा, पिन-132001	NBAGR	डा. आर्जव शर्मा, निदेशक director.nbagr@icar.gov.in
4	परियोजना निदेशक, भाकृअनुप-भारतीय गेहूं एवं जौं अनुसंधान संस्थान पी.बी.158, कुंजपुरा रोड, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		डा. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक director.iiwbr@icar.gov.in
5	अध्यक्ष, भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, कुंजपुरा रोड, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		डा. वी.के.पण्डिता, अध्यक्ष head_karnal@iari.res.in
6	अध्यक्ष, भाकृअनुप-गन्ना प्रजनन संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, पी.बी.52, अग्रसेन मार्ग, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.	SBI	डा. नीरज कुलश्रेष्ठ, अध्यक्ष headsbirc@gmail.com
7	कार्यपालक अभियन्ता(सिविल), केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, केन्द्रीय मंडल, एनडीआरआई परिसर करनाल, हरियाणा, पिन-132001	CPWD	श्री चरणजीत पसरीचा, कार्यपालक अभियंता(सिविल)
8	कार्यपालक अभियन्ता(विद्युत), करनाल केन्द्रीय विद्युत डिविजन, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, 208, डी.एच.एस.आई.आई.डी.सी., सेक्टर-3, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.	CPWD	श्री सुखबीर सिंह राणा, कार्यपालक अभियंता(विद्युत) cpwdckarnal@gmail.com
9	कार्यालय प्रधान आयकर आयुक्त, सैक्टर-12, करनाल-132001.		श्रीमती रेखा शुक्ला, प्रधान आयकर आयुक्त cit-knl-hry@gov.in
10	अधीक्षक(प्रथम), केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, एसपीओ-356, मुगल कैनाल मार्केट, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री के.आर.मीणा, अधीक्षक(रेंज 1) rangekarnal@gmail.com
11	अधीक्षक(द्वितीय), केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, एस.पी.ओ.-356, मुगल कैनाल मार्केट, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री चन्द्रमोहन, अधीक्षक(रेंज 2) range2karnal@gmail.com
12	क्षेत्रीय आयुक्त, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, उप क्षेत्रीय कार्यालय, भविष्य निधि भवन, एसीओ 5-8, सेक्टर-12, अरबन स्टेट, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.	E.P.F	श्री अमित सिंगला, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-1 ro.karnal@epfindia.gov.in
13	प्रवर अधीक्षक डाकघर(सीनियर सुपरिन्टेंडेंट ऑफ पोस्ट ऑफिसेज), करनाल मण्डल, जीपीओ-करनाल, जिला-करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		डा.पी.के.सारस्वत, प्रवर अधीक्षक (डाकघर) ssposknl.dop@gmail.com
14	मुख्य चिकित्सा अधिकारी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, सरकारी चिकित्सा सामग्री भंडार, स्वास्थ्य मंत्रालय, करनाल- 132001.		डा. मो0 मुस्तकीम, मुख्य चिकित्सा अधिकारी(एनएफएसजी) gmsdkarnal@gmail.com
15	वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी, राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय क्षेत्र संकार्य प्रभाग, सेक्टर-6, एससीएफ 92, अरबन स्टेट, मुख्य बाजार करनाल, हरियाणा, पिन-132001.	NSSO	श्री सतपाल, वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी, (प्रभारी) fodsro.knl@gmail.com

16	रक्षा पेंशन संवितरण अधिकारी, 159, शक्ति कॉलोनी, माल रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	श्री राजीव गाबा, रक्षा पेंशन संवितरण अधिकारी dpdokarnal.cgda@nic.in
17	उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी, गृह मंत्रालय, भारत सरकार,हाउस नं. 17–बीपी / सेक्टर–8, अरबन स्टेट, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	श्री रतन सिंह ढाकला, उप केन्द्रीय आसूचना अधि.dhakla29@rediffmail.com
18	स्टेशन अधीक्षक, करनाल रेलवे स्टेशन, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	श्री नरेन्द्र कुमार, स्टेशन मास्टर adenkun55@gmail.com
19	सहायक मंडल अभियंता, उत्तर रेलवे, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	श्री मनदीप सिद्धू, सहा–मडंल अभियंता adenkun55@gmail.com
20	प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, नीलोखेड़ी, करनाल, हरियाणा–132117	श्री सिंह राज बोदरा, प्रबंधक gipnlk@gmail.com
21	सहायक श्रम आयुक्त(केन्द्रीय), 32, बैंक कॉलोनी, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	मो0 रजी आलम खाँ, सहा0 श्रम आयुक्त alcknlclc.chd@nic.in
22	उप निदेशक, राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (नेशनल हार्टीकल्चर रिसर्च एंड डेवलपमेंट फाउण्डशन), गॉव–सलारू, पोस्ट–दरड़, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	डा. बी.के.दुबे, उप निदेशक karnal@nhrdf.com
23	क्षेत्रीय निदेशक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, 06, सुभाष कॉलोनी, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	डा. मोती राम, क्षेत्रीय निदशक (प्रभारी) rckarnal@ignou.ac.in
24	प्राचार्य, सैनिक स्कूल कुंजपुरा, करनाल, हरियाणा, पिन–132023	कर्नल वी.डी.चन्दौला, प्राचार्य sai_kunj@yahoo.com
25	प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय–करनाल, जिला सुधार गृह के निकट, कैथल रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	श्री अनुराग भटनागर, प्राचार्य kvkarnal@gmail.com
26	प्राचार्य,जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल, हरियाणा, पिन–132001	श्री पूरण चन्द्र उपाध्याय, प्राचार्य jnvkarnal2009@gmail.com
27	प्राचार्य, जवाहर नवोदय विद्यालय, तितरम, जिला–कैथल, हरियाणा, पिन–136027.	श्री मुहर सिंह, प्राचार्य jnvtitram@gmail.com
28	वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक, कृभको लिमिटेड, एससीओ 44, सेक्टर–7, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	श्री बी.एस.राणा, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक kribhcokarnal@yahoo.co.in
29	क्षेत्र प्रबन्धक, भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, काछवा रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	श्री रवि यादव, क्षेत्रीय प्रबन्धक karanahr.fci@nic.in
30	वरिष्ठ सहायक प्रबन्धक, केन्द्रीय भण्डार गृह(प्रथम), केन्द्रीय भण्डारण निगम, (सेन्ट्रल वेयर–हाउसिंग कॉर्पोरेशन), पुरानी अनाज मण्डी के पास, मटक माजरी, करनाल, हरियाणा, पिन– 132001	श्री कुणाल श्रीधर, वरिष्ठ सहायक प्रबन्धक kunalsridhar@gmail.com
31	क्षेत्र प्रबन्धक, राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड, प्लॉट नं 425–426, सेक्टर–3, करनाल, पिन–132001	श्री महेश चन्द रूहिला, क्षेत्रीय प्रबन्धक amnsckarnal@gmail.com
32	निदेशक, एम.एस.एम.ई. विकास संस्थान, आई.टी.आई. के पास, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	श्री मेजर सिंह, निदेशक dcdi-karnal@dcmsme.gov.in
33	महाप्रबन्धक, दूरसंचार, भारत संचार निगम लि0, सैक्टर 8, अरबन स्टेट, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	श्री सुदीप कुमार, प्रधान महाप्रबन्धक gmtd_karnal_har@bsnl.co.in

34	निदेशक, प्रसार भारती, (भारत का लोक सेवा प्रसारक), दूरदर्शन अनुरक्षण केन्द्र, करनाल, सेक्टर-3, हरियाणा, पिन कोड-132001		श्री सुरेश कु. दावर, सहायक अभियन्ता(प्र.) dmcknl@rediffmail.com
35	वरिष्ठ शाखा प्रभारी, पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस कं0लिमि0, एससीओ 218-19, प्रथम मंजिल, सेक्टर 12, पार्ट 1, सिटी सेन्टर हुडा, करनाल		श्री विवेक श्रीवास्तव, वरिष्ठ शाखा प्रभारी karnal@pnbhfl.com
36	प्रबन्धक, भारतीय जीवन बीमा निगम, हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड, एस.सी.एफ-144, सेक्टर-13, अरबन स्टेट, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री अमन शर्मा, प्रबन्धक am_karnal@lichousing.com
37	वरिष्ठ मंडल प्रबंधक, भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल हरियाणा, पिन-13 बड़ौदरा 2001.		श्री जोगेन्द्र कुमार, वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक pir.karnal@licindia.com
38	उप महाप्रबन्धक, ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स-कोड 8510, क्लस्टर कार्यालय, 97, पहली मंजिल, सोनीपत रोड, रोहतक, हरियाणा, पिन-124001		श्री अशोक कु. सिंगला, उप महाप्रबंधक cmo-bb-hyn@obc.co.in
39	वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक, दि न्यू इंडिया एश्योरंस कं.लिमि., मंडलीय कार्यालय, जीटी रोड, गगन बिल्डिंग, बस स्टेंड के सामने, करनाल-132001.		श्री अनिल कु.भोला, वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक anil.bhola@newindia.co.in
40	वरिष्ठ मंडलीय प्रबन्धक, ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडलीय कार्यालय, उन्नीस-226, जीटी रोड, बस स्टेंड के सामने, करनाल 132001.		श्रीमती मनराज विर्क, उप प्रबंधक (कार्यवाहक) manrajvirk@orientalinsurance.co.in
41	मण्डलीय प्रबन्धक, नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमि0, मंडलीय कार्यालय, संतोख मार्केट, रेलवे रोड, करनाल, हरियाणा, पिन-132001		श्री समीर धवन, मण्डलीय प्रबन्धक sameer.dhawan@nic.co.in
42	वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक, यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमि0, मंडल कार्यालय, जीटी रोड, बस अड्डे के पास, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री अश्विनी ऋषि, वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक ashwanirishi@uiic.co.in
43	मंडल प्रबन्धक, यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमि0, मोटर डीलर कार्यालय, कोड 112300, एससीओ 14, प्रथम मंजिल, सेक्टर 3, नमस्ते चौक के निकट, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री वीरेन्द्र खर, मंडलीय प्रबन्धक virenderkhar@uiic.co.in
44	वरिष्ठ प्रबन्धक, कॉर्पोरेशन बैंक, मुख्य शाखा, महफिल बिल्डिंग, जी.टी.रोड, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री ओम प्रकाश बारापात्रे, वरिष्ठ प्रबन्धक cb0548@corpbank.co.in
45	वरिष्ठ प्रबन्धक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, कर्ण-गेट, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री राम बाबू, वरिष्ठ प्रबन्धक iob1414@iob.in
46	उप महाप्रबन्धक, केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, बेसाइट-17,18, सेक्टर-12, करनाल, हरियाणा-132001		श्री उमेश कुमार शर्मा, उप महाप्रबन्धक olcokar@canarabank.com
47	वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक, पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय, सेक्टर-12, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री के. के. सिंगला, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक coknl@pnb.co.in
48	शाखा प्रबन्धक, स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर (अब एस.बी.आई). एस.सी.ओ.-232 / पार्ट-1, सेक्टर-12, करनाल		श्री सुशील कुमार, प्रबन्धक sbbj10902@sbi.co.in
49	सहायक महाप्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा, शक्ति कॉलोनी, माल रोड, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री प्रदीप कुमार, सहायक महाप्रबंधक sbi.00665@sbi.co.in
50	सहायक महाप्रबन्धक, यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, प्रथम मंजिल, आसाराम मार्केट, मॉडल टाउन, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री नवनीत कुमार, क्षेत्र प्रमुख mgrolrokarnal@unionbankofindia.com
51	उप महाप्रबन्धक, बैंक ऑफ बड़ौदा, नमस्ते चौक, डिवेंचर होटल के सामने, करनाल, हरियाणा, पिन-132001.		श्री एस.के.बिश्वाल, उप महाप्रबंधक rm.karnal@bankofbaroda.com

52	मुख्य प्रबन्धक, मुख्य शाखा, बैंक ऑफ इण्डिया, मुख्य शाखा, फव्वारा चौक, एर्थ प्लेनेट होटल के पास, मुगल कनाल, करनाल,पिन–132001.	बैंक ऑफ इंडिया Bank of India	श्री अनिल कुमार दुर्गा, मुख्य प्रबंधक karnal.chandigarh@bankofindia.co.in
53	उप महाप्रबन्धक, इण्डियन बैंक, अंचल कार्यालय, एससीओ 244–245, सेक्टर–12, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	इंडियन बैंक Indian Bank	श्री नजीब उल्ला खाँ, उप महाप्रबंधक zokarnal@indianbank.co.in
54	वरिष्ठ प्रबन्धक, इलाहाबाद बैंक, एससीएफ–89, 90, सेक्टर–6, करनाल, हरियाणा, पिन – 132001.	इलाहाबाद बैंक ALLAHABAD BANK	श्री आशु जिन्दल, वरिष्ठ प्रबंधक zochd1947@gmail.com
55	वरिष्ठ प्रबन्धक, आन्ध्रा बैंक, उन्नीस–379, गगन बिल्डिंग, बस स्टैंड के सामने, जीटी रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	आन्ध्रा बैंक Andhra Bank	श्री सी.एच.एस. सुब्रमणियम, वरिष्ठ प्रबंधक bm1135@andhrabank.co.in
56	वरिष्ठ प्रबन्धक, स्टेट बैंक ऑफ पटियाला (अब एस.बी.आई), मुख्य शाखा, लिबर्टी शोरूम के पास, रेलवे रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India हर भारतीय का बैंक THE BANKER TO EVERY INDIAN	श्री बाल किशन धीमान, वरिष्ठ प्रबंधक b5094@sbi.co.in
57	वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक, विजया बैंक, एस.सी.ओ. 223–232, पार्ट–1, सेक्टर 12, करनाल, हरियाणा–132001.	विजया बैंक VIJAYA BANK	श्री अमरेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक vb8314@vijayabank.co.in
58	वरिष्ठ प्रबन्धक, यूको बैंक, दुर्गा भवन मंदिर कॉम्प्लेक्स, जी.टी.रोड, बस स्टेंड के पास, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	यूको बैंक UCO BANK	श्री देवेन्द्र अरोड़ा, प्रबंधक karnal@ucobank.co.in
59	उप महाप्रबन्धक, पंजाब एवं सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय, गुरूद्वारा भवन, मॉडल टाउन करनाल, हरियाणा–132001.	पंजाब एंड सिंध बैंक Punjab & Sind Bank	श्री गोपाल कृष्ण, उप महाप्रबंधक zo.haryana@psb.co.in
60	सहायक महाप्रबन्धक,सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, मुख्य शाखा, कोड–0381, जीटी रोड, माता दुर्गा भवानी मन्दिर, बस स्टेंड के निकट, करनाल	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया Central Bank of India	श्री तेजेन्द्र सिंह, सहायक महाप्रबंधक bmchan0381@centralbank.co.in
61	वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, शाखा कोड–0444, अम्बेडकर चौक, जीटी रोड, करनाल–132001		श्री उत्तम नेगी, वरिष्ठ प्रबंधक brmgr444@mahabank.co.in
62	वरिष्ठ प्रबन्धक, सिंडिकेट बैंक, मुख्य शाखा, गोविन्द नगर, पुरानी सब्जी मंडी के पास, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	सिंडिकेटबैंक SyndicateBank	श्री गुलशन कुमार, वरिष्ठ महाप्रबंधक br.8250@syndicatebank.co.in,
63	वरिष्ठ प्रबन्धक, स्टेट बैंक ऑफ पटियाला, (अब एस.बी.आई) एनडीआरआई शाखा, करनाल, हरियाणा–132001.	भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India हर भारतीय का बैंक	श्री इंदर पाल सिंह मुख्य प्रबंधक sbi.50326@sbi.co.in
64	मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक, इफको, क्षेत्रीय कार्यालय, बे नंबर 19–20, सेक्टर 12, करनाल, पिन–132001.	इफको पूर्णतः सहकारी स्वामित्व	श्री सत्यपाल सिंह पंवार, मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक am_karnal@iffco.in
65	वरिष्ठ प्रबन्धक(मार्केटिंग), नेशनल फर्टिलाजर्स लिमिटेड, एससीओ–12, सैक्टर–8, फर्स्ट फ्लोर, मुख्य बाजार, करनाल, पिन–132001		श्री एस.एस.पोशवाल, वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन) nflaopanipat@gmail.com
66	जिला सूचना अधिकारी, राष्ट्रीय सूचना–विज्ञान केन्द्र डी.सी. ऑफिस के निकट, मिनी सचिवालय, सेक्टर–12, करनाल	NIC	श्री महिपाल सीकरी, जिला सूचना अधिकारी diokrl@hry.nic.in
67	जिला युवा समन्वयक, नेहरू युवा केन्द्र संगठन, क्षेत्रीय केन्द्र, कोठी नं.229, न्यू चार चमन, महावीर दल हॉस्पिटल पास, कुंजपुरा रोड, करनाल	NYKS	श्री प्रदीप कुमार, जिला युवा समन्वयक nykskarnal@gmail.com
68	सहायक महाप्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक, ज्ञानार्जन केन्द्र, मॉडल टाउन, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.	भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India हर भारतीय का बैंक THE BANKER TO EVERY INDIAN	कार्यालय पंचकूला में स्थानांतरित Office shifted to Pachkula Karnal.

नराकास करनाल द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु वार्षिक नराकास पुरस्कार एवं शील्ड (2017-18) से सम्मानित कार्यालय

केन्द्रीय कार्यालय

क्र.सं.	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1.	एम.एस.एम.ई.–विकास संस्थान, करनाल	प्रथम
2.	जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल	प्रथम
3.	सहायक श्रम आयुक्त(केन्द्रीय), करनाल	द्वितीय
4.	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल	तृतीय
5.	केन्द्रीय विद्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
6.	भारत सरकार मुद्रणालय, नीलोखेड़ी, करनाल	प्रोत्साहन
7.	प्रधान आयकर आयुक्त, करनाल	प्रोत्साहन

संस्थान

क्र.सं.	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1.	भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल	प्रथम
2.	भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल	प्रथम
3.	भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल	द्वितीय
4.	भाकृअनुप–भारतीय गेहूँ एवं जौं अनुसंधान संस्थान, करनाल	द्वितीय
5.	भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, करनाल	तृतीय
6.	भाकृअनुप–गन्ना प्रजनन संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल	तृतीय

बैंक

क्र.सं.	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1.	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल	प्रथम
2.	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल	प्रथम
3.	पंजाब एण्ड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय, करनाल	द्वितीय
4.	ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, क्लस्टर कार्यालय, करनाल	तृतीय
5.	बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
6.	पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन

निगम एवं लिमिटेड

क्र.सं.	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1.	भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल	प्रथम
2.	भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, करनाल	द्वितीय
3.	दि न्यू इंडिया एश्यारेंस कंपनी लिमिटेड, मंडलीय कार्यालय, करनाल	तृतीय
4.	युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
5.	नैशनल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड, मंडलीय कार्यालय, करनाल	प्रोत्साहन
6.	केन्द्रीय भण्डार गृह–एक, केन्द्रीय भण्डारण निगम, करनाल	प्रोत्साहन

"स्मृति–शेष"

प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार जो अब हमारे बीच नहीं हैं। उन्हें हम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

केदारनाथ सिंह

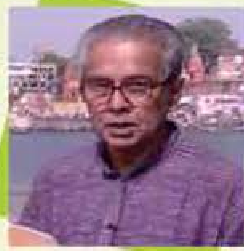

हिन्दी की समकालीन कविता और आलोचना के सशक्त हस्ताक्षर और अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' के प्रमुख कवि केदारनाथ सिंह का जन्म 1934 में उत्तर प्रदेश के बलिया में हुआ था। वह हिंदी कविता में नए बिंबों के प्रयोग के लिए जाने जाते हैं। साल 2013 में उन्हें साहित्य के सबसे बड़े सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें इसके अलावा साहित्य अकादमी पुरस्कार और व्यास सम्मान सहित कई सम्मानों से पुरस्कृत किया गया था। उनकी प्रमुख कविता संग्रहों में 'अभी बिलकुल अभी', 'जमीन पक रही है', 'यहां से देखो', 'बाघ', 'अकाल में सारस' और 'उत्तर कबीर' शामिल हैं। आलोचना संग्रहों में 'कल्पना और छायावाद', 'मेरे समय के शब्द' प्रमुख हैं। उनका 20 मार्च 2018 को निधन हुआ है।

दूधनाथ सिंह

मूल रूप से बलिया के रहने वाले प्रख्यात साहित्यकार और जनवादी लेखक दूधनाथ सिंह ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एमए किया और यहीं वह हिंदी के अध्यापक नियुक्त हुए। 1994 में सेवानिवृत्ति के बाद से लेखन और संगठन में निरंतर सक्रिय रहे। निराला, पंत और महादेवी के प्रिय रहे दूधनाथ सिंह का आखिरी कलाम 'लौट आओ घर' था। 'सपाट चेहरे वाला आदमी', 'यम–गाथा', 'धर्मक्षेत्रे–कुरुक्षेत्रे' उनकी प्रसिद्ध रचनाएं थीं। उन्हें उत्तर प्रदेश के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान भारत भारती व मध्य प्रदेश सरकार के शिखर सम्मान मैथिलीशरण गुप्त से सम्मानित किया गया था. उनका 12 मार्च 2018 को निधन हुआ है।

मनु शर्मा

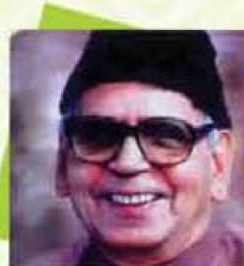

हिन्दी में सबसे बड़ा उपन्यास लिखने वाले 1928 में जन्मे साहित्यकार मनु शर्मा का 89 वर्ष की आयु में देहांत हो गया है। उन्होंने हिन्दी में कई उपन्यास लिखे जिनमें "कर्ण की आत्मकथा", "द्रोण की आत्मकथा", "द्रोपदी की आत्मकथा", "के बोले मां तुमि अबले", "छत्रपति", "एकलिंग का दीवाना", "गांधी लौटे" काफी विख्यात हुए। उनके कई कहानी संग्रह और कविता संग्रह भी आये। शुरूआत में वह हनुमान प्रसाद शर्मा के नाम से लेखन करते थे। शर्मा को उत्तर प्रदेश सरकार के सर्वोच्च सम्मान 'यश भारती' से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें गोरखपुर विश्वविद्यालय से मानद डीलिट की उपाधि से भी सम्मानित किया गया था। इसके अलावा उन्हें तमाम पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका था। भारतीय भाषाओं में सबसे बड़ी कृति "कृष्ण की आत्मकथा" लिखने की उपलब्धि मनु शर्मा के नाम ही है। आठ खंडों और तीन हजार पृष्ठों वाली इस आत्मकथा ने हनुमान प्रसाद को साहित्य जगत में नाम, मान और स्थान दिया। उनकी कविताएं भी अपने समय का दस्तावेज हैं। पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी ने सच ही कहा था कि मनु शर्मा कथा लेखन परंपरा के श्रीकृष्ण हैं। प्रधानमंत्री ने "स्वच्छ भारत अभियान" के तहत जिन प्रारंभिक नौ लोगों को नामित किया था, उनमें से एक मनु शर्मा भी थे। उनका 8 नवंबर 2017 को निधन हुआ है।

महाश्वेता देवी

1926 में जन्मीं मशहूर साहित्यकार और सामाजिक कार्यकर्ता महाश्वेता देवी अब हमारे बीच नहीं हैं। उनका 90 वर्ष की आयु में देहाँत हुआ। वह ज्ञानपीठ, पदमश्री और मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित थीं। तीन दशक से ज्यादा समय तक वह आदिवासियों के बीच काम करती रहीं। उनके साहित्य का काफी हिस्सा आदिवासियों के जीवन पर आधारित था। यूं तो महाश्वेता देवी बांग्ला में उपन्यास लिखा करती थीं, लेकिन अंग्रेजी, हिंदी और अलग अलग भाषाओं में अनुवाद के जरिए उनके साहित्य की पहुंच काफी व्यापक स्तर पर थी। उनके लिखे उपन्यासों पर कई फिल्में बनी हैं मसलन 'हजार चौरासी की मां' पर फिल्मकार गोविंद निहलानी ने फिल्म बनाई है। इसके अलावा 'रुदाली', 'संघर्ष' और 'माटी माय' भी ऐसा सिनेमा है जो महाश्वेता के उपन्यासों पर आधारित है। उनका 28 जुलाई 2016 को निधन हुआ है।

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (न.रा.का.स.) करनाल

TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE(TOLIC), KARNAL

संयोजक कार्यालय : भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

Co-ordination office : I.C.A.R-National Dairy Research Institute (N.D.R.I.) Karnal.

भाकृअनुप ICAR

रा.डे.अनु.सं N.D.R.I.

"नराकास करनाल के बढ़ते कदम,
प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग के संग"

कैलेंडर Calendar 2018

जनवरी January 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

फरवरी February 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28				

मार्च March 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

अप्रैल April 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

मई May 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

जून June 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

जुलाई July 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

अगस्त August 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

सितम्बर September 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

अक्टूबर October 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

नवम्बर November 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

दिसम्बर December 2018

सोम Mo	मंगल Tu	बुध We	वीर Th	शुक्र Fr	शनि Sa	रवि Su
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

''आइये राजभाषा हिन्दी को अपनाएं, इसे सम्मान, पहचान एवं विज्ञान बनाएं''

परिचय : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार के निर्देशानुसार कार्य करती है। करनाल नगर में स्थित केन्द सरकार के समस्त संस्थान, कार्यालय, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, निगम एवं बैंक आदि इसके सदस्य हैं।

बैठकें : भारत सरकार, राजभाषा विभाग के कैलेण्डर के अनुसार इस समिति की वर्ष में दो बैठकें प्रत्येक वर्ष जून एवं नवम्बर माह में आयोजित की जाती हैं, जिनमें सभी सदस्य कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधान एवं गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि अधिकारी भाग लेते हैं।

कार्य : समिति सदस्य कार्यालयों को राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन में सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करती है।

अन्य : नराकास के सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशाला, राजभाषा कार्यान्वयन की तिमाही बैठक का आयोजन करने के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिये विभिन्न गतिविधियों का समय-समय पर आयोजन किया जाना भी अनिवार्य है।

नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन में प्रदान किया जा रहा सहयोग सराहनीय है

यूनियन बैंक
ऑफ इंडिया

Union Bank
of India

यूनियन समृद्धि केंद्र
केंद्रीकृत ऋण प्रोसेसिंग केंद्र

Union Samriddhi Kendra
Centralised Loan Processing Centre

ग्रामीण एवं अर्धशहरी शाखाओं की समस्त ऋण आवश्यकताओं का एकीकृत समाधान आपकी सेवा में

" यूनियन समृद्धि केन्द्र "

यूनियन बैंक
परिवार

सेवा हेतु
आपके द्वार

यूनियन समृद्धि केंद्र, कुरुक्षेत्र, क्षेत्र करनाल